* ओ३म् *

मालाबार

और

आर्य्य समाज

जिस में

मालाबार का संक्षिप्त इतिहास, वहां का मोपला विद्रोह,
हिन्दू समाज के नाश का दृश्य, पीड़ित हिन्दुओं का
बलात्कार मुसलमान बनाया जाना, आर्य्य समाज
की ओर से उनकी शुद्धि और सहायता का
काम वर्णन किया गया है, और
पीड़ित लोगों के बयानात भी
दर्ज़ किए गए हैं।

संग्रहकर्त्ता—

मन्त्री आर्य्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
पञ्जाब सिन्ध बिलोचिस्तान, लाहौर।

मुद्रक और प्रकाशक—
सत्यव्रत शर्म्मा,
शान्ति प्रेस, आगरा।

चतुर्थावृत्ति] सं० १६८२ वि० [मूल्य ।-) पांच आने

पुस्तक मिलने का पता—मैनेजर शान्ति प्रेस, आगरा।

दो शब्द ।

मालाबार में हिन्दुओं पर जो भीषण अत्याचार हुआ उसका इस पुस्तक में दिग्दर्शन है। प्रस्तुत पुस्तक को प्रकाशित करने का अभिप्राय किसी भी सम्प्रदाय को दुःख पहुंचाना नहीं; हां, वास्तविक घटना का हिन्दू समाज को बोध हो और वह सचेत हो संघटन कर आत्म-रक्षा के लिये तत्पर हो यही आशय है।

साथ ही मैं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब सिन्ध बिलोचिस्तान लाहौर के प्रधान पूज्य श्री महात्मा हंसराज जी महाराज को धन्यवाद अर्पण करता हूं, जिनके अनुग्रह से इस पुस्तक का प्रचार करने के लिये उद्यत हुआ।

आगरा
९—४—२३

विनीत—

प्रकाशक।

* ओ३म् *

भूमिका

श्रीमान् महात्मा हंसराजजी महाराज लिखित

पाठकगण ! इन पृष्ठों में मालाबार के वृत्तान्त और वह काम, जो आर्य्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पञ्जाब सिन्ध बिलोचिस्तान लाहौर की ओर से वहां किया गया है, अङ्कित है। मालाबार भारतवर्ष का एक अति सुन्दर भाग है, और पौराणिक विचार से पवित्र भूमि समझा जाता है, वहां पर इस अधोगति के समय में भी सैकड़ों वेदपाठी ब्राह्मण वर्त्तमान हैं, जो आदि से अन्त तक चारों वेदों का शुद्ध और भ्रान्ति रहित पाठ मधुर स्वर से बिना पुस्तक देखे कर सकते हैं, इस इलाके में पहिले केवल हिन्दू ही हिन्दू बसते थे परन्तु हिन्दू राजाओं की धार्म्मिक उदारता ने उनको आज्ञा न दी कि वह मुसलमान और ईसाई मतों के दाखले और फैलाव को अपने इलाके के भीतर रोकें, या जो लोग अन्य मतावलम्बी हों उन पर अत्याचार और कठोरता करें।

मुसलमान इतिहासकार तारीख फिरिश्ता का लेखक इस बात की प्रशंसा करता है, कि कालीकट के राजा ने मुसलमान सौदागरों और धार्मिक प्रचारकों को न केवल यह कि देश में बसने की आज्ञा दी प्रत्युत घर बनाने के लिये भूमि भी मुफ़्त दी, और अन्य

कई प्रकार की सहायतायें दीं। यद्यपि यह नीति साधारणतः प्रशंसनीय है, परन्तु इसका अन्तिम परिणाम हिन्दुओं के लिये बुरा हुआ, जब अलाउद्दीन ख़िलजी के प्रसिद्ध जनरल मलिक-काफ़ूर ने मालाबार पर चढ़ाई की तो वहां के मुसलमान निवासी उसकी सेना में जा मिले और उन्होंने मालाबार को विजय करने में बड़ी सहायता दी; और भी अनेक अवसरों पर मालाबार की मुसलमान प्रजा ने, जो वहीं के हिन्दुओं की सन्तान थी, समय २ पर हिन्दुओं को बध करना, लूटना, और धर्म्म विहीन करना अपना कर्त्तव्य रक्खा है, सन् १९२१ ईसवी में जो घटना हमारे नेत्रों के आगे हुई वह एक अकेली घटना नहीं वरन पिछली घटनाओं के समूह में से एक है।

हिन्दुओं पर मोपला लोगों ने जो अत्याचार और अन्याय किए उसके वृत्तान्त बहुत देर तक पंजाब में प्रकाशित नहीं हुए। बम्बई के समाचार-पत्रों में कुछ वृत्तान्त छपे थे, परन्तु हिन्दू और मुसलमान समाचार पत्र उनकी सचाई पर विश्वास नहीं करते थे, और उनका यह विचार था कि ऐसी खबरों का प्रकाश करना केवल हिन्दू मुसलमानों के परस्पर मेल में पोलिटिकल भेद डालने के लिए है। बहुतेरे मनुष्य जिनके हृदय रूस के दुर्भिक्ष पीड़ित, चीन के विपद्ग्रस्त और टरकी के मुसलमान या ईसाई घायलों की सहानुभूति से पिघल जाते थे, मालाबार के विपद्ग्रस्त हिन्दुओं के वृत्तान्त सुनकर अपना हृदय पत्थरवत् बना लेते थे, इस विचार से कि कहीं उनकी सहानुभूति उनकी देशीय उन्नति के मार्ग में बाधा डालने वाली प्रमाणित न हो। सब से पहिले दीवान राधाकृष्ण जी ने मेरे पास बम्बई के समाचार पत्रों को इकट्ठा करके भेजा, और मुझ से प्रार्थना की कि मैं मालाबार के हिन्दुओं की सहायता के लिए अपील करूं; और भी कई श्रीमानों ने जिन के हृदय सहानुभूति के भाव से भरे हुए थे, मुझ से यह कहा कि मालाबार के

हिन्दुओं की सहायता का काम आपको अवश्य आरम्भ करना चाहिए। परन्तु मेरे मन में शंका थी और उसके कई कारण थे। एक तो यह कि मानसिक विचारों का वायु मण्डल कुछ अधिक अनुकूल नहीं था। द्वितीय यह कि मालाबार पंजाब से इतना दूर था, और समाचार पत्रों ने इतना मौन साधा हुआ था कि पंजाब का हृदय हिलाना कुछ सहज काम न था, तीसरे यह कि कतिपय श्रीमान् आर्य्यसमाज का यह हक़ स्वीकार नहीं करते थे कि वह कभी किसी काम को आरम्भ करे। चौथे यह कि मालाबार में केरल प्राविन्शियल कांग्रेस कमेटी और सरवैंट आफ़ इण्डिया सोसाइटी ने सहायता का काम आरम्भ कर रक्खा था, इसलिये मैंने यह फैसला किया कि शिमले के कतिपय मदरासी प्रतिष्ठित जनों से सम्मति लेकर काम आरम्भ किया जाय। अतः शिमला आर्य्यसमाज के उत्सव पर जो सितम्बर सन् १९२१ में था, कुछ मदरासी श्रीमानों से सलाह की गई, हमारे सामने दो प्रश्न थेः—

पहिला यह कि जिन हिन्दुओं को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया गया है, उनकी शुद्धि और सहायता का काम किया जावे।

दूसरा यह कि जो पीड़ित हिन्दू हैं और अपने घरों को लाचारी से छोड़कर कालीकट आदि इलाकों में भाग गए हैं, उनकी सहायता की जावे।

जो सलाह हम को मिली उससे यह मालूम होता था कि सहायता का रुपया भी हमें आप ही इकट्ठा करना होगा; और शुद्धि के विषय में भी सफलता का मुख देखना बहुत ही कठिन होगा। यह सलाह उत्साहजनक नहीं थी। परंतु प्रेस की मौनता होने पर भी जो खबरें मालाबार की प्राप्त हुई थीं, वह इतनी हृदय विदारक थीं कि जब १६ अक्टूबर सन् १९२१ को इस सभा के

अधिवेशन में सब वृत्तान्त सुनाए गए तो सभा ने निम्न लिखित प्रस्ताव पास किया:—

"इलाक़ा मालाबार में मोपलों ने जो अत्याचार करके हिन्दुओं को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया है उन हालात पर विचार करके निश्चय किया गया कि ज़बरदस्ती मुसलमान किए गए हिन्दुओं की शुद्धि और सहायता का सभा यत्न करे, और प्रधान जी को अधिकार दिया गया कि वह इस आवश्यक सेवा के लिए पबलिक से अपील करें, और जितना शीघ्र सम्भव हो इस शुद्धि और सहायता का प्रबंध करें, और उचित ख़र्च उठावें।"

इस प्रस्ताव के अनुसार मैंने अपील प्रकाशित की। हमारा प्रथम उद्देश यह था कि ज़बरदस्ती से मुसलमान बनाए हुए हिन्दुओं को फिर हिन्दू धर्म्म में वापस लावें, और हिन्दू धर्म्म के विरोधियों पर यह साबित कर दें कि, **कोई हिंदू ज़बरदस्ती अपने धर्म से पतित नहीं किया जा सकता**— और यदि हम एक बार इस बात का हिन्दू और अन्य मतावलम्बियों को निश्चय करा दें कि कोई हिन्दू ज़बरदस्ती अपने धर्म्म से पतित नहीं किया जा सकता, तो कोई विरोधी किसी हिन्दू को ज़बरदस्ती पतित करने का साहस नहीं करेगा।

दूसरा उद्देश यह था कि जो हिन्दू गृहविहीन दीनहीन और असहाय बनाए गए हैं उन को सहायता देकर जीवित रक्खा जाय, और उनकी आपदा को कम किया जाय। इन दोनों बातों के अतिरिक्त इस बात की आवश्यकता भी प्रतीत होती थी कि जिन कारणों से मालाबार के लोग ऐसी घोर विपद में ग्रस्त हुए हैं, उन कारणों को दूर करके मालाबार की हिन्दू सोसाइटी की इमारत को दृढ़ और स्थिर किया जाय। यह उद्देश बहुत ऊंचे

हैं, परन्तु परमात्मा पर भरोसा रख कर सभा की आज्ञानुसार कार्य आरम्भ कर दिया, और पण्डित ऋषिराम जी को १ नवम्बर को मालाबार की ओर भेज दिया गया, अक्तूबर के मास में हम को केवल ३८१) रुपये इस फण्ड में प्राप्त हुए। इसलिए पंडित ऋषिराम जी को यही प्रेरणा की गई कि वह सार्वजनिक सहायता के काम को अभी आरम्भ न करें। केवल मुसलमान हुए हिन्दुओं को वापिस लेने और सहायता देने का यत्न करें। बम्बई में वे मिस्टर देवधर मन्त्री सरवैंट आफ़ इंडिया सोसाइटी से सलाह करने गए। उनकी सम्मति उस समय शुद्धि का काम आरम्भ करने के पक्ष में न थी। इसलिए पंडित जी ने अपना काम आरम्भ करने से पहिले सेंट्रल मालाबार रिलीफ़ कमेटी और कांग्रेस कमेटी में स्वयम्-सेवक बन कर काम करना आरम्भ किया, और साथ ही मुसलमान हुए हिन्दुओं को एकत्र करने का उद्योग भी करते रहे। नवम्बर मास के अन्त तक हमारा चंदा १७३९) रुपये तक पहुंच गया, और २९ नवम्बर को उन मध्य श्रेणी के लोगों को सहायता देना आरम्भ किया कि जो अपनी पोज़ीशन के कारण से न तो कांग्रेस कैम्प में चांवल लेने के लिये जा सकते थे, और न सेंट्रल मालाबार रिलीफ़ कैम्प में जा सकते थे। इसके पीछे रिलीफ़ का काम दिन प्रतिदिन बढ़ता गया। इधर हमारे पास भी रुपया बहुतायत से आने लगा, क्योंकि लोगों के भीतर जागृत और सहानुभूति का भाव उत्पन्न होगया था। पंडित जी ने रिलीफ़ के काम के अतिरिक्त ज़बरदस्ती मुसलमान बनाए गए हिन्दुओं को शुद्ध करने के लिये पैम्फलैट प्रकाशित किए, समाचार पत्रों में आन्दोलन किया, और अनेक विरादरियों की कान्फ्रेंसों में जाकर व्याख्यान दिए, और मुखिया लोगों से मिल कर संघटन बनाने का यत्न किया। इस सब का यह परिणाम हुआ कि शुद्धि की आवश्यकता की ओर वहां के लोगों का ध्यान

आकर्षित हुआ और वहां के राजाओं, रईसों और दूसरे पंडितों ने इस बात को मान लिया कि इस प्रकार से पतित हुए २ हिन्दू फिर शुद्ध हो सकते हैं।

ऐसे दूर और अपरिचित देश में जाकर इतना शीघ्र सफलता प्राप्त करना पण्डित जी का ही काम था। पण्डित जी के हृदय में वैदिक धर्म्म का प्रेम प्रबल रूप में वर्तमान है। वह बहुत सरल जीवन व्यतीत करते हुए काम कर रहे हैं। उनकी योग्यता और कार्य्यक्षमता ने हमारे काम की दृढ़ नींव डालदी।

जब काम बढ़ गया तो फरवरी मास के प्रारम्भ में आर्य्यगज़ट के सम्पादक श्रीमान् लाला खुशहालचन्द जी खुरसन्द और श्रीमान पं० मस्तानचन्द जी बी० ए० उनके काम में सहायता देने के लिए पंजाब से मालाबार की ओर रवाना हुए। पं० मस्तानचन्द जी बी० ए० माईनाड डिपो के चार्ज में रक्खे गए जहां पर ४ हज़ार बच्चे और स्त्रियां प्रति दिन सहायता पाती थीं। इतनी स्त्रियों और बच्चों में अन्न बांटना और उनको सन्तुष्ट रखना पंडित जी का ही काम था। वह सरल स्वभाव और उदारचित्त हैं कठिन से कठिन दुख सह सकते हैं।

गढ़वाल और जम्मू रियासत के इलाका भिम्बर तथा रजौरी के दुर्भिक्षों में उनको पूरा अनुभव हो चुका था, और इस अनुभव से उन्होंने मालाबार में काम किया।

लाला खुशहालचन्द जी खुरसन्द पहिले कालीकट डिपो में सहायता देते रहे, आप आर्य्यसमाज के पुराने सेवक हैं। अपने उत्तम लेखों, व्याख्यानों और सेवा के भावों से वर्षों से आर्य्य-समाज की सेवा कर रहे हैं। उनके स्वभाव में विशेष रूप से देश और धर्म्म का जोश है। उनके स्वभाव ने उन्हें प्रेरित किया कि

वह विपद्ग्रस्त इलाके में जाकर अपनी आंखों से पीड़ित हिन्दुओं के हालात देखें, और मुसलमान हुए भाइयों को जो इलाके में अभी तक भयभीत हुए मोपला रूप में रहते थे उनको कालीकट लाने का यत्न करें। इस अभिप्राय से आपने अपने प्राणों को हथेली पर रखकर विद्रोही इलाके में दौरा किया और उनके उद्योग से बहुत बड़ी संख्या में ज़बरदस्ती मुसलमान बनाए हुए हिन्दू पुनः शुद्ध किये गए। इस भ्रमण के कुछ वृत्तान्त इस रिपोर्ट में दिये गये हैं। जब आपने अपनी आंखों देखे हालत समाचार पत्रों में भेजे तो उससे हिन्दुओं के भीतर विशेष रूप से सहानुभूति का भाव उत्पन्न हुआ, और उन्होंने चंदे से हमारी सहायता तेजी के साथ आरम्भ की।

पं० ऋषिराम जी को ७ मास के घोर परिश्रम के पीछे कुछ देर विश्राम करने की आवश्यकता प्रतीत हुई, और वह १७ मई को मालाबार से पंजाब की ओर पधारे। लाला खुशहालचन्द जी और पं० मस्तानचन्द जी २२ मई को लाहौर की ओर पधारे, क्योंकि उन्हें पंजाब में भी बहुत आवश्यक काम करने थे उन्हें पंजाब सिंध और बिलोचिस्तान के बाज़ विभागों में चन्दा एकत्र करने के लिए आना था, और आनन्द का विषय है कि वहां से उनको एक भारी रक़म चन्दे में प्राप्त हुई, उनके स्थान पर महता सावनमल जी आर्य्योपदेशक भेजे गए जो २२ मई सन् १९२२ को कालीकट पहुंचे। महता सावनमल जी आर्य्योपदेशक पं० जगत्सिंह जी के सच्चे शिष्य और आर्य्यसमाज के पुराने सेवक हैं, इनको रिलीफ के काम का काम का बड़ा तजरुबा है इन्होंने गढ़वाल, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ के अकालग्रस्त इलाके में सभा की ओर से बहुत बड़ी सेवा की है। कठिन से कठिन दुःखों का सामना करते हुए इन्होंने उड़ीसा और छत्तीसगढ़ में अनाथों और विधवाओं की सेवा

प्रीतपूर्वक की। छत्तीसगढ़ का काम समाप्त होते ही वह उड़ीसा भेजे गए। उड़ीसा का काम समाप्त होने पर आपकी ड्यूटी मालाबार में लगाई गई। उन्होंने बड़े उत्साह से इस काम को स्वीकार किया, और यद्यपि उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था तो भी वह अपना काम अन्त तक करते रहे।

मालाबार में उनके जाने पर यह दशा थी कि घरों से अनुपस्थित होने के कारण हिन्दुओं के खेत खाली पड़े थे, और अधिकांश इलाकों में दुर्भिक्ष दिखाई देता था, इसलिए सहायता का काम आरम्भ करने की और भी आवश्यकता थी, परन्तु इन्हीं दिनों अर्थात् जून, जुलाई, अगस्त में. वहां प्रबल वर्षा ऋतु होती है, ऐसी ऋतु में ही महता सावनमल जी ने विविध स्थानों पर जहां नितान्त आवश्यकता थी, सहायक डिपो स्थापित किए, परन्तु काम इतना अधिक था कि एक अकेला मनुष्य उसे पूरा नहीं कर सकता था, इसलिए श्रीमान लाला ज्ञानचन्द जी एम० ए० प्रोफेसर दयानन्द कालेज जालंधर २४ जून सन २२ को मालाबार भेजे गए, ताकि वह सहायता दे सकें, प्रोफेसर ज्ञानचन्द जी २ वर्ष से अपनी छुट्टियों का समय पंजाब में विश्राम करने के बदले मद्रास प्रांत में काम करने में खर्च करते हैं। गत वर्ष आपने वैदिक धर्म्म और हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए अपना मूल्यवान समय खर्च किया था। इस वर्ष आपने मालाबार के अकाल पीड़ितों की सहायता और सामाजिक सेवामें अपना समय खर्च किया। उनके भीतर मिशनरी स्प्रिट बड़ी जोर से काम करती है, और हर प्रकार की सेवा का कार्य्य करने के लिये तय्यार रहते हैं।

महता सावनमल और प्रोफेसर ज्ञानचन्द साहब ने मिलकर दुर्भिक्षग्रस्त इलाकों में ५ सहायक क्षेत्र स्थापित किए, जिससे हज़ारों दुखिया मनुष्यों ने लाभ उठाया। उनके इस काम को

देख कर कलकत्ते के पुरुषार्थी पंडित सत्यचरण जी इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने ५ सहस्र रुपया सहायता सम्बन्धी कार्य के लिए मारवाड़ियों की ओर से दे दिया।

लोगों की क्षुधा शांत के अतिरिक्त जिन हिंदुओं के घर जलाये गए थे, उनकी मरम्मतादि करने, या नवीन बनाने के लिए भी सहायता दी गई।

महता सावनमल और प्रोफेसर ज्ञानचंद जी ने हैदराबाद दक्षिण का भी भ्रमण किया, जहां से उनको मालाबार की सहायतार्थ ३-४ हज़ार रुपया प्राप्त हुआ।

ऋषिकुल के वाइस प्रिंसिपल पं० विष्णुदत्त जी बी० ए० को जो कि संस्कृत के विद्वान हैं, मालाबार भेजा गया, ताकि वह सनातन धर्म्म की रीति से लोगों पर शुद्धि की आवश्यकता प्रकट करें। २ सितम्बर को महता सावनमल, प्रो० ज्ञानचंद और पं० विष्णुदत्त जी मालाबार से पंजाब की ओर पधारे, और पं० ऋषिराम जी अंत अगस्त तक मालाबार पहुँच गए और वहां विधि पूर्वक कार्य्यारम्भ किया।

पाठकगण! इस समय तक जो धन हमें प्राप्त हो चुका है उसका जोड़ १२ अक्तूबर सन २२ तक ७०८११) था। जो रुपया मालाबार में खर्च के लिये जा चुका है उसका जोड़ ४४९६८) है। इस समय हमारे पास लगभग साढ़े पच्चीस सहस्र रुपये हैं। जिन उद्देशों के लिए हमने अपील की थी उनमें से दो उद्देश पूरे हो गये। आवश्यकतानुसार हमने रिलीफ़ बांटा है, अब इस काम की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती, इसलिये हमने बंद कर दिया है। दूसरा काम शुद्धि का था। यह अत्यन्त कठिन काम था परन्तु

परमात्मा का कोटिशः धन्यवाद है कि इस काम में भी हमको सफलता हो गई। हम सानंद कह सकते हैं कि जितने हिंदू ज़बर-दस्ती मुसलमान बनाए गए थे वह प्रायः सब शुद्ध हो चुके हैं अन्तिम रिपोर्ट यह है कि ३ हज़ार शुद्धियां हो चुकी हैं। तीसरा काम उस समय आरम्भ नहीं हो सकता था। अब पं० ऋषिराम जी ने आरम्भ कर दिया है। उस के लिए विशेष साहित्य की आवश्यकता होगी, और विशेष रूप से उपदेशक रखने पड़ेंगे। और इस प्रकार का आन्दोलन करना होगा कि जिससे वहां के हिन्दुओं में मेल और जागृति के बीज बोए जायं। और इस काम के लिए जितना धन ख़र्च किया जाय उतना ही कम है। अन्त में मैं उन सब स्वयम्-सेवकों का धन्यवाद करता हूं जिन के उद्योग और पुरुषार्थ से आर्य्यसमाज को अपने इस कार्य्य में सफलता प्राप्त हुई। हमारे स्वयं-सेवकों के काम ने यह प्रमाणित कर दिया है कि आर्य्यसमाज अपने धर्म्म, देश और जाति की सेवा के लिये सदैव तैयार रहती है, और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसके भीतर पूर्ण बल है, जिसका प्रमाण वह यथा अवसर देती रहती है।

मै मिस्टर श्रीकृष्ण जी बी० ए० वकील कालीकट का भी सभा की ओर से धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने अपनी पोज़ीशन और अन्य उपायों से हमारे स्वयं-सेवकों के लिए सुगमता प्रस्तुत की और अपना मकानादि मुफ़्त देकर काम में सहायता दी। इसके साथ ही मिस्टर टी. नारायण नम्बीयर बी० ए० भी धन्य-वाद के योग्य हैं, जिन्होंने ला कालेज के विद्यार्थी होते हुए भी हमारे रिलीफ़ के काम में पूरी सहायता की। इसी प्रकार महाशय वैंकटाचलम् आयर भी हमारे विशेष धन्यवाद के अधिकारी हैं। इसके साथ ही अखबार प्रताप लाहौर भी जिसने पंजाब के लोगों

को मालाबार की दशा से अवगत किया, और उन सर्व दानियों का, जिनकी सहायता के बिना हम यह भलाई का काम न कर सकते थे, मैं हार्दिक भाव से धन्यवाद करता हूं जिन्होंने हम पर विश्वास करके अपने दुखिया भाइयों की सहायतार्थ अपना धन खर्च करके धर्म्म, देश और जाति हित का परिचय दिया, और हमको अपना कर्त्तव्य पालन करने के योग्य बनाया। ला० दीवानचन्द जी एम० ए० प्रिंसिपल दयानन्द कालेज कानपुर भी विशेष धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने संयुक्त प्रान्त के आर्य्यावर्त्त नामक पत्र में आन्दोलन करके रुपया इकट्ठा किया और पाँच हज़ार से अधिक धन संग्रह करने में सफल हुए।

धर्म तथा देश की एकता के लिये आवश्यक है कि जिस प्रकार शरीर के एक अंग में दुःख होने से सारा शरीर दुःखी हो जाता है, इसी प्रकार देश में एक स्थान पर विपत्ति पड़ने से देश के अन्य भागों को भी अनुभव करना चाहिये कि वे भी विपद्ग्रस्त हैं। जिस देश अथवा जाति में यह भाव नहीं वह देश या जाति कहलाने के योग्य नहीं। आर्य्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से जो सहायता मालाबार को दी गई है, वह न केवल इस बात का दृढ़ प्रमाण है कि हिन्दुओं के भीतर आर्य्यसमाज के द्वारा सामाजिक उत्साह पैदा हो गया है, प्रत्युत भविष्य के लिये भी आर्य्य जाति के विविध भागों में एकता का भाव बढ़ाने वाली है। हमको दूसरों पर यह सिद्ध कर देना चाहिये कि भारतवर्ष के हिन्दू एक हैं और एक दूसरे में भेद भाव नहीं करते।

परमात्मा करे कि जमदग्नि और परशुराम की पवित्रभूमि में जो सौन्दर्य की उपमा से कश्मीर से कम नहीं; ऋषियों का धर्म्म सदा जीता जागता रहे।

१-११-२२ हंसराज



* ओ३म् *

मालाबार

भारतवर्ष के पश्चिमी समुद्र के तट पर जहां अरब समुद्र आदि काल से बड़े वेग से टकरा रहा है, मद्रास प्रान्त का एक ज़िला मालाबार बसता है, जिसको ईश्वर ने अपने सौन्दर्य्य से और प्राकृतिक धन से परिपूर्ण किया है। हरे घने जंगल, सुन्दर पहाड़ियां, झरने, नदियां, तालाब, झीलें और इसी प्रकार की दूसरी वस्तुएं चप्पे २ पर दिखाई पड़ती हैं; और यदि कोई वर्षा ऋतु में मालाबार के भीतर जाय तो उसे ज्ञात होगा कि मालाबार एक बड़ा भारी दलदल है।

मालाबार के नारियल, कालीमिरच, सोंठ और सुपारी ने अन्य देशों के सौदागरों को सदैव अपनी ओर खींचा है और चिरकाल से मालाबार सम्पूर्ण जगत् के व्योपारियों का केन्द्रस्थान रहा है।

कुछ प्राचीन बातें—प्राचीन समय में इस भूमि को जिस में मालाबार, ट्रावनकोर और कोचीन सम्मिलित हैं **केरल भूमि** के नाम से पुकारा जाता था, और उसे अति पवित्र भूमि समझा जाता था। मालाबारी ब्राह्मण कहते हैं कि श्री परशुराम जी ने यह भूमि समुद्र से युद्ध करने के पीछे प्राप्त की थी, और फिर ब्राह्मणों को दान कर दी थी। लोग हरि भक्ति में प्रवृत्त रहते थे,

इसलिये उन्होंने क्षत्रियों को बुलाकर केरल भूमि का प्रबन्ध उनको सौंप दिया ।

यही केरल भूमि वह भूमि है जहां से श्री शंकराचार्य्य एक नम्बूदरी ब्राह्मण के घर उत्पन्न हुए और जिन्होंने भारतवर्ष में नास्तिकता की जड़ काट कर फैंक दी और नए सिरे से वेद और आत्मिकवाद का प्रचार किया । अन्य देशों की भांति पूर्वकाल में केरल देश भी एक ख़ालिस हिन्दू देश था और यहां के हिंदू पूर्ण स्वराज्य का आनन्द लेते थे परन्तु यहां की प्राकृतिक सम्पत्ति ने अन्य देशों के व्यापारियों को अपनी ओर खींचा और रोमन, मिसरी, चीनी, यहूदी, सिरीयन, अरब और अंग्रेज व्यापारियों ने मालाबार के साथ व्यापारिक सम्बन्ध जोड़े ।

अरब के व्यापारियों ने धीरे २ मालाबार को अपना घर बना लेने की इच्छा की । जिन दिनों अरबी सौदागर मालाबार में पहिले पहिल पहुंचे उन दिनों राजा चीरामन पीरूमल गद्दी पर था ।

मालाबार में यवन प्रवेश—राजा चीरामन पीरूमल के विषय में विचित्र २ बातें प्रसिद्ध हैं, जिनको सुनकर और विचार कर मालूम होता है कि यही राजा इस बात का जिम्मेवार था कि उसने मालाबार में मुसलमानों के निवास की सब सामग्री प्रस्तुत की । अतएव एक रिवायत है कि—

"मालाबार के हिन्दू राजा चीरामन पीरूमाल को स्वप्न हुआ कि आकाश पर पूर्ण चन्द्रमा निकला है और फिर उसके दो भाग होगए हैं । कुछ काल पीछे यवन यात्री मालाबार आए और उन्होंने बतलाया कि अरब में हज़रत मुहम्मद साहब ने चांद के दो टुकड़े कर डाले थे । इस पर वह राजा बड़ा चकित हुआ, और अरब

जाने के लिए तैयार होगया। अन्त में वह किसी न किसी उपाय से मक्के में पहुंच गया, यहां पहुंच कर मुसलमान बन गया और उसका नाम अब्दुल रहमान सामरी रखा गया। कुछ काल पीछे वह बीमार हो गया जब उसके बचने की कोई आशा न रही तब उसने अपने यवन साथियों को मलियालम भाषा में पत्र लिख दिये कि वह शीघ्र मालाबार जांय और वहां जाकर यवन मत का प्रचार करें। इन चिट्ठियों में यह भी लिखा था कि इन लोगों को मसजिदें बनाने में सहायता दी जाय। सब से पहिला मनुष्य जो पत्र लेकर आया उसका नाम मलिक* इबन दीनार था, और उसने कई मसजिदें मालाबार में बनवाई।

एक और आख्यायिका के अनुसार कहा जाता है कि राजा चीरामन पीरूमल एक दिन एक तालाब पर नहाने गया उस से आगे एक नम्बोदरी विप्र नहा रहा था। विप्र ने दूर ही से उन्हें कहा "ख़बरदार आगे न आना मैं नहा रहा हूं, और तुम शूद्र हो तुम पास आये तो मैं अपवित्र हो जाऊंगा," उस समय राजा के साथ एक अरबी व्यापारी था। उसने राजा को कहा "चलो मक्के में, वहां चौथा वेद प्रकट हुआ है, जो तुम्हें शूद्र नहीं रहने देगा।" इस पर वह राजा मुसलमान बनने और कुरान पढ़ने के लिए तैयार हो गया, और अन्त में मुसलमान बन गया।

तीसरी आख्यायिका यह है, कि जब अरबी खलासी मालाबार पहुंचे तो राजा चीरामन पीरूमल ने उनको अपने पास नौकर रख लिया और अन्य देशों में व्यापार करने के लिए जहाज चलाने पर नियत किया, कई वर्षों तक यह कार्य्य होता रहा, अन्त में

* Malabar Manual.

अरबी खलासियों ने राजा से कहा, "अब हम अपने देश को जाना चाहते हैं, क्योंकि मालाबार अब तक हमारे लिए एक अपरिचित देश है, हम न तो यहां विवाह कर सकते हैं, न जहाज चलाने के लिए कोई मनुष्य यहां मिल सकता है"। उस समय मालाबार में हिन्दू ही हिन्दू बसते थे, और वह जहाजवाही और समुद्रयात्रा को धर्म्म विरुद्ध समझते थे। राजा को चिन्ता हुई कि उसकी आय का एक बड़ा साधन मिट जायगा, इसलिये उसने आज्ञा दी कि जो हिन्दू धीमर हैं उन में से अरबी जहाजी केवट अपनी इच्छानुसार उन्हें यवन बनाकर जहाजवाही का काम उनसे लें। इस आज्ञा ने मालाबार के भीतर यवनों की उन्नति का बुनियादी पत्थर रख दिया। प्रत्येक धीमर कुल को आज्ञा थी कि वह कम से कम एक मनुष्य को मुसलमान बनने के लिए अरबों को सौंप दे।

मालाबार मैनूएल के पृष्ठ १९८ पर मोपलों की बढ़ती हुई आबादी का वर्णन करते हुए लिखा है कि:—

"The race (Moppilla) is rapidly progressing in numbers, to some extent from natural causes and to a large extent from converions from the lower classes of Hindus—a practice which not only permitted but in order to man their natives, directed that one or more male members of the families of Hindu fishermen should be brought up as Muhammadens and this practice has continued down to modern times."

चिरकाल तक इस बात पर आचरण होता रहा और अछूत हिन्दू मुसलमान बनते रहे। मुसलमानों को उनके धार्मिक कर्तव्य पालन करने के लिए जगह २ मसजिदें बनाने की आज्ञा दी गई,* और मसजिदों का खर्च पूरा करने के लिए उनके साथ हिन्दू राजाओं ने जागीरें भी लगादीं। वह जागीरें कतिपय मसजिदों के साथ अब तक लगी हुई हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यवनों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती गई। परन्तु उनको कभी साहस नहीं हुआ कि वह मालाबार पर अपना पूरा २ अधिकार करलें, और वहां अपना राज्य स्थापित करलें। सदियों तक वह ऐसी ही दशा में रहे। अन्तिम हैदर और सुलतान टीपू का समय भी आ पहुंचा। इन दोनों ने मालाबार में राज्य स्थापित करना चाहा और लोगों को भयभीत करने के लिए घोर से घोर अत्याचार किये। सुलतान टीपू के अन्याचारों के विषय में जो उस ने मालाबार के भीतर सन् १७९० ईसवी में किये, कहा जाता है कि:—

"मालाबारी लोगों के साथ उसका व्यवहार महा पैशाचिक था, कालीकट में माताओं को फांसी पर लटकाया गया, बच्चों की गर्दनें मरोड़ी गईं, ईसाई और हिन्दुओं को नग्न करके हाथी के पांव के साथ बांध कर उनके टुकड़े २ कर दिये गये, समस्त गिरजे और मन्दिर उसने नष्ट कर दिये, और स्त्रियों को जबरदस्ती यवनों को सोंप दिया।

* उस समय मन्दिर, मसजिद बनाए गए, और इस समय भी इस प्रकार की मसजिदें दिखाई देती हैं जो पहिले मन्दिर थे।

* Voyage to E. Indies Forester's translation London. 1800 PP. 141—42 (by Fra Bortamaas)

मोपलों का वर्णन करते हुए यह कथा भी अनुचित न होगी जो एक मुसलमान यात्री जीनउद्दीन ने अपनी यात्रा-वृत्तान्त में लिखी है। वह बताता है कि सन् १५६२ ई० में पुर्तगीज़ ईसाइयों ने मालाबारी यवनों पर घोर अत्याचार आरम्भ किए, उन्हें ज़बरदस्ती ईसाई बनाया गया, मकान नष्ट किए गए, यवन स्त्रियों को भी ईसाई बनाया गया और मसजिदें जला दी गईं ❀।

परन्तु इस के पीछे टीपू सुलतान ने पुर्तगीज़ों के इन कामों का पूरा बदला लिया और हिन्दू बेचारे घुन की तरह साथ ही पिस गए।

मालाबार में ईसाइयों का प्रवेश।

मालाबार की कथाओं से यह बात विदित होती है, कि शहर कोचीन से २० मील के फ़ासले पर सन् ५२ ई० में एक मनुष्य सेंट टामस भारतवर्ष के इस पश्चिमी तट पर उतरा और उसने यहां ईसाई मत का प्रचार आरम्भ किया। हिन्दू राजाओं ने उसका पूरा सन्मान किया। कोचीन रियासत में भी एक ऐसा गिरजा अब तक बताया जाता है कि वह सेंट टामस के समय का है।

वासकोडेगामा सन् १४९८ में कालीकट पहुंचा और तब से पुर्तगीज़ों का बल बढ़ने लगा। यहां तक कि १६६३ ईसवी का वर्ष आ पहुंचा, जब कि पुर्तगीजों का सम्बन्ध कोचीन से टूट गया, और उनका पतनकाल आरम्भ हुआ। इस बीच में ईसाई मत का सब प्रकार से प्रचार किया गया और यदि मुसलमान यात्री जीनउद्दीन के लेख को सत्य माना जाय तो ईसाइयों ने

❀ Malabar Manual.

लोगों को जबरदस्ती निज धर्म्म में मिलाना भी एक आवश्यक कर्त्तव्य समझा होगा।

१६६३ ईसवी में जब पुर्तगीजों का बल घट रहा था, उस समय अंग्रेज और फरान्सीसी अपना २ अधिकार जमा रहे थे, और प्रत्येक अपना बल बढ़ाने के लिए एक दूसरे को दबा रहा था। सन् १७९२ ईसवी के अन्त में मालाबार के भीतर अंग्रेजों का राज्य होगया।

इस समस्त काल में ईसाई बड़ी तेजी के साथ बढ़ते रहे, और इस समय भी समस्त केरल देश में ईसाइयों का प्रभाव विशेष रूप से सबको विदित है। कोचीन रियासत तो एक तिहाई ईसाई हो चुकी है। ट्रावनकोर का भी यही हाल है, और मालाबार खास में भी ईसाइयों की प्रभुता फैली हुई है।

कोचीन राज की सम्पूर्ण जन संख्या सन् १९११ की जनगणना के अनुसार ९१८११० है जिनमें से ईसाई २५.३ प्रति सैकड़ा हैं, मुसलमान ९.५ और हिन्दू ६५.२ हैं।

ट्रावनकोर रियासत की जनसंख्या ३४२८९७५ है जिसमें से—

हिन्दू २२८२६१७ हैं,
ईसाई ९०३८६८ हैं,

मुसलमान २२६६१७ हैं। बाकी १६, १७ हजार के अन्य मतावलम्बी हैं।

समस्त केरल देश में ईसाइयों की संख्या १७ लाख के लगभग है। मुसलमान १३ लाख हैं, और हिन्दू लगभग ५० लाख हैं। ईसाइयों ने अपनी प्रचार विधि के अनुसार स्कूल, कालेज, अनाथालय, दीनालय, और कई प्रकार के कारखाने खोल रक्खे हैं, जिनमें वह ईसाई बने लोगों को काम देते हैं।

मालाबार के हिन्दू।

मालाबार के हिन्दू भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों की भांति कई श्रेणियों में बटे हुए हैं। मालाबार के हिन्दुओं का श्रेणी विभाग बहुत पेचीदा है, जिसका उदाहरण और कहीं कठिनतासे ही मिलेगा।

नम्बोदरी ब्राह्मण।

सब से ऊंचे दर्जे पर नम्बोदरी ब्राह्मण हैं, जिनका यह दावा है कि परशुराम ने इस भूमि का राज्य ब्राह्मणों को दिया है, और उन्होंने फिर क्षत्रियों को अपने राज्य के प्रबन्धार्थ नियत किया। नम्बोदरी ब्राह्मण अपनी पूजा पाठ में, वेद गायन में, और हरि-भक्ति में पूरा समय देते हैं, और इस अवनत दशा में भी वेदों को कण्ठाग्र करके उनकी रक्षा करने में उनका विशेष हाथ है। सचमुच इस के लिए वह धन्यवाद के पात्र हैं, परन्तु उनके भीतर कुछ ऐसी कुरीतियां चल पड़ी हैं,जिन्होंने उनको निर्बल कर दिया है।

नम्बोदरी कुल में यदि ४ भाई हों तो केवल बड़ा भाई ही विवाह कर सकता है, बाकी भाइयों को इस कुल में विवाह करने की आज्ञा नहीं है। हां, वे नायर कन्याओं से सम्बन्ध करके अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं। इस सम्बन्ध से जो सन्तान उत्पन्न होती है वह नायर कहलाती है, और उस के पालन पोषण का भार नायरों पर ही होता है। इस रसम के कारण बहुत सी ब्राह्मण कन्याओं को विवश अविवाहित रहना पड़ता है। **ब्राह्मण कन्याओं को कठिन परदे में रक्खा जाता है** इसलिए उनका नाम "**अन्तर जन्म**" पड़ गया है।

मालाबार के १० ताल्लुकों में नम्बोदरी ब्राह्मणों के १०३५

कुल हैं, जिनमें से २५३ ऋग्वेदी, ७०४ यजुर्वेदी, और ७ सामवेदी हैं। शेष ७१ कुलों को वेद पढ़ने का अधिकार ही नहीं है।

नायर—नम्बोदरियों से नीचे नायर हैं, जिनको ब्राह्मण कहते हैं कि वह शूद्र हैं, परन्तु नायर अपने आपको क्षत्री कहते हैं। उनकी भी रस्में बड़ी विचित्र हैं, वह यज्ञोपवीत नहीं पहिनते और उनकी **जायदाद के अधिकारी पुत्र नहीं वरन् लड़कियों के लड़के होते हैं।**

एक समय था जब कि यह क्षत्रिय जाति थी, और मालावार में राज्य करती थी। अब भी कुछ नायर राजे अपनी छोटी २ रियासतों के मालिक हैं। नायरों के भीतर क्षत्रिय भाव धीरे २ दूर होता चला जाता है, और उनकी जायदाद के रिवाज ने उन्हें बहुत दुखी कर रक्खा है।

वर्तमान समय में यद्यपि नवीन विद्या प्रकाश से वे कुछ सुभूषित हैं तथापि प्राचीन प्रथाओं को वे तोड़ नहीं सकते। अब तक यह ब्राह्मणों के मन्दिरों और तालाबों में नहीं जा सकते, और न उनसे अपनी कन्याओं के सम्बन्ध करने से इन्कार कर सकते हैं। नायरों में बहुत से उच्च पदों पर पहुंच कर अपनी जाति का नाम उज्ज्वल कर चुके हैं। यह बुद्धिमान् परिश्रमी, और मिलनसार हैं, और थोड़े से उद्योग से फिर अपनी खोई हुई शक्ति प्राप्त करने की योग्यता रखते हैं।

तीया जाति—नम्बोदरी और नायरों के अतिरिक्त मालाबार में एक तीया जाति है, जिसे चारों वर्णों से बाहर समझा जाता है। उन्हें आज्ञा है कि वह ब्राह्मण या नायर से २४ फुट के फासले पर रहें। तीया लोग ब्राह्मणों के घरों में नहीं जा

सकते, उनके तालाबों के पास भी नहीं जा सकते। अभी ३ वर्ष हुए जब कि फरवरी १९१९ को एक मुक़द्दमा कालीकट में हुआ। मामला यह था कि एक ब्राह्मण मिस्टर शंकरन आयर की माता पेट दर्द से महा व्याकुल हुई। मिस्टर शंकरन आयर उस के इलाज के लिये डाक्टर चोई को जो एक तीया था, बुला लाये। मार्ग में एक तालाब पड़ता था, डाक्टर चोई उस तालाब के किनारे से गुजर कर मिस्टर आयर के घर पहुंचे। इसी पर डा० चोई और शंकरन आयर पर नालिस करदी गई कि क्यों उन्होंने तालाब को अपवित्र कर दिया। ६ मास तक यह मुक़द्दमा चलता रहा। बड़े२ प्रसिद्ध वकीलों, ग्रेजुएटों और पढ़े लिखों ने यही गवाही दी कि बेशक एक तीया के गुजर जाने पर तालाब अपवित्र हो जाता है। मिस्टर ऐम० गोपाल वकील हाईकोर्ट मद्रास भी दावेदारों के एक गवाह थे। उन पर जो जिरह हुई और उसके जो उत्तर उन्होंने दिये उन में से एक दो विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं:—

"**प्रश्न**—यदि एक तीया ईसाई या मुसलमान बन जाय तो क्या वह इस तालाब के किनारे से गुजर सकता है?

उत्तर—हाँ, वह इस कानून के अनुसार जो **ईसाई गवर्नमेंट ने बनाया है**, गुजर सकता है।

प्रश्न—यदि डा० चोई ईसाई या मुसलमान बन जांय तो क्या वह तालाब पर से गुज़र सकते हैं?

उत्तर-बेशक।

परन्तु मुझे आशा है कि डा० चोई ईसाई न बनेंगे।"

तीया जाति की संख्या सारे केरल देश में १८ लाख बताई जाती है जिनमें डाक्टर, वकील, बैरिस्टर एडीटर, स्कालर,

साहूकार, बैंकर, सौदागर, तहसीलदार, मुनसिफ़, आदि सब प्रकार के लोग पाए जाते हैं। उनमें धारा प्रवाह संस्कृत बोलने वाले भी दिखाई देते हैं, और उनमें ऐसे लोग भी हैं जो अपनी जाति के लिये बड़ा प्रेम रखते हैं।

चमार—यहां चमारों की संख्या भी कम नहीं परन्तु हिन्दुओं का उनके साथ जो घृणाप्रद वर्ताव है, वह उन्हें हिन्दुओं से दिन प्रतिदिन फाड़ रहा है।

अस्तु, मालूम हुआ है कि ९९ हज़ार चमारों में से अब केवल ४० हज़ार रह गए हैं। बाकी या तो मुसलमान या ईसाई हो गए हैं।

अन्य जातियां—इनके अतिरिक्त और बहुत सी हिन्दू जातियां मालाबार में हैं, जैसे नायाडी, यलाबन, कनीसन, मसकून आदि, और यह सब अछूत ही नहीं समझी जातीं वरन् इनकी दूर की छाया और दर्शन भी वर्जित हैं।

निम्नलिखित नक़शे से विदित होगा कि वह कितने २ फ़ासले पर खड़े रक्खे जाते हैं—

नायाडी ७२ फुट,
यलाबन ६४ फुट,
कनीसन ३६ फुट,
मसकून २४ फुट,

मालाबार में अछूत—मालाबार जिसमें कोचीन और ट्रावनकोर भी सम्मिलित हैं, इसकी सारी बस्ती ८० लाख है, जिनमें से १७ लाख ईसाई, १३ लाख यवन और ५० लाख हिन्दू हैं, इनमें से प्राय: २५ लाख अछूत हैं।

मालाबार और आर्य्यसमाज।

मालाबार के मुसलमान—मालाबार के मुसलमान को मोपला या मापला के नाम से पुकारा जाता है। वास्तव में यह सब मोपले पहिले हिन्दू अछूत थे, परन्तु अब दीवाने मुसलमान हैं। वह अपने थंगलों पर पूरा विश्वास रखते हैं। उनके आचार विचार और भावों को देखा जाय तो उनका नाम मुसलमान रखने के स्थान में थंगली कहना उचित मालूम होता है। थंगल जो कहे उनके लिए ईश्वरी आज्ञा है। थंगलों के शरीरों को वह पवित्र समझते हैं, और उनको छूना वह रोगों की निवृत्ति, पापों से मुक्ति और मनोकामनाओं की पूर्त्ति का साधन समझते हैं। थगलों पर किस प्रकार वह लट्टू हैं, इसके एक दो उदाहरणों का अंकित कर देना अनुचित न होगा।

मालाबार के अरनाड ताल्लुके में एक जगह मम्बरम है। उस जगह के थंगल को बड़ा थंगल समझा जाता है। उसके पग छूकर मोपले क़समें खाते हैं। १७ फरवरी सन् १८५२ ई० को गवर्नमेण्ट इस थंगल को क़ैद करना चाहती थी, मोपलों को किसी प्रकार इसका पता लग गया। उसी दिन १२ हज़ार मोपले वहां जमा होगए। जब वहां के डिप्टी कमिश्नर मिस्टर कानोली को पता लगा तो उसने पकड़ना बन्द कर दिया, और कुछ दिनों के पीछे गुप्त रीति से थंगल को अरब भेज दिया। फिर जब सन् १८५५ ई० में मोपलों से हथियार लिये जा रहे थे तब ४ मोपलों ने मिस्टर कानोली को उसकी कोठी में घुसकर क़तल कर दिया, और इस प्रकार अपने थंगल का बदला ले लिया।

मोपलों को थंगलों पर कितना विश्वास होता है, वह निम्न-लिखित घटना से विदित होगा—

इस मोपला विद्रोह में जब कुछ मोपले सरकारी सेना से मारे जा चुके थे, तो उसी दिन सायंकाल को चैम्बर शेरी का थंगल मसजिद में बैठा हुआ आकाश की ओर देख रहा था और हंस रहा था। पास बैठे हुए मोपलों ने पूछा—"हज़रत, आप किस बात पर हंसते हैं।" उसने उत्तर दिया—"तुम्हारे सुनने के योग्य यह बात नहीं है।" मोपलों ने हठ किया कि "हजरत, हमें अवश्य बताइये"। वह उसी प्रकार आकाश की ओर मुख किये हँसता रहा। अन्त में बड़ी देर के पीछे उसने कहा—"मैं देखता हूँ कि आकाश में बिहिश्त की खिड़कियां खुल गई हैं और उनमें से हूरें निकल२ कर उन मोपलों का स्वागत कर रही हैं जो आज प्रातः शहीद हुए थे।"

यह सुन कर मोपलों ने पूछा—"हज़रत, हमें यह दिन कब नसीब होगा?" उसने उत्तर दिया—"वह दिन तो आया हुआ है, तुम लोग तो ग़ाफिल पड़े हुए हो, जानते नहीं हो कि गोरखों का कैम्प लगा हुआ है। जाओ, हमला करो और शहीद हो जाओ।" इस पर ५०० मोपले तैयार हुए। उन्होंने हमला किया और कट २ कर मर गए।

इस घटना से प्रगट होता है कि मोपले थंगल के एक एक वचन पर कितना विश्वास रखते और पालन करते हैं। मालाबार के कई स्वतन्त्र विचार वाले मुसलमान तो यह कहते हैं कि यदि मक्के से लिखा हुआ कोई फतवा आवे, और यहां के थंगल रद्द कर दें तो कोई मोपला उस फतवा को न मानेगा। यह भी कहते हैं कि यही थंगल मोपलों को बार २ इस बात पर प्रेरित करते रहे हैं कि वह जिहाद करें। अस्तु अरनाड ताल्लुके में १८३६ ई० से लेकर सन् १८५३ तक, १८ वर्षों में मोपलों ने २२ बार विद्रोह किया है। १८९६ ई० में मोपलों ने जो विद्रोह किया

था उसमें हिन्दुओं को भी बध किया और ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया। सारे केरल देश में इस समय मोपलों की संख्या १२ लाख है और वह प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

मालाबार के ईसाई—यहां ईसाइयों का पूरा ज़ोर है। सन् ५२ से उनका यहां प्रचार हो रहा है। इस समय इनका प्रभुत्व यहां इतना बैठ चुका है कि सब छोटे बड़े उनकी प्रशंसा के गीत गाते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि मालाबार में विद्या के फैलाने में ईसाइयों ने अपना धन जलवत् बहाया है और बीसियों मिश्नरियों ने वहां अपनी आयु ख़तम कर दी है। उन्होंने मज़दूर ईसाइयों के लिए अनेक प्रकार के कारखाने जारी किये हैं, अछूतों को बेगार से बचाया हुआ है, और इसी प्रकार की दूसरी बातों से ईसाइयों ने वहां के लोगों के भीतर अपने लिये प्रेम उत्पन्न कर रक्खा है। इस समय न केवल मालाबार वरन् सारे मद्रास प्रान्त में उनका डंका बज रहा है।

केरल देश में ईसाइयों की संख्या १७ लाख तक पहुँच गई है।

मालाबार का मोपला विद्रोह।

मालाबार में सब १० ताल्लुके हैं जिनमें से विद्रोह अधिकांश ४ ताल्लुकों में हुआ है, अर्थात् (१) अरनाड (२) वलवानाड (३) कालीकट (४) पूनानी, इन चारों ताल्लुकों की आबादी मज़-ह़ब के विचार से निम्नलिखित है—

ताल्लुका	हिन्दू	मुसलमान	ईसाई
कालीकट	१८३६४	८१६६६	५४५१
अरनाड	१६८६४१	२२३३७७	५८६
वलवानाड	२५४२२३	११६२२४	५०७
पूनानी	२८५६०१	२२१६६७	२१८१५

हिन्दुओं में सब अछूत तीया चमारादि भी सम्मिलित हैं।

विद्रोह का प्रारम्भ—विद्रोह का प्रारम्भ बतलाया जाता है कि १९ अगस्त १९२१ ई० को अरनाड ताल्लुके तिरुरं-गाड़ी ग्राम से हुआ, जब कि पुलिस उस इलाके के मोपला लीडर अली मुसलयार को क़ैद करना चाहती थी, जो वहां की बड़ी मसजिद में मोपलों के साथ बैठा हुआ था। उस दिन पुलिस उसे पकड़ न सकी, क्योंकि मोपलों ने आगे बढ़ कर सामना किया। इस लड़ाई की खबर सारे ताल्लुके में आग की तरह फैल गई और फिर दूसरे ताल्लुकों में पहुँच गई। मोपले तल-वारें लेकर निकल पड़े और उन्होंने सरकारी इमारतों, स्टेशनों, तारों आदि को हानि पहुँचाने के साथ २ हिन्दुओं को भी लूटना,

मारना और ज़बरदस्ती मुसलमान बनाना आरम्भ कर दिया। गवाहियों से और पीड़ित मनुष्यों के कथन से पता चलता है कि अरनाड और वलवानाड ताल्लुकों में २१ अगस्त ही को हिन्दू लूटे गए, क़तल किए गए, और ज़बरदस्ती मुसलमान बनाए गए।

तैनूर में २१ अगस्त को प्रत्येक हिन्दू मकान पर आक्रमण किया गया। स्त्रियों तक के भूषण बहुत निर्दयता और पिशाचकता से उतारे गए। कोई क़तल की वारदात नहीं हुई। तिरूर में भी उसी दिन अर्थात् २१ अगस्त को हिन्दुओं को लूटा गया।

वलवानाड ताल्लुके के कई भागों में ता० २१ और २२ को हिन्दुओं के नाश का काम आरम्भ हुआ।

पूनानी में २२ अगस्त को सब नम्बोदरी और नायरों को लूटा गया।

मेलातूर (Malathur) में हिन्दुओं को न केवल लूटा गया वरन् ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया गया।

अरनाड ताल्लुका में तिरूरङ्गाड़ी से ३॥ मील के फ़ासले पर एक ऐमशाम वैलमुख है। वहां विद्रोह आरम्भ होने के दो दिन पीछे हिन्दुओं का बध आरम्भ कर दिया गया। ३ नायर, २ सुनार, २ नाई और ५ तीया जाति के हिन्दू क़तल किए गये। कोई ऐसा हिन्दू घर नहीं बचा जिसे सर्वथा लूट न लिया गया हो।

इसी प्रकार कुडवायूर ऐमशम, वेंगरा ऐमशम, वेली ओरा ऐमशम, और कन्ना मंगलम ऐमशम में हिन्दुओं का क़तल आम आरम्भ हो गया।

मंजेरी में २२ अगस्त की प्रातः को सरकारी खज़ाना लूटा गया, और उसी शाम को मंजेरी, वंडोर, कलयपकन चेरी, पर्पनगाडी, तिरूर, अंगदी पोरम और दूसरे स्थानों पर हिन्दू घरों को मोपलों ने लूटना आरम्भ कर दिया, और २४ अगस्त से बड़ी तेज़ी के साथ हिन्दुओं को बलात्कार मुसलमान बनाने का कार्य होने लगा। उस समय यह खुला हुक्म हो चुका था कि अरनाड ताल्लुका को सर्वथा मुसलमान ताल्लुका बना लिया जाय, और इस उद्देश्य के लिये हिन्दुओं को या तो क़तल कर दिया जाय या मोपला बना लिया जाय। *

मेलमुरी ऐमशाम में २२ और २३ अगस्त को प्रायः सभी हिन्दुओं को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया गया। बहुत से तलवार के डर से मुसलमान बन गए। अगस्त के अन्त तक मोपलों ने सैकड़ों हिन्दू मन्दिर तबाह कर दिए, मूर्त्तियां तोड़ दीं, घर जला दिये। सैकड़ों हिन्दुओं को ज़बरदस्ती मुसलमान बना दिया, सैकड़ों क़तल कर दिये गए और हज़ारों को जंगलों में छिपने और दुःख व विपद् से दिन काटने पर लाचार कर दिया गया।

कालीकट इलाके में विद्रोह अगस्त के पीछे आरम्भ हुआ और यहां पर भी ज़ोर से मुसलमान बनाने, लूटने, घर जलाने, मन्दिर व मूर्त्तियां तोड़ने के काम आरम्भ हुए।

कांग्रेस और खिलाफत वालों के उद्योग—

मोपला लोगों को इस प्रकार जोश में आए हुए देख कर मालाबार की प्रान्तिक कांग्रेस कमेटी के मन्त्री मिस्टर केशव ३० और

---

* बयान मि० चमुकुटी मंजेरी मालाबार जनरल कालीकट २२ फरवरी सन् २२।

यकों को साथ लेकर गवर्नमेण्ट की आज्ञा से विद्रोही इलाकों में मोपलों को समझाने के लिए गए। विद्रोह आरम्भ हुए अभी ५-६ दिन ही हुए थे कि यह पार्टी तिरुरङ्गाड़ी पहुँच गई। इन लोगों ने बड़ा परिश्रम किया कि मोपले अपने दुष्ट कर्म्म को त्याग दें, परन्तु उनका सब परिश्रम निष्फल हुआ, और उनको निराश होकर लौटना पड़ा। इसके साथ ही मिस्टर के० माधव जो कालीकट कांग्रेस कमेटी के मन्त्री हैं, मंजेरी पहुँचे और मोपलों के एक शस्त्रधारी जत्थे को शान्ति का उपदेश दिया, परन्तु मोपलों ने साफ कहा कि हमको शान्ति का उपदेश मत दीजिये। अन्त में वह निराश हो कर लौट आए।

बाग़ी मोपलों का व्यवहार—बाग़ी मोपलों ने पहले सब हिन्दुओं से तलवारें, बन्दूकें और दूसरे हथियार छीन लिए फिर हिन्दू मन्दिरों की तलवारें और छुरियां भी इकट्ठी कीं। उसके पीछे हिंदुओं से चावल और धन वसूल किया। फिर उन से कहा कि या तो मुसलमान बनो, या अपने प्राण दे दो। इसके साथ ही हिंदू स्त्रियों का सतीत्व भ्रष्ट किया, उन्हें ज़बरदस्ती मुसलमान बना कर मुसलमानों से साथ विवाह दिया। छोटे २ बच्चों को उनके माता पिता के देखते २ निर्दयता से क़तल कर दिया, और स्त्रियों के पेट फाड़ डाले और इसी प्रकार के पैशाचिक अत्याचार किए जिनको स्मरण करके शरीर में रोमांच हो जाता है।

मोपलों का जंगी जयकारा और जंगी झंडा—

मोपले जब अत्याचार के लिए बाहर निकलते थे तो "अल्लाह-अकबर" के अलावा "किल किल" का नाद करते थे। "किल किल" उनका रणनाद है। वे अपने साथ लाल रंग का एक झण्डा भी रखते थे जिस पर अरबी में कुछ लिखा होता था।

ऐसा ही एक झंडा तिरुरङ्गाड़ी से १।। मील के फ़ासले पर तेनूर के बाग़ियों से २० अगस्त सन् १९२१ को छीना गया। इस झंडे पर अरबी में जो कुछ अंकित था उसका अनुवाद यह है—

"ख़िलाफ़त—अल्लाहू अकबर" बूढ़े और निर्बल, जवान हृष्ट पुष्ट, जो चल फिर सकते हैं, जो सवारी कर सकते हैं चाहे वह धनी हैं या निर्धन, शस्त्रधारी हैं वा निरस्त्र, पूर्ण दृढ़ता के साथ प्रत्येक को इस युद्ध में (जो ख़ुदा के लिए है) सम्मिलित हो जाना चाहिए।"

इस झण्डे पर एक चांद की और पांच नोकदार तारों की तसवीरें भी थीं।

यह विद्रोह के प्रारम्भिक वृत्तांत हैं; इसके पीछे विद्रोही इलाके में जो कुछ हुआ वह उन बयानों से मालूम हो सकता है, जो पीड़ित लोगों ने दिये हैं। उनमें से कुछ बयानात इस पुस्तक में भी अलग दिए गये हैं। उनका पाठ बहुत सी बातों पर प्रकाश डालेगा।

बग़ावत की ख़बरों पर अविश्वास—पहिले २ बग़ावत और मोपलों के अत्याचारों के समाचारों पर विश्वास नहीं किया गया, और मालाबार के बाहर के लोग इस ओर से लापरवाह रहे। प्रेस के एक बड़े भाग ने इन ख़बरों को दबा देना ही उचित समझा। सच तो यह है कि बहुत समय तक लोगों को मालूम नहीं हो सका कि वास्तविक बात क्या है।

कांग्रेस और खिलाफत कमेटी की साझी चिट्ठी

जब **आल इंडिया ख़िलाफ़त कान्फ्रेंस** ने उन की बहादुरी की तारीफ़ के पुल बांधे तो मालाबार या केरल प्रान्तिक कांग्रेस कमेटी और अरनाड ख़िलाफ़त कमेटी के मन्त्रियों ने

उचित जाना कि लोगों को वास्तविक घटनाओं से सूचित किया जाय। अतः उनकी ओर से एक साझी चिट्ठी प्रकाशित की गई, जिसे नीचे उद्धृत किया जाता है। जिन शब्दों को हमने मोटा किया है वह विशेष ध्यान से पढ़े जाने के योग्य हैं। वह चिट्ठी यह है:—

भारत के मुसलमान नेताओं के नाम

खुली चिट्ठी।

अहमदाबाद ख़िलाफ़त कान्फ्रेंस में जो प्रस्ताव मालाबार के मोपलों के विषय में पास हुआ है और मौलाना अब्दुलबारी की ओर से जो तार १० दिसम्बर सन् १९२१ के अखबार सर्वेंट में छपा है उससे संदेह होता है कि मालाबार के बाहर के हिन्दुओं और मुसलमानों को भी इस ज़िले की हृदय विदारक घटनाओं का सच्चा ज्ञान नहीं। इससे स्वतंत्र विचार वाले मालाबारी हिंदुओं के दिलों पर मालाबार के बाहिर के **मुसलमानों की उदासीनता से चोट पहुंचती है, और यह सन्देह होता है कि हिन्दू मुसलमानों का मेल इतना दृढ़ नहीं जितना कि होना चाहिये।**

अरनाड और वलवानाड के मोपलों को जो कष्ट हो रहे हैं वह अवर्णनीय हैं। जो समाचार मिले हैं यदि वह मिथ्या नहीं तो उनके चिन्तन से हृदय कम्पित होता है। रेलगाड़ी में मोपलों की मौत की एक ही घटना ने बाह्य संसार को मारशल ला की भीषणता का परिचय दे दिया है। कई निर्दोषियों को भारी नुक़सान सहना पड़ा है। जो भयानक दृश्य अरनाड में देखे गए उनके ध्यान से ही अश्रु पात होने लगते हैं। बागी इलाके में

जाना कठिन है। शेष मोपलाओं से जिनके हृदयों में आतंक छाया हुआ है, सच्ची घटनाओं का पता लगाना कठिन है। अतः मौलाना अब्दुलबारी की यह तजवीज कि एक स्वतन्त्र जांच कमेटी नियुक्त की जाय, उचित है, और खिलाफ़त कान्फ्रेंस ने मोपलों से सहानुभूति का जो प्रस्ताव पास किया है वह अनुचित नहीं। परन्तु प्रत्येक मनुष्य आशा करता है कि मुसलमान लोग उन सताए हुए हिन्दुओं के साथ सहानुभूति का प्रकाश करेंगे जिन पर मोपलों ने अत्याचार किये हैं। मौलाना जी ने जो हिंदू मुसलमान दोनों दलों में सन्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं, यह कहा है कि मोपलों के अत्याचारों का वर्णन अतिषयोक्ति से किया गया है और खिलाफ़त कान्फ्रेंस ने मोपलों का अपने मजहब के लिये आत्मसमर्पण करने पर अभिनन्दन का प्रस्ताव पास कर दिया; परन्तु **इन अत्याचारों के विषय में जो उन्होंने हिन्दुओं पर किये हैं अप्रसन्नता का एक शब्द भी मुख से नहीं निकाला है, और न इन सताये हुए हिन्दुओं के साथ सहानुभूति का प्रकाश किया है।** हमें निश्चय है कि यदि मौलाना जी को सच्ची बातों का पता होता तो वह ऐसा आश्चर्य्यजनक तार प्रकाशित न करते। यह दुर्भाग्य का विषय है कि ऐसा जिम्मेवार लीडर इस प्रकार के अवसर पर जब कि दोनों जातियों में प्रेम का सम्बन्ध एक सीमा तक स्थापित हो चुका है, इस प्रकार का **मिथ्या बयान प्रकाशित करता है। जो परिणाम वास्तविक अमानुषिक घटनाओं को दबा देने और छिपाने से उत्पन्न हो सकते हैं वही परिणाम मौलाना जी की अनभिज्ञता से होने सम्भव हैं।**

हम यह निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि मोपलों के इस प्रकार के दुष्ट कर्म्मों का ऐसा बुरा परिणाम निकलेगा कि भारतवर्ष में स्वराज्य प्राप्ति की सारी आशाएं मिट्टी में मिल जायँगी। एक सच्चे सत्याग्रही को सचाई के सिवाय कोई चारा नहीं। सचाई हिन्दू मुसलिम एकता, स्वराज्य से भी अधिक मूल्यवान् वस्तु है। इसलिये हम मौलाना साहब और उनके सहधर्मियों और भारतवर्ष के माननीय नेता **श्री महात्मा गांधीजी से** (यदि वह भी यहां के हालात से अनभिज्ञ हों) कहते हैं कि **मोपलों ने हिंदुओं पर जो अत्याचार किये हैं, वह सर्वथा सत्य हैं,** और मोपला बाग़ियों के दुष्कर्मों में कोई ऐसी बात नहीं जिस पर कोई सच्चा सत्याग्रही उनका अभिनन्दन कर सके और किस बात पर उनका अभिनन्दन किया जाये। निर्दोष हिन्दुओं पर इनका अकारण हमला करना, अरनाड और वलवानाड और पूनानी ताल्लुकों के कुछ भागों में उनकी आम लूट मार, विद्रोह के आरम्भ में कुछ स्थानों पर हिन्दुओं का बलात् मुसलमान बनाया जाना और हिन्दू स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों का बिना किसी कारण के क़तल किये जाना केवल इस अपराध पर वे **क़ाफिर** हैं और उसी जाति से हैं जिसमें से कि पुलिसमैन हैं, जिन पुलिसमैनों ने कि उनके थंगलों का अपमान किया, उनकी मसजिदों में दाख़िल हुए। **मोपलों ने हिन्दू मंदिर को अपवित्र किया, हिंदू स्त्रियों का सतीत्व नष्ट किया, और उन्हें मुसलमान बना कर विवाह किये,** यह सब वृत्तान्त भ्रम और सन्देह से रहित हैं, क्योंकि हमने उन लोगों के बयानों से सिद्ध किया है जो ये सब दुःख झेल कर जीवित हैं। क्या इन अमानुषिक अत्याचारों के

लिये मोपले धन्यवाद के पात्र हैं, या इसके विरुद्ध सम्पूर्ण सत्य प्रिय लोगों के समीप धिक्कार के योग्य हैं। विशेष कर मुसलमानों की प्रतिनिधि ख़िलाफ़त कान्फ्रेंस की ओर से जिसने यह सौगन्द खाई है कि उसके सब सभासद प्रत्येक उत्तेजना की दशा में शान्ति-युक्त रहेंगे। क्या इन मोपलों, जिन्होने कि यह अत्याचार किये हैं अपनी जानें धर्म की रक्षा के लिये दी हैं ?

हम जानते हैं कि इस इलाके में बहुत से मोपले ऐसे हैं जिन्होंने विद्रोह में कोई भाग नहीं लिया और बाग़ियों में भी बाज़ ऐसे हैं जिनसे ऊपर लिखित अपराध नहीं हुए। यह बात भी हमारी समझ में आ सकती है कि मोपले अपने दीन की रक्षा में और उत्तेजित करने पर बाग़ी हुए। परन्तु यह समझ में नहीं आता कि वह अपने निर्दोष हिन्दू भाइयों के विरुद्ध क्यों उठ खड़े हुए और क्यों उनको लूटना, मुसलमान बनाना और क़तल करना आरम्भ किया, हम इसके लिये भी उनको क्षमा कर सकते हैं क्योंकि वह असभ्य हैं, मूर्ख हैं, और हठधर्म्मी हैं और सत्यरूप से या असत्यरूप से जब उनको यह निश्चय हो गया कि कोई मोपला चाहे वह दोषी है या निर्दोष सुरक्षित नहीं तो वह आपे से बाहिर हो गए; परन्तु **मालाबार के बाहर के मुसलमानों के रवये को समझना हमारे ज्ञान से बाहर है।** उनको उसी दृष्टि से नहीं देखा जा सकता जिससे कि मोपलों को।

यह सच है कि थोड़े मुसलमान लीडरों ने मोपलों के अत्याचारों की निन्दा की है और स्थानिक ख़िलाफ़त कमेटी और थोड़े मुसलमान लोगो ने पीड़ितों की सहायतार्थ खुले दिल से चंदा दिया है, **परन्तु साधारणतया मुसलमानों ने**

कहां तक इन अत्याचारों पर शोक और दुःख प्रकट किया है जो उनके सहधर्मियों ने मालाबार में किये हैं और हिन्दुओं के दिलों में कहां तक विश्वास उत्पन्न किया है यदि किसी समय में दूसरे स्थानों पर इसी प्रकार की घटनायें हो जावें जिन्होंने मालाबार के नाम पर कलंक लगाया है तो वह सहायता, सहानुभूति और अपने धर्म की रक्षा के लिए कहां तक उन पर भरोसा कर सकते हैं। **खिलाफ़त कान्फ्रेंस ने सताए गए हिन्दुओं के सम्बन्ध में एक शब्द भी सहानुभूति का नहीं कहा और यद्यपि उन्होंने हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बनाने की कार्रवाई की निन्दा की है, तथापि मोपलों के किसी और दुष्कर्म यथा लूटमार, कतल, व्यभिचार और घरों व मन्दिरों को जलाने के सम्बन्ध में एक शब्द भी नहीं कहा।** हमारा अब भी निश्चय है कि यह भूल इस कारण से हुई है कि उन्हें वास्तविक घटनाओं का ज्ञान नहीं है। हमें आशा है कि यह चिट्ठी उनकी आंखें खोल देगी और हिन्दुओं के साथ जो अत्याचार हुआ है उसका पश्चात्ताप करके हिन्दू-मुसलिम एकता के शुभ आरम्भ को मजबूत करेंगे। हमें यह भी आशा रखनी चाहिये कि सुसभ्य मुसलमान लीडर मालाबार में जाकर मोपलों में प्रचार का काम करेंगे, और ऐसा उपाय काम में लायेंगे जिनसे इन अभागे हिंदुओं के प्राण धन और धर्म सुरक्षित रहें। जो बलात् मुसलमान बनाये गए थे फिर अपने धर्म में लौट आयें।

हस्ताक्षर १—के. एन. केशवमैनन मंत्री केरल प्राविन्शियल कांगरेस कमेटी, २—के. माधव वन नायर मंत्री कालीकट कांगरेस

कमेटी, ३—डी. वी. मुहम्मद मंत्री अरनाड खिलाफ़त कमेटी, ४—वी. गोपाल मेनन, ५—ए. करुणाकर मेनन, खजांची केरल प्राविन्शियल कांगरेस कमेटी।

इस साक्षी चिट्ठी से स्पष्ट होता है कि मोपलों ने निर्दोषी निरपराधी हिन्दुओं को निर्दयता से क़तल किया और उन पर बड़े घोर अत्याचार किए।

सहायक कमेटियां—इस क़तल, लूट, मार और विपद् से हिन्दू स्त्री पुरुष और बच्चे अपने घरों को छोड़ कर कालीकट, टिरचूर, फ़ीरोक आदि स्थानों की ओर हजारों की संख्या में प्रतिदिन भागने लगे। इन विपद्ग्रस्त और भूखे लोगों की सहायता के लिये अनेक स्थानों पर सहायक कमेटियां बन गईं। सेंट्रल मालाबार रिलीफ़ कमेटी और कांग्रेस कमेटी ने अपने सहायक डिपो और कैम्प जारी कर दिये।

आर्यसमाज के स्वयंसेवक मालाबार में—

यह सहायक कमेटियां बड़ी उत्तमत्ता से काम कर रही थीं, परन्तु मुसीबत इतनी भारी थी कि और बहुत से काम करने वालों की आवश्यकता थी और विशेष कर बलात् मुसलमान बनाए हिन्दुओं की सुध लेने और उनके विषय में आवश्यक कार्य्य करने के लिये आर्य्यसमाज की आवश्यकता अनुभव की गई; इसलिये आर्य्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, सिंध, बिलोचिस्तान लाहौर ने मालाबार के पीड़ित हिन्दुओं को सहायता देने और बलात् मुसलमान किये हिन्दुओं को पुनः हिन्दू बनाने का प्रस्ताव पास किया और महात्मा हंसराज जी ने निम्नलिखित अपील प्रकाशित की—

मालाबार के पीड़ित हिंदू और उनके संबन्ध में हमारा कर्त्तव्य—यह गुप्त रहस्य सब पर प्रकट हो चुका है कि मालाबार में मोपला लोगों ने हिन्दुओं के मंदिरों को भ्रष्ट करने के अतिरिक्त उन को बलात्कार मुसलमान बनाने की घृणित क्रिया भी की है। इस को गवर्नमेंट और कांग्रेस दोनों की ओर से स्वीकार किया गया है और अब उस के विषय में कोई संदेह नहीं रहा। हां, मतभेद इस बात पर है कि कितने हिन्दुओं पर अत्याचार किया गया है। कोई कहते हैं कि ३ हज़ार हिन्दू ज़ोर से मुसलमान बनाए गए हैं—कोई कहते हैं कि एक हज़ार और कोई ५०० बताते हैं। तादाद चाहे कुछ हो परन्तु इस बात से इनकार नहीं हो सकता कि मोपलों ने हिन्दुओं को बलात्कर मुसलमान बनाया है।

अब प्रश्न यह है कि इन सताये हुए हिन्दुओं का क्या बनेगा। जहां तक मुसलमान लीडरों का सम्बन्ध है उन्होंने घोषणा करदी है कि मोपलों का यह घृणित कार्य्य इस्लाम के ख़िलाफ़ है। बात तो ठीक है परन्तु इतना कह देने से इतने भारी नुक़सान की क्षति पूर्त्ति नहीं हो सकती। हमारे मुसलमान भाइयों को ज़रा और आगे जाना चाहिये और घोषणा कर के भारी तादाद में मुसलमानों के भीतर ऐसी विज्ञप्ति बांटनी चाहिये कि जो हिन्दू ज़बरदस्ती मुसलमान बनाए गए हैं वह मुसलमान नहीं हैं और कोई मुसलमान बिरादरी उन को अपने भीतर नहीं रख सकती और यदि वह फिर हिन्दू बनना चाहें तो उस में कोई मुसलमान रुकावट ही नहीं डालेगा प्रत्युत उनको हिन्दू मत में जाने के लिये सहायता देगा।

हिन्दू लीडरों का यह कर्त्तव्य है कि वह खुले तौर पर ऐसे हिन्दुओं के लिये फिर हिन्दू धर्म में वापिस ले लेने की घोषणा

कर दें और हिन्दू बिरादरी उन के लिए सुगमताएं प्रस्तुत करें। यह आनन्द का विषय है कि कई हिन्दू लीडरों और शंकराचार्य्य मठाधीश ने भी उन की वापिसी की आज्ञा देकर हिन्दू धर्म के दृढ़ होने का प्रमाण दिया है और यदि इस समय हिन्दुओं ने सम्मिलित उद्योग से हिन्दुओं को अपनी गोद में वापिस ले लिया तो भविष्य में लोगों को इस बात का साहस न होगा कि वे हिंदुओं को उन के धर्म से पतित कर सकें क्योंकि वे समझेंगे कि हिंदू भाई अपने भाइयों की हर प्रकार की सहायता के लिये तैयार रहते हैं।

मालाबार में आवश्यकता बहुत अधिक है और लोग कुरीतियों के बंधनों में जकड़े हुए हैं, इसलिये सम्भव है कि पीड़ित हिंदुओं को अपनी गोद में लेने में उन की बिरादरियां कुछ रुकावटें डालें; इसलिए आवश्यक है कि संस्कृत और अंग्रेज़ी के कुछ विद्वान धर्महितैषी मार्शल ला के हटने के पीछे तुरन्त मालाबार पहुंच जायं और वहां पहुंच कर जहां पीड़ित हिन्दुओं को तसल्ली दें वहां उनकी बिरादरी के लोगों को भी उनके कर्त्तव्य से अवगत करें ताकि वह बिरादरियां अपने पीड़ित भाइयों को छाती से लगाने के लिए तैयार हो जायँ। यह केवल इसीलिए आवश्यक नहीं कि मुसलमान हुए हिन्दुओं को वापिस लिया जा सके वरन् इसलिए आवश्यक है कि विरोधी लोगों को मालूम होसके कि इस प्रकार हिन्दुओं को ज़बरदस्ती यवन बनाना सर्वथा निरर्थक है। यदि हमने इस अवसर पर अपने कर्त्तव्य को पूरा न किया और अपने पीड़ित भाइयों को पूरे सन्मान और पूर्ण सहानुभूति से अपनी गोद में वापिस न ले लिया तो मूर्ख मुसलमानों और ईसाइयों को भविष्य में और भी साहस हो जायगा कि वह जहां और जब चाहें ज़बरदस्ती हमारे भाइयों को मुसलमान या ईसाई बनालें;

इसलिए आपको स्पष्ट कर देना चाहिये कि इस विषय में हिन्दू पूरे चौकस हैं और इस प्रकार के दमन और अत्याचारों से हमारे विरोधियों का उद्देश कभी पूरा नहीं हो सकता।

मोपलों के जुल्म व अत्याचार और हिन्दुओं के जबरदस्ती मुसलमान बनाए जाने की खबरें जब पञ्जाब में पहुंचीं तो अनुभवी पुरुषों को महा दुःख हुआ और कतिपय आर्य्य भाइयों के पत्र सितम्बर के पहिले ही सप्ताह में आ. प्रा. प्र. नि. सभा के पास पहुंचे। परन्तु उचित समझा गया कि प्रथम इसके कि कोई कार्य्यवाही की जाय शिमले पहुंच कर बाज़ मदरासी भाइयों से इस विषय में परामर्श किया जाये। अतः शिमला आ० स० के वार्षिकोत्सव के अवसर पर यह परामर्श लिया गया; और फिर इसी विषय को आ. प्रा. प्र. नि. सभा के सन्मुख रक्खा गया, जिसने फैसला किया कि इस विषय में परिश्रम से काम किया जाय और इस काम के लिए एक फंड खोला जाय, जिससे संस्कृत व अंग्रेज़ी के ऐसे विद्वान् मालाबार भेजे जांय जो पीड़ित भाइयों को हिन्दू धर्म्म में वापस लाने के लिए लोगों के भीतर भाव उत्पन्न करें, जिस से हमारे पीड़ित भाई निज धर्म्म में वापस आने के लिये तैयार हो जांय, और फिर विधि पूर्वक उन्हें हिन्दू धर्म्म में सम्मिलित कर लिया जाय।

ऐसे पीड़ित हिन्दू जो धर्म्मभ्रष्ट किये गये हैं, और जिनके घर नष्ट कर दिए गए हैं, उनको यथा सामर्थ्य सहायता दी जाय और यदि फंड पर्य्याप्त हो जाय तो अन्य दुखिया हिन्दुओं को भी सहायता दी जाय।

मैं अपने हिन्दू भाइयों से अपील करता हूं जिनके हृदयों में अपने पवित्र धर्म्म के लिये श्रद्धा और प्रेम है, और जो अपने धर्म्म की लाज रखने के लिये अपने भीतर कोई भाव रखते हैं,

ऐसे आवश्यक समय पर जब कि उनके भाइयों के धर्म्म पर ज़ुल्म व अत्याचार किए गये हैं, अपनी सहायता का हाथ आगे बढ़ावें, और मेरे नाम पर धन भेज कर हमें इस योग्य बनावें कि हम अपने हिन्दू भाइयों की सहायता शीघ्र से शीघ्र कर सकें।
(हंसराज प्रधान आ० प्रा० प्र० नि० सभा अनारकली लाहौर)

कार्य्य का आरम्भ— सब से पहिले पं० ऋषिराम जी बी० ए० को मालाबार भेजा गया, ताकि वह वहां के हालात को देख कर उसके अनुसार कार्य्य आरम्भ करें। अतः पं० जी ने हालात का पूरा ज्ञान प्राप्त करने के पीछे कल्लाई में सहायक डिपो खोल दिया।

धीरे २ सहायता लेने वालों की संख्या बढ़ने लगी। यहां तक कि जनवरी १९२२ में १७०० तक पहुंच गई।

काम में सहायता लेने के लिए पण्डित जी ने कुछ लोकल स्वयम्-सेवक भी रख लिए, जो पूरी लग्न से काम करते रहे।

फरवरी १९२२ ई० के प्रथम सप्ताह में लाहौर से २ और स्वयम्-सेवक अर्थात् आर्यगजट के सम्पादक श्रीमान् लाला खुशहाल-चंद जी खुरसंद और श्रीमान् पं० मस्तानचंद जी बी० ए० भेजे गए।

इधर फरवरी के अन्तिम दिन सेंट्रल मालाबार रिलीफ़ कमेटी और कांगरेस कमेटी ने अपने सहायक कैम्प बन्द कर दिए। अब लोगों के दल के दल सहायता पाने के लिए आर्य्य कैम्प की ओर आने लगे और आवश्यकता देखकर कालीकट से ८ मील के अन्तर पर माईनाड में एक और डिपो पं० मस्तानचंद जी के आधीन खोल दिया गया, जिसके हालात निम्नलिखित पंक्तियों से ज्ञात हो सकते हैं—

मालाबार के पीड़ित हिन्दुओं के लिए आर्य्यसमाज का डिपो।

कालीकट मालाबार से ८ मील के अन्तर पर पहाड़ियों से घिरा हुआ एक स्थान माईनाड है। यहां से कुछ मील के अन्तर पर पुत्तूर ऐमशम में मोपलों ने.................................. बड़े भारी अत्याचार किए और इस ऐमशम और उसके आसपास के दूसरे स्थानों से भाग कर आए हुए बच्चे और स्त्रियां आज कल माईनाड के इर्द गिर्द पड़ी हैं।

आर्य्यसमाज ने इन भूख से मरती हुई स्त्रियों और बच्चों के लिए एक डिपो पं० मस्तानचंद जी बी० ए० के आधीन खोल रक्खा है। मैं कल इस डिपो को देखने के लिए गया।

एक भारी मण्डप बनाया गया है, जिसको चटाइयों से छाया गया है। इस मंडुवे के नीचे ४ हज़ार स्त्रियां और बच्चे जो एक हज़ार एक सौ परिवारों से सम्बन्ध रखते हैं, रहते हैं। इनमें कई बड़ी वृद्ध स्त्रियां हैं, बहुत सी युवा स्त्रियां हैं और बहुत सी गर्भिणी स्त्रियां हैं। ऐसी माताएं भी हैं जिनकी गोदियों में १५—१५ दिन के नन्हें बालक हैं। बच्चों में कुछ ऐसे बच्चे भी हैं जो आज से ६ मास पहिले लखपतियों के तारे थे, परन्तु आज अनाथ हो गए हैं। एक ८ वर्ष के लड़के को मैंने देखा जिसका पिता लखपती था। इस विद्रोह में उनकी सम्पत्ति लूटी गई, घर जला दिया गया। विपद् के मारे जगह २ धक्के खाने लगे। इसी दशा में पिता मर गया, और माता अभी तक मृतप्रायः अवस्था में पड़ी है। बेचारा दीन लड़का नहीं जानता कि क्या करे।

इन स्त्रियां और बच्चों में बहुतेरे तो ऐसे हैं जिनके घर जलाये जा चुके हैं और अब यदि वे अपने घर को जावें भी तो न तो

उनके लिए वहां रहने को स्थान है और न खाने को कोई वस्तु। कठिनता तो यह है कि अभी तक कोई हिन्दू अपने जले हुए घर के पास भी जाने का साहस नहीं रखता। कालीकट, अरनाड और वलवानाड ताल्लुकों के कई भाग अभी तक अरक्षित हैं, यद्यपि सरकारी सूचनाएं बतलाती हैं कि सब इलाके सुरक्षित हो चुके हैं। परन्तु सत्य यह है कि जो लोग इन ज़िलों में गए, वे नुक़सान उठाकर फिर वापस भाग आए।

ऐसी दशा में नहीं कहा जा सकता कि हमें कब तक इन लोगों को सहायता देने की आवश्यकता रहेगी। इस बात को सन्मुख रखकर और यह देख कर कि हमारे मालाबार फंड में धन बहुत थोड़ा है हम इन स्त्रियों और बच्चों को चावल बहुत ही थोड़े दे रहे हैं। अर्थात् एक स्त्री को दिन भर के लिये पाव-भर बच्चे को केवल आधपाव चावल देते हैं। यदि हमारे इस फंड में धन पर्य्याप्त आ जाये तो चावल अधिक बढ़ाये जा सकते हैं। ऐसी भारी संख्या में भूखी बैठी हुई स्त्रियों और बच्चों को देख कर तुरन्त यह ख्याल आता है कि ऐसे उच्च घरानों की स्त्रियों को इस दु:ख के समय सहायता देना सचमुच सात्विक दान है। इनसे बढ़कर और अधिक दीन, दुखिया, लाचार और कौन होगा? जिनका सब कुछ लुट गया, जिनमें से बहुतों के अपने माता, पिता, पति और नौजवान पुत्र छूट गए उनसे बढ़कर दुखिया और कौन होगा, कि ऐसी स्त्रियों को अब भर चावलों के लिए यहां आना पड़ा है।

इन ४ हज़ार स्त्रियों और बच्चों के अतिरिक्त हमारे काली-कट डिपो से अब २ हज़ार स्त्री, पुरुष, बच्चे प्रति दिन सहायता पा रहे हैं। वहां पर चावल स्त्रियों और पुरुषों को आध २ सेर और बच्चों को पाव २ भर रोज दिये जाते हैं। ऐसा समझिये

कि इस समय पंजाब और संयुक्त प्रान्त के दानी हिन्दू आर्य भाई और बहिनों की बदौलत मालाबार के ६ हज़ार बच्चे, स्त्रियां और पुरुष अपनी भूख की अग्नि को मिटा रहे हैं। परन्तु कठिनता यह है कि दिन प्रतिदिन इन लोगों की संख्या बढ़ रही है। इसलिये आप लोगों से प्रार्थना है कि आप एक बार फिर इन बच्चों, स्त्रियों और पुरुषों की पुकार को सुनें और जो भी आप दे सकते हों वह दान देकर इनके दुःख को कम करने का यत्न करें।

रुपया निम्नलिखित पते पर भेजना चाहिए:—

"महात्मा हंसराज प्रधान, आर्य्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा अनारकली, लाहौर।"

शुद्धि का काम—इस सहायता सम्बन्धी काम के साथ साथ शुद्धि का काम भी बराबर होता था। सारे इलाके में यह प्रसिद्ध हो चुका था कि आर्य्यसमाज के लोग जबरन मुसलमान हुए हिन्दुओं को विशेष रूप से सहायता देते हैं; परन्तु फिर भी ऐसी खबरें बराबर आती रहती थीं कि मालाबार के भीतरी इलाकों में बहुत से ऐसे हिन्दू हैं जो अब तक मोपला भेष में रहते हैं और जान माल का भय उन्हें हिन्दू बनने से रोकता है। इस बात के लिये आवश्यकता थी कि कोई मनुष्य भीतरी इलाकों में जा कर उनका पता ले। अतः हमारे उत्साही वीर लाला खुशहालचन्द खुरसन्द ने यह काम अपने कंधों पर लिया और भीतरी इलाके में दौरा करके ऐसे लोगों को क़ालीकट पहुँचने की उन्होंने प्रेरणा की। उनके परिश्रम का फल यह हुआ कि बहुत से लोग हिन्दू बनने के लिये कालीकट पहुँच गये। १५ मई से पहिले दो हज़ार दो सौ मुसलमान हुए हिन्दू फिर अपने धर्म में ग्रहण किए जा चुके थे। जून और जुलाई के मासों में

४०० और जबरदस्ती मुसलमान हुए हिन्दू अपने धर्म में सम्मिलित किये गये। इस प्रकार अब तक २६०० हिन्दुओं को फिर अपने धर्म में मिलाया गया है और अभी तक यह उद्योग लगातार जारी है।

भीतरी इलाके की दशा—भीतरी इलाके का भ्रमण करने से लाला खुशहालचन्द जी को जो बातें मालूम हुई हैं, वे नीचे अङ्कित की जाती हैं।

मालाबार के भीतरी इलाके के आंखों देखे हालात।

श्रीमान् ला० खुशहालचन्द जी खुरसन्द लिखित

मालाबार के भीतरी भागों में—मालाबार में रेलवे बहुत थोड़ी हैं सड़कें भी अधिक नहीं। अधिकतर जंगल हैं, पहाड़ियां हैं, नदियां हैं, और उजाड़ इलाके हैं। इन जंगलों और पहाड़ियों के बीच घिरे हुए इलाकों में ही विद्रोह का अधिकांश जोर रहा, और यहीं मोपलों ने हिन्दुओं को जान बूझ कर सर्वथा तबाह किया। एक अपरिचित जब तक इन इलाकों को अपनी आंखों देख न ले तब तक न मालाबार के विषय में वह अपनी ठीक सम्मति बना सकता है, और न उसे मोपला विद्रोह की समझ आ सकती है। इसलिए मैं एक ट्रावनकोरी महाशय वैंकटाचलम् आयर को अपने साथ लेकर मालाबार के भीतरी इलाकों में गया। हमें बतलाया गया कि कुछ भीतरी इलाके अभी सुरक्षित नहीं। वहां जाना मानों अपने आपको संकट में डालना है। परन्तु हमें कई प्रकार से इस बात का पता लग गया था कि

इन इलाकों में अब तक बहुत से हिन्दू जिनको ज़बरदस्ती मोपला बनाया गया था, मोपला रूप में रहते हैं; इसलिए उन तक पहुँचने, उनकी शुद्धि करने और उनकी सहायता करने के लिये हमारा वहां जाना आवश्यक था।

कालीकट ताल्लुके में—पहिले मैं अकेला ही कालीकट से पूर्व की ओर २० मील पैदल चल चुकने के पश्चात् पुत्तूर ऐमशम में पहुँचा। यह वही परगना है, जहां हिन्दुओं की लाशों से ३ कुए भरे गए थे। १४ मील तक सड़क है और उसके पीछे एक घना जंगल आरम्भ होता है। जंगल में घुसते ही कुडवाई ऐमशम आरम्भ हो जाता है। यह सारा परगना बरबाद हुआ है। सब हिन्दू घर जले हुए दिखाई दिये। जो घर मोपलों के अत्याचार से बच रहे थे, वह ख़ाली होने के कारण और भी भयानक मालूम होते थे।

घने बन के भीतर—घने बन के भीतर घुस कर ५ मील चलने के पश्चात् मैं उस स्थान पर पहुँच गया जहां लाशों से भरे कूप बतलाए जाते थे, इस जगह मोपले कुछ महीनों तक शासन करते रहे। अब मैं ख़ास उस मकान में जिसे "मदूदूअम्ना इल्लम" कहते हैं, जा पहुँचा। यह घर एक नम्बोदरी ब्राह्मण का था, जिस पर मोपलों ने अधिकार कर लिया था, इसके हाते में दो कूप मैंने देखे। एक कूप इस घर से २ फ़रलांग के फ़ासले पर था। जो हिन्दू मुसलमान होने से इंकार करते थे उनको इस कूप पर लाया जाता था, जब मैं इस कूप के पास पहुँचा तो मैंने देखा कि कुए में उन धर्म्म के लिए मरने वालों की लाशें मौजूद नहीं हैं, बल्कि खोपड़ियां हैं, पिंजर हैं,

टांगों और भुजाओं की हड्डियां हैं। जब मैंने इन चीज़ों को देखा तो मेरा रोमांच हो गया। मैंने उस निर्जन बन को देखा, उस भयानक कूप को देखा, और विचारा कि वह समय कैसा भयानक होगा जब एक जल्लाद हाथ में तलवार लिए हुए यहां खड़ा होगा और एक २ करके उन असहाय और बेवश हिन्दुओं को इसलिये क़तल कर रहा होगा कि वे अपने ही धर्म्म में रहने पर हठ करते थे। वास्तव में मेरे रोंगटे खड़े होगए, और मैं वहां से हट कर दूसरे कूप की ओर जो इस कूप से २ फ़र्लांग की दूरी पर होगा, गया। जंगल यहां पहुंच कर अधिक घना होगया है जल्दी ही पत्थर का एक छोटा सा मन्दिर आया जो नाग देवता का मन्दिर कहाता है। इसकी मूर्त्ति तोड़ दी गई थी। इसके पास एक कूप है। यह वही कूप है जिसमें से एक हिन्दू नायर बच कर निकल आया था और उसने हिन्दुओं के भीषण हत्याकांड की कहानी सुनाई थी। जो बातें उसने बयान की थीं उन्हें सर्वथा सत्य पाया। यह कुआँ भी मनुष्यों की हड्डियों से आधा भरा हुआ था।

तीसरे कुएं को बहुतेरा ढूंढ़ा परन्तु मेरे गाईड को भी उस का पता न था; इसलिए मैं उसे देख न सका।

यहां से मैं एक और मार्ग से होता हुआ पुत्तूर ऐमशाम के आन्तरिक भागों को देखता हुआ वापिस आया। पुत्तूर ऐमशाम इस समय एक उजाड़ स्थान है जिसमें जले हुए घर हैं, तबाह किये हुए नारियल के वृत्त हैं, और फ़सलों से खाली पड़ी हुई ज़मीनें हैं। इस सारे सफर में सिवाय ३ मोपला स्त्रियों के मुझे और कोई मनुष्य दिखाई नहीं दिया।

आध मील के फ़ासले से मुझे एक पहाड़ी दिखाई गई जिस पर अबूबकर १०० विद्रोहियों समेत अब तक छिपा हुआ है,

और पकड़ा नहीं गया। इस कालीकट ताल्लुके में मोपले केवल २९ प्रति सैकड़ा हैं, परन्तु हिन्दू मोतियों की तरह बिखरे हुए हैं और शोक कि उनका परस्पर कोई मेल नहीं है।

अरनाड ताल्लुके में—इधर से निबट कर और ट्रावनकोरी महाशय को साथ लेकर मैं अरनाड ताल्लुके में चला गया। यह ताल्लुका बहुत ही अरक्षित है। इस जगह हिन्दुओं की बस्ती २५ प्रति सैकड़ा से अधिक मालूम नहीं होती। इसका क्षेत्रफल ९९७ वर्ग मील है जिसका तीसरा भाग बनों, पहाड़ों और ऊजड़ भूमि से भरा हुआ है। यही वह इलाका है जिसमें १८३६ ई० से १८५३ ई० तक १८ सालों के भीतर २२ बार मोपलों ने विद्रोह किया है। इस इलाके में वे थंगल कि जो मुसलमानों के सब से बड़े लीडर माने जाते हैं, रहते हैं। सब से उत्तम और चुना हुआ थंगल मेम्बरम का कहलाता है जो कालीकट से २१ मील के अन्तर पर है। इस थंगल का शरीर बड़ा पवित्र समझा जाता है, वह जहां पांव रख दे उसकी मिट्टी पवित्र मानी जाती है, मोपले उसके पांव छूकर शपथ खाते हैं।

एक बार गवर्नमेन्ट ने यहां के थंगल का ज़ोर बढ़ते देखा तो उसे क़ैद कर लेना चाहा। यह १८५२ की बात है। १७ फ़रवरी को इस थंगल की गिरफ्तारी का हुक्म निकला जिसकी ख़बर मोपलों को मिल गई। उसी दिन १२ हज़ार मोपले वहां जमा होगये और मरने मारने के लिये तैयार होकर बैठ गए। यह देख कर गवर्नमेंट ने उसके पकड़ने का विचार छोड़ दिया, और किसी अन्य प्रकार से उसे अरब की ओर जाने के लिये राज़ी कर लिया। इसी प्रकार के बहुत से थंगल यहां रहते हैं, जिनके विषय में मोपलों का विचार है, कि उन्हें विशेष दिव्य शक्तियां प्राप्त हैं।

थंगल की आज्ञा उनके लिये आयत और थंगल का इशारा उनके लिए वही (आकाशवाणी) है। इसी ताल्लुके में विद्रोहियों ने सब से बढ़ कर ऊधम मचाया। यहां पर सैकड़ों नहीं वरन् हज़ारों हिन्दू ज़ोर से मुसलमान बनाए गए। यहां सरकारी सेना के साथ मोपले खूब जान तोड़ कर लड़े। हमें कहा गया कि हम इस ताल्लुके में दाख़िल न हों, विशेष कर २ परगने अब तक भयानक बने हुए हैं। उनमें जाने के लिए कोई भी तैयार नहीं होता था। इन्हीं परगनों में अधिकतर ज़बरदस्ती मुसलमान हुए हिन्दू रहते थे; इसलिये वहां जाना आवश्यक समझ कर हम वहां ४ अप्रेल को पहुंच गए और सब से पहिले बैंगरा ऐमशम में पहुंचे। इस जगह हिन्दुओं की बस्ती १० प्रति सैकड़ा से अधिक नहीं। ७० हिन्दुओं को इस ऐमशम में मुसलमान बनाया गया और ३५ को बध कर दिया गया।

एक अनाथ कन्या—इस जगह हमने एक ७ वर्ष की अनाथ कन्या देखी। उसके एक सम्बन्धी ने रो २ कर उस कन्या की कथा सुनाई। विद्रोह के आरम्भ में अपने प्राण बचाने के लिये एक हिन्दू परिवार भागता हुआ पुलम नदी के किनारे पहुंचा। अभी यह परिवार पार होना ही चाहता था कि मोपलों का एक जत्था पहुंच गया और पहुंचते ही समूह ने हत्याकांड आरम्भ कर दिया। इस कन्या का पिता मारा गया, माता मारी गई और २ जवान भाई भी बध किये गए। एक मास की छोटी सी कन्या को भी क़त्ल किया गया। यह ७ वर्ष की कन्या एक वृक्ष की आड़ में छिप रही और कई दिन तक भूखी पियासी रहने के पीछे फिर अपने घर लाई गई। अब इस की पालना करने वाला कोई नहीं है। मैंने उस लड़की के लिये १) रुपया दिया ताकि वह आर्य्यसमाज कालीकट में पहुंचा दी जाये।

एक और पीड़ित कन्या—बैंगरा ऐमशम में देहाती मुनसिफ़ के घर के निकट एक और मकान देखा जहां एक नायर कन्या को तीन मोपलों ने क़ैद कर रक्खा था। यह कन्या नानम्बरा ऐमशम से ज़बरदस्ती लाई गई थी। उस के दो भाइयों का बध किया गया। यह लड़की पलीकुल नारायण नायर की है। उसे बलात् मुसलमान बनाया गया और तीन मुसलमानों के पहरे में रक्खा गया। उस का छुटकारा तब हुआ जब फौज वहां पहुंची। अब यह कन्या अपने माता पिता के साथ टरिचूर में रहती है।

इस प्रकार कई हृदय विदारक दृश्य दिखाई दिये। कदाचित ही कोई हिन्दू घर जलने से बचा होगा मन्दिर तो एक भी ऐसा नहीं देखा गया जिसे सर्वथा नष्ट न कर दिया गया हो। बैंगरा ऐमशम के पीछे हम दूसरे ऐमशामों में गये। इस प्रकार हमने १८ परगने देखे, जहां अब भी बहुत से हिन्दू मोपला वेष् में रहते हैं। इन सब लोगों की संख्या ५००० से कम न होगी।

शुद्धि का काम--यह देखकर हमने ख्याल किया कि यहां शुद्धि का काम किया जावे। अतः अगले दिन जब हम वैलीमुक ऐमशम गए, तो वहां एक हिन्दू कन्या मोपला भेष में देखी। उसके घर पहुंचे और उससे पूछा क्या तुम हिन्दू बनना चाहती हो, वह कन्या हैरान होकर हमारी ओर देखने लगी। उसने सोचा कहीं यह मोपले न हों और मुझे मारने न आए हों। जब उसे निश्चय हुआ कि हम हिन्दू हैं तो उस की आंखों से अश्रुधारा बहने लगी। हमने कहा कि यदि तुम हिन्दू बनना चाहती हो तो मोपला वस्त्र उतार दो। वह बेचारी तो पहिले ही इस बात की इच्छुक थी झट मोपला जाकट उतारने लग गई और

जब उसे उतारने में कुछ देर लगी तो उस ने उसे फाड़कर फेंक दिया, और हमने उसे हिन्दू वस्त्र वेद मन्त्र पढ़ते हुए पहिना दिये।

इसी प्रकार से कुडवायूर ऐमशम में एक स्त्री की शुद्धि की गई। जब हम शाम को तिरुरङ्गाड़ी पहुंचे और वहां के मजिस्ट्रेट को पता लगा कि हम इस प्रकार शुद्धि का पवित्र काम कर रहे हैं तो उसने बुलाकर कहा कि आपको मोपले क़तल कर देंगे। आप किसी इलाके में न जांय। हमने उसके कथन की परवाह न की। जब उसने देखा कि हम भीतरी विभागों में जाने से नहीं रुकेंगे, तो कहने लगा कि अच्छा, भीतरी इलाके में शुद्धि का काम न करो, वरन् मुसलमान हुए लोगों को कालीकट ले जाकर शुद्ध करलो, क्योंकि भीतरी इलाके में शुद्धि का काम आपके लिए और उनके लिए भी खतरनाक है यह बात हमने मान ली और फिर वहां ऐसे लोगों की सूची तैयार करने लगे।

२ हज़ार की शुद्धि—इन इलाकों में घूम फिर कर और जांच करने के पीछे मेरा अनुमान है कि मोपलों ने लगभग ३ हज़ार हिन्दुओं को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया। इन में से लगभग १ हज़ार इस समय हमारे डिपो से सहायता पा रहे हैं, और शुद्ध हो चुके हैं, और लगभग १ हज़ार शुद्ध होकर अब अपने घरों में रहते हैं। मैं इन लोगों से भी मिला और उनके हालात पूछे। उनसे उनकी बिरादरी के लोग अच्छा बर्ताव नहीं करते। उनको काम नहीं देते। हां उन्हें खाने पीने की वस्तुएं भी मूल्य पर देने से इन्कार करते हैं और वह बेचारे ज्यों त्यों करके बड़े दुःख से जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसे कई हिन्दुओं को नक़दी बांटी गई। इनके अतिरिक्त अभी एक हज़ार ऐसे हिन्दू हैं जो अब तक मोपलों के भय से उन्हीं के वस्त्र पहिनते हैं और आर्य्यसमाज को अभी उनको शुद्ध करना है।

उनकी सूची तैयार करने के लिए यत्न हो रहा है, सफलता होने पर सूचना दी जायगी।

शुद्ध हुए हिन्दुओं के साथ हिन्दुओं का बर्ताव– मैंने बतलाया कि इन शुद्ध हुए हिन्दुओं के साथ मोपले अच्छा बर्ताव ही नहीं करते बल्कि कई जगहों में मुझे यहां तक कहा गया कि मोपले कहते हैं "हिन्दुओ ! ठहरो रमज़ान आलेने दो, बरसात आरम्भ हो जाने दो। फिर हम देखेंगे कि तुम हमारे पंजे से भाग कर कहां जाते हो", परन्तु इसका जिकर छोड़ दीजिये। रोना यह है कि अभी अपने ही हिन्दू भाई इन लोगों के साथ अच्छा बर्ताव नहीं करते। मुझे बतलाया गया कि तिरुरङ्गाड़ी में एक शुद्ध हुआ नायर एक हिन्दू तालाब में नहाने के लिये गया, इस पर नायर भाइयों ने शोर मचाया कि तालाब अपवित्र हो गया है। बेचारे पर मुक़दमा चलाया गया भला हो मजिस्ट्रेट का जिसने नायर के पक्ष में फैसला दिया; परन्तु शोक है कि बिरादरी अब भी उसे तंग करती है। मालाबार में सब जगह यही दशा नहीं है, प्रायः बिरादरियों ने अपने पीड़ित भाइयों को अपनी छाती से लगाया है; परन्तु कुछ स्थानों पर हिन्दुओं का बर्ताव अत्यन्त घृणित है।

बाग़ी मोपलों की हाईकोर्ट में–इस दौरे में मुझे उस परगने में भी जाने का अवसर मिला जिसका नाम कन्ना-मंगलम् है, और जिसके विषय में कहा गया कि अभी सरकारी सेना ने उस पर पूरा अधिकार नहीं किया। परन्तु यह मालूम होने पर कि वहां बहुत अधिक संख्या में ज़ोर से मुसलमान बनाये हुए हिन्दू रहते हैं हम वहां पहुंचे। सचमुच यहां १२ कुटुम्ब ऐसे हिन्दुओं के देखे गए जो अभी तक मोपला भेष में

रहते हैं। वास्तव में अरनाड ताल्लुके के एक बड़े विभाग के उपद्रव का यह विशेष स्थान था। यह सारा परगना पहाड़ों और जंगलों से भरा है। इसमें अधिकारी का घर एक क़िला है जो टीपू सुलतान के आक्रमण से पहिले नायरों ने बनाया था। इसी पर विद्रोही मोपलों ने कब्ज़ा कर लिया और वहां अपनी हाई-कोर्ट स्थापित कर ली जिसमें ३ थंगल जज बन कर बैठते थे और आस पास के परगनों से हिन्दुओं को पकड़ कर लाते थे और क़तल करते थे। इस क़िले में एक मंदिर भी है। इस मन्दिर के भीतर जाकर हमने देखा कि हिन्दुओं की बोटियों का ढेर लगा हुआ है। इस जगह हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की सारी विधि पूरी की जाती थीं।

इस क़िले में मोपलों पर सरकारी सेना ने हमला किया, और कई घण्टों तक युद्ध होता रहा। २८ मोपले मारे गए, सरकारी फौज के आदमी भी कुछ मारे गए। क़िले और मन्दिर पर मैशी-नगन के बहुत से चिन्ह दिखाई देते हैं, और मुर्दों का कृष्ण वर्ण रक्त भी पड़ा दिखाई देता था।

एक विद्रोही मोपला जज से वार्तालाप—जो तीन विद्रोही थंगल यहां हकूमत करते थे उनमें से दो पकड़े जा चुके हैं, परन्तु एक अभी तक पकड़ा नहीं गया, उसका नाम अबदुल्ला कोए थंगल है। यह कन्ना मंगलम् ऐमशम का निवासी है, इसने बड़ी निर्भीकता से यह बात हम से कही, कि हमने पूरे ४ मास यहां हकूमत की है, और मुझ अकेले ने ही २० हिन्दुओं को मुसलमान बनाया है।

एक ब्राह्मण का नष्ट हुआ पुस्तकालय—इस ऐम-शम् में एक नम्बोदरी ब्राह्मण भी रहता था। हमने उसका बड़ा

भारी घर देखा जो लुट चुका था, उसमें उसका एक पुस्तकालय भी था, मोपलों ने उस को सर्वथा विध्वंस कर दिया। संस्कृत की बहुत प्राचीन पुस्तकें उसके भीतर थीं, जो ताड़ के पत्तों पर लिखी हुई थीं। मैंने बहुत सी बिखरी हुई पुस्तकों के फटे हुए पत्र देखे, उनमें से एक पत्र नमूनावत् अपने साथ ले लिया। इस नष्ट हुए पुस्तकालय को देख कर मेरे हृदय पर बड़ी भारी चोट लगी। न मालूम कितनी पुरानी और दुर्लभ पुस्तकें नष्ट कर दी गई।

इलाके की दशा- इलाका सुन्दर है; बन सुन्दर है, पहाड़ियां सुहावनी हैं, घर उत्तम स्थानों में बने हुए हैं। ऐसा मालूम होता है कि यह कोई ऋषि भूमि है; परन्तु शोक कि मोपलों के पैशाचिक भाव ने इस सब सौन्दर्य को नष्ट कर दिया है, अब यह सारा इलाका एक हिन्दू के लिये भयप्रद स्थान है जहां न उसका धन सुरक्षित रह सकता है और न घर, न इज्जत, न बड़ाई सुरक्षित रह सकती है। हिन्दू लोग डरते और कांपते हुए यहां रहते हैं। उनमें परस्पर कोई मेल नहीं, कोई सहानुभूति नहीं, और कोई जीवन नहीं, उनकी रस्मों ने, उनके भ्रमों ने, उनकी छूतछात ने उन्हें एक दूसरे से इतना फाड़ रक्खा है कि वहां का प्रत्येक हिन्दू अपने आपको दीनहीन लाचार और असहाय पाता है। आर्य्यसमाज का काम उनको एक माला में पिरोना है, और रिलीफ़ व शुद्धि के अतिरिक्त इस जगह आर्य्य समाज ने हिन्दुओं को संगठित करने का विशेष उद्योग आरम्भ कर दिया है।

सहायक डिपुओं का काम—कालीकट और माईनाड इन दोनों डिपुओं में ६ हजार पुरुष, स्त्रियां और बच्चे दैनिक सहायता पाते रहे, परन्तु अप्रेल १९२२ के अन्त में माईनाड

का डिपो बन्द कर दिया गया, और स्त्रियों व बच्चों को एक २ सप्ताह और कुछ को दो सप्ताह के चावल देकर उनको अपने २ घर जाने की प्रेरणा की गई। मई से केवल एक ही डिपो कालीकट में रह गया, जिस में दो हज़ार से अधिक लोग सहायता पा रहे हैं।

मई के तीसरे सप्ताह में महता सावनमल जी भी कालीकट पहुंच गये, क्योंकि पं० ऋषिराम जी को पञ्जाब लौट आना था।

मई के अन्त में यह आवश्यकता प्रतीत हुई कि तिरुरङ्गाड़ी में भी एक डिपो खोल दिया जावे अतः वहां भी एक डिपो खोल दिया गया, फिर जुलाई में ३ और कैम्प खोले गये, क्योंकि दुर्भिक्ष सारे इलाके के भीतर फैलता हुआ दिखाई देता था, और अब जब कि यह रिपोर्ट लिखी जा रही है आर्य्यसमाज के ५ सहायक डिपो सहायता का काम कर रहे हैं, और लगभग दस हज़ार स्त्री, पुरुष और बच्चे सहायता पा रहे हैं।

यह दुर्भिक्ष इलाके में फसल न हो सकने के कारण है, इसलिये भूखों को बचाने के लिये अधिक सहायक डिपो खोलने आवश्यक थे।

प्रोफेसर ज्ञानचन्द एम० ए० भी जून के तीसरे सप्ताह में कालीकट पहुंच गये ताकि सहायता का कार्य्य अच्छी तरह हो सके। इनके अतिरिक्त वहां बहुत से स्वयम्-सेवकों ने भी इस काम में सहायता दी और अब तक दे रहे हैं।

स्थानिक सहायक— मिस्टर श्रीकृष्ण बी० ए० वकील व सम्पादक 'हितवादी' विशेष रूप से धन्यवाद के योग्य हैं जिन्होंने अपना बड़ा मकान कालीकट में डिपो खोलने के लिये मुफ्त दे दिया। इसी प्रकार मि० टी० नारायण बी० ए० विद्यार्थी ला

कालेज ३-४ मास तक बड़े प्रेम और उत्साह से हमारे काम में सहायता देते रहे हैं। महाशय बैंकटाचलम् आयर जो ट्रावनकोर के ब्राह्मण हैं, हमारे काम में सहायता देते रहे। इनके अतिरिक्त और लोग भी सहायता देते रहे।

नोट—जो ५ डिपो मई व जून से लेकर आधे सितम्बर १९२२ तक जारी रहे और जिनका प्रबन्ध करने में प्रोफेसर ज्ञानचन्द एम० ए० और महता सावनमल जी ने बड़ा परिश्रम किया उनके नाम यह हैं:—

(१) तिरुरङ्गाड़ी (२) नीलमबूर (३) तोहूर (४) निरीटक मुकम (यह पहाड़ी स्थान है) (५) कालीकट।

निरीटक मुकम और इसका इलाका वह इलाका है जहां अब तक उन हिन्दुओं की खोपड़ियां बनों में पड़ी दिखाई देती हैं, जिन्हें मोपलों ने बड़ी निर्दयता से बध किया था। दो खोपड़ियां आ० प्रा० प्र० नि० लाहौर के दफ्तर में भी नमूना के तौर पर मौजूद हैं।

(१५-२०-२२)

पीड़ित लोगों के बयानात।

(१)

जुलाई मास की १० तारीख को दोपहर के समय २०, २२ मोपले जो मेरे लिये सर्वथा अपरिचित थे, मुझे मार्ग में जाते मिले। उन्होंने मुझसे कहा कि अब खिलाफ़त का राज्य हो गया है और यह आवश्यक है कि तुम कुरान शरीफ़ को मानो। यदि कुरान शरीफ़ को न मानोगे तो क़तल किये जाओगे।' उन्होंने यह भी कहा कि कुनारा थंगल ने यह आज्ञा दे दी है। मैंने उनसे कहा मुझ बूढ़े मनुष्य को मुसलमान बना कर क्या करोगे मैं तो अब मरने वाला हूँ, लंगड़ा हूँ, मुश्किल से चल सकता हूँ, परन्तु उन्होंने मेरी एक न सुनी और कहने लगे मरने के लिये तयार हो जा। पानी पीना हो तो पीले ताकि फिर तुझे मार दिया जाय। यह कह कर तलवार मियान से निकाल ली। मैं डर गया और कहा "अच्छा, जो आपकी इच्छा हो सो करो" तब वह मुझे साथ ले गये और मेरी चोटी काट कर कुछ पढ़ कर कहा "अब तुम मुसलमान हो, अब जाओ अपने घर रहो" मैं बड़ी मुश्किल से अपने घर पहुँचा, वहां से गिरता पड़ता कालीकट पहुँचा और वहां पहुँच कर हिन्दू बन गया।

निशानी अंगूठा—

केरियाड़त कुनार पन्नीकर पुत्र चन्दू पन्नीकर, आयु ७९ वर्ष. निवासी चीकोड़ एमशम ताल्लुका अरनाड।

(२)

नामः—चलीयत कम्बू, जाति तीया, हिन्दू

(इलाका अरनाड)

मम्मीकुट्टी ६-७ शस्त्रधारी मोपलों के साथ प्रातःकाल ३ बजे मेरे घर आया। उस समय मेरे घर में ३ मर्द, ३ स्त्रियां थीं। हम सबको वह जबरदस्ती पास की मसजिद में ले गये। वहां हमें मार डालने की धमकी दी। मारे डर के हमने मुसलमान बनना स्वीकार कर लिया और अगले दिन प्रतिज्ञानुसार मसजिद में हाजिर हुए। वहां मेरे सारे परिवार को मुसलमान बनाया गया। फिर वह मेरे मन्दिर से सोने चांदी की मूर्त्ति उठा कर ले गये और कहने लगे कि मुसलमान बन जाने के पीछे अब इनकी आवश्यकता नहीं रही। मुसलमान होने के पीछे फिर हमें किसी ने दुःख नहीं दिया।

(कम्बू)

(३)

नाम—प्रेुप्पन, जाति तीया हिन्दू (इलाका अरनाड)

जब हम मोपलों से डरे हुये कालीकट की ओर भाग रहे थे तो कोम्खां कुहीउद्दीन और दूसरे शस्त्रधारी मोपलों ने हमें कैद कर लिया और हमें हमारे ही घरों में बन्द करके बाहर पहरा खड़ा कर दिया। ५ दिन तक यही दशा रही। छठे दिन मंगलत पराप्रम्भी मसजिद में मनोदकोट थंगल ने हम चार आदमियों और ३ स्त्रियों को मुसलमान बना लिया। हम में से ३ की सुन्नत भी कर डाली गई।

(तप्पन)

(४)

नामः—अलत्तयल परमेल चन्दन हिन्दू लोहार

(इलाका अरनाड)

कोरुखां मुहीउद्दीन अपने जत्थे के साथ हमारे घर आया और २ पुरुषों व २ स्त्रियों को तलाडऊप्पू में ले गया। यहां उन्होंने मुझे तलवारें बनाने के लिये लाचार किया, मैंने उनका कहना मान लिया। अगले दिन हमें पराप्रम्भीथंगल के मकान पर ले गये और हमें मुसलमान बना लिया। मैंने मोपलों के लिये ५ तलवारें बनाईं। मुसलमान बनने के पीछे मुझे किसी ने दुःख नहीं दिया। (चन्दन)

(५)

नामः—चम्बायलखुन्टी, जाति तीया हिन्दू (इलाका अरनाड)

कमरत हैदर और उसका जत्था मार्ग में मिल गया जब कि हम कोटकल्ल को जान बचाने के लिये जा रहे थे, उन्होंने हमारी मुश्कें बांध दीं। फिर हमें पराप्रम्भी मसजिद में ले जा कर मुसलमान बनाया। मुसलमान बनाने से पहिले हम को लूट लिया गया। मुसलमान बनाने के पीछे हम को किसी ने दुःख नहीं दिया। हमारी सुन्नत नहीं की गई क्योंकि हमने कहा कि फिर हम तुम्हारा काम करने के अयोग्य हो जायँगे। दो स्त्री, दो पुरुष मुसलमान बनाये गए। (खुन्टी)

(६)

नाम—मूचकल्ल कनुम्बू, जाति तीया हिन्दू।

(इलाका अरनाड)

लगभग १० शस्त्रधारी मोपले दो पहर के समय हमारे घर आये। मैं डर के मारे भाग निकला। परन्तु यह देख कर कि भाग कर भी बच नहीं सकता अपने आप को पकड़वा दिया। वह मुझे मसजिद में ले गये और मुझे मेरी मासी

और उस की दो कन्याओं को मुसलमान बनाया। मेरा परिवार आशा बाहब में था, इसलिये वह मुसलमान होने से बचा रहा।

(मोचकल्ल कम्बू)

(७)

नाम—वेलू पुत्र अपुन तीया, ग्राम परवन नूर ऐमशाम, करनल लूरदेसम (इलाका अरनाड)

विद्रोह आरम्भ हुए अभी थोड़े दिन हुये थे कि मोपले मेरे घर आये। मैं उस समय घर पर न था। मेरी स्त्री से उन्होंने पूछा तो उसने कहा वह बाहर गया हुआ है। २–३ दिन पीछे वह फिर मेरे घर आये और मुझे कहने लगे कि तुम्हें मार डाला जायगा यदि तुम मुसलमान न बनोगे।

जो मोपले उस समय आए उनमें से केवल ३ मेरे ऐमशाम के थे। वे या तो पकड़े जा चुके हैं या मारे जा चुके हैं। उस समय प्राण बचाने के लिये मैंने मुसलमान बनना मान लिया। तब उन्होंने मुझे मोपला टोपी दी। मेरी चोटी काट डाली। मेरी स्त्री व बच्चों को भी मुसलमान बनाया। इस के पीछे कोई कष्ट नहीं दिया। [निशान अंगुष्ट]

(वेलू)

(८)

नाम—तोटीन चातू तीया, ग्राम कपूर ऐमशाम

(ताल्लुका अरनाड)

दिसम्बर मास में प्रातः समय ८ शस्त्रधारी मोपले मेरे घर घुस आये। मैं, मेरा भाई, मेरी स्त्री, और ४ बच्चे उस समय घर में विद्यमान थे। मोपलों ने हम को कहा कि इन तलवारों से तुमको काट डाला जायगा, यदि तुम मुसलमान न

बनोगे। मारे भय के हम उनके साथ हो लिये, और हम को मसज़िद में ले जा कर ज़बरदस्ती मोपला टोपियां पहिना कर, मुसलमान बना लिया गया। हमें कहा गया कि यदि सरकार तुम से पूछे कि तुम कैसे मुसलमान बनाये गये तो कहना कि अपनी इच्छा से बने हैं। माधोकुटी और दूसरे भी हमारे साथ मुसलमान बनाये गये।

(हस्ताक्षर चातू)

(९)

नाम—तोटियन परनगोडन तीया हिन्दू ग्राम करपूमर देशाम

(इलाका अरनाड)

२ दिसम्बर को दिन निकलते ही ८ मोपले मेरे घर आए, मैं और मेरे ४ बच्चे वहां मौजूद थे। मोपलों ने तलवार दिखा कर मुसलमान बनने को कहा। प्राण के भय से हमने मुसलमान बनना स्वीकार कर लिया। मसज़िद में ले जा कर हमारी चोटियां काटी गईं, और मोपला टोपियां पहना दी गईं।

हस्ताक्षर परन गोडन

(१०)

नाम—करुरकुंजुनी जाति आसारी वेली ओरा ऐमशाम

(अरनाड)

वर्चीकम (मलियालमास) में एक मनुष्य जीनमुसलियार और कुछ और मोपले मेरे घर आये और ज़बरदस्ती कन्ना मंगलम ऐमशाम में ले गये। हम सब २२ मनुष्य थे। वहां एक थंगल के आगे हमें खड़ा किया गया। उसने कहा तुम मुसलमान बन जाओ नहीं तो मार दिये जाओगे। हमने प्राण के भय से मुसलमान बनना मान लिया। फिर हमारी चोटियां काटी गईं और

मोपला वस्त्र पहिनाए गए । फिर घर जाने की आज्ञा दी गई । आज हम अपनी इच्छा से फिर हिन्दू बनते हैं । इतनी देर तक हम भय के मारे अपने घर पर ही रहते रहे । आज हम हिन्दू बन गए हैं । आर्य्यसमाज की ओर से हम को सहायता मिल रही है ।

निशान अंगुष्ट

करुर कुंजुनी ग्राम तिरुरङ्गाड़ी लंगाड़ी ।

(११)

नाम—माधो कुटी पुत्री चक्कलम

परम्बत रामन तीया, करपुर देशाम

(ता० अरनाड)

एक दिन जब कि अभी सूर्य्य नहीं निकला था मुहिउद्दीन कुटी बेटा अलीपुरममोता और वीरा मुहिउद्दीन बेटा मउा कंडीनी कम्बू मेरे घर आये और कहने लगे कि जो रुपया तुम्हारे पास है, हमें दे दो मैंने कहा मेरे पास कुछ भी नहीं है अगले दिन वे दोनों आये । उनके हाथों में नई तलवारें थीं । उन्होंने फिर कहा यदि तुम रुपया न दोगी तो मार दी जाओगी मैंने प्राण के भय से ५२) जो मेरे पास थे दे दिये । इसके पीछे उन्होंने मेरा घर ढूंढ़ा और मेरा एक भूषण ले गये, फिर तीसरी बार आए ज़मीन के स्टाम्प भी घर से निकाल कर ले गये । फिर वह ५० शस्त्रधारी मोपलों को लेकर आये और कहा कि हमें हुक्म मिला है कि तुम्हारा बध किया जाय । मैं और मेरी ३ छोटी बहिनें उस समय घर में थीं । ओलागिरा के मोपले भी जत्थे में थे । उन्होंने कहा "यदि तुम मुसलमान बन जाओगे, तो तुम्हें छोड़ दिया जायगा", फिर हमें मोपला वस्त्र पहिना दिये गये ।

हस्ताक्षर माधो कुटी

(१२)

नाम–श्रीमती उन्नीचरामा आयु ३० वर्ष पुत्री कनारू जाति नायर धर्म्मपत्नी नारायण नायर ग्राम पुत्तूर ऐमशम वन्नी।

कौडशम इलाका देशम कालीकट।

जुलाई मास के अन्त में एक दिन मेरा छोटा भाई अकण्डू नायर मांदलस्तम करदूद नदी में नहाने गया। वहां मोपलों ने उसे क़ैद कर लिया। उसकी मुश्कें बांधकर एक नम्बूदरी ब्राह्मण के घर "मद्दूआना" में ले गये जिस पर मोपलों ने कब्ज़ा किया हुआ था। फिर मोपले मेरे घर आये उस समय घर में १० मनुष्य थे, (४ स्त्रियां २ पुरुष, और ४ बच्चे) मोपलों ने आते ही हमको कहा "तुम्हें मुसलमान बनना पड़ेगा नहीं तो तुम सब को मार दिया जायगा", परन्तु हम सब ने मुसलमान बनने से इन्कार कर दिया। इस पर मोपलों ने तलवारें निकाल लीं और हमें ज़बरदस्ती मद्दूआना इल्लम में जहां मेरा भाई था, ले गये। वहां हम को ३ दिन रात लगातार एक कमरे में बन्द रक्खा गया। मोपलों ने हमको चावल खाने के लिये दिये, परन्तु हमने इन्कार कर दिया केवल कच्चे नारियलों पर निर्वाह करते रहे। चौथे दिन हमको नहलाया गया, और मोपलों के वस्त्र पहनाये गये पुरुषों की चोटियां काटी गईं। फिर अपने घर जाने की आज्ञा दी गई। वहां भी कई दिन तक मोपले हमारी ताक करते रहे।

निशान अंगूठा— उन्नीचराम्मा

(१३)

नाम—आईयप्पन कुटी, आयु ४० वर्ष, डींगर ऐमशम (ता० अरनाड)

हम घर के सब ६ मनुष्य हैं। ४ मास हुए कि मोपले हमारे घर आए। उस समय ११ बज चुके थे, वे हमको पदापरम्भ, जो

यहां से ३ मील की दूरी पर है ले गए वहां ९०० मोपले बैठे हुए थे। वहां पर हमें नहाने के लिए कहा गया और आज्ञा दी "यदि तुम मुसलमान बन जाओ तब सुखपूर्वक जी सकोगे। नहीं तो, जान से मार दिये जाओगे"। हमारे शिर तत्काल मूंड़ गए और एक थंगल ने कुरान से कुछ पढ़ा जो मुझे याद नहीं। फिर हमें मोपलों के वस्त्र पहनाए गए। जब हमारे शिर मूंड़ने लगे तो मैंने उन से पूछा कि "आपको हमें मुसलमान बनाकर क्या मिलेगा" उन्होंने उत्तर दिया "इस भूमि पर सिवाय मुसलमानों के और कोई नहीं रह सकता" तब मैं घर गया और शिर मुंड़ा लिया। फिर वहां से सब अपने घर आगए, फौज के आने पर मै तिरुरङ्गाड़ी चला गया और फिर हिन्दू बन गया।

निशान अंगूठा आईयप्पन तीया।

(१४)

नाम—चन्दूकुटी आयु २८ वर्ष पुत्र कालन तीया चांत मंगलम ऐमशम बैंकोर देशम (ताल्लुका कालीकट)

१५ जुलाई की प्रातः को लगभग ४० मोपले मेरे घर आये और आते ही मेरे हाथ पीठ के पीछे बांध दिए। मेरे अतिरिक्त मेरे घर में २ स्त्रियां और ४ बच्चे थे। मोपले हम सब को जबरदस्ती मद्दूआना इल्लम (नम्बोदरी के घर) ले गए। उस घर में मोपलों का लीडर अबूबकर मुसलियार मौजूद था। उसने मेरी ओर संकेत कर के हुक्म दिया कि इसे नदी पर ले जाओ और कतल करदो। इस पर मेरी स्त्री और बच्चों ने रोना आरम्भ किया। तब बोल उठा कि यदि तुम जीवित रहना चाहते हो तो मुसलमान बन जाओ। मैं मान गया और मेरी चोटी काटी गई, स्त्री को मोपला वस्त्र पहनाए गए। हमें वहां २ दिन तक रक्खा गया। तीसरे दिन हमें एक दूसरे घर में ८ दिन तक रक्खा गया,

और फिर वहीं लाया गया। इस के पीछे हमें ज्ञात हुआ कि मद्दूआना इल्लम में ही मोपले मेरे पिता को, मेरे दो सालों को और एक भतीजे को लाए हैं मैं अपने कमरे के दरीचे में से सब को देख रहा था। उसी समय अबूबकर ने आज्ञा दी कि इन को मार दो। फिर मोपले उन सबको लेगए और वह लौट कर नहीं आए। जब मेरे पिता और दूसरे नातेदारों को बधस्थान की ओर ले जा रहे थे तो मैं चिल्ला उठा। इस पर मोपलों ने मुझे कहा चुप रहो नहीं तो तुम भी मार दिये जाओगे। मैं चुप हो रहा फिर मोपले मुझे और मेरे परिवार को एक बन में लेगए, और वहां ८ दिन तक क़ैद रक्खा। ९ वें दिन मोपले हमें पहिले स्थान पर फिर ले आए, वहां फौज पहुंच गई और मेरे छुटने का दिन आया।

हस्ताक्षर—चन्दूकुटी।

(१५)

नाम—श्रीमती मात अम्मा, आयु ६० वर्ष पुत्री इट्टी जात नायर ग्राम मनाशीरी ऐमशम, (काली कट ताल्लुका)

"गत अक्टूबर को एक दिन मैं अपने घर में थी, कि अकस्मात् बन्दूकों की आवाज़ आने लगी और मैं, मेरी लड़की, मेरे लड़के और पोतों ने भाग जाना चाहा। हम सब अपना थोड़ासा असबाब लेकर भाग कर एक पहाड़ी पर जा पहुँचे। राह में हमें ४० और स्त्री पुरुष और बच्चे भागते हुए मिले। उसी समय मोपलों का एक हथियारबन्द जत्था पहुँचा, और उन्होंने आते ही क़तल करना आरम्भ कर दिया। मेरी २९ वर्ष की बड़ी लड़की बड़ी निर्दयता से कतल की गई। एक ३ मास का छोटा पोता भी जान से मारा गया, और मेरी गर्दन के नीचे और ऊपर मोपलों ने तलवार के दो तीन वार किये। मैं भूमि पर गिर पड़ी और अचेत हो गई। मोपलों ने यह जान कर कि मर

गई है, छोड़ दिया कुछ देर पीछे जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कि मेरा दूसरा पोता भी घायल हुआ २ तड़प रहा है। थोड़ी देर पीछे उसे होश आया और मैं उसे उठाकर गिरती पड़ती अपने घर पहुँची। वहां २-३ दिन तक मुझे भूखा रहना पड़ा। फ़ौज आने पर मैं कालीकट पहुँची जहां ३० दिन तक लगातार मेरे घावों का इलाज होता रहा।

(निशान अंगूठा) माता अम्मां

(१६)

नाम—प्रांजीरी पिता मुण्डन जाति तीया, आयु ७५ वर्ष बैंगरा एमशम (अरनाड ताल्लुका)

२२ सितम्बर को इस गांव में मोपलों ने लूट मार आरम्भ की और मेरे घर मोपले उसी दिन आए। उसी क्षण हम सबने भागने का यत्न किया। हम सब ८ स्त्री पुरुष और बच्चे थे। जब हम सब भागते हुए पुन्नम पला की ओर जा रहे थे, तो मार्ग में मोपले मिल गए और पूछने लगे "कहां भागे जाते हो ?" हमने कहा हम अपने प्राण बचाने के लिए भागते हैं। मोपलों ने कहा "नहीं तुम हमको पकड़वाने के लिए दौड़ रहे हो" और झट से हमको क़तल करना आरम्भ कर दिया। हममें से एक स्त्री, एक वर्ष की कन्या, ३ जवान लड़के और २ बड़े मर्द थे। इन सब को क़तल किया गया। एक मैं बच रहा। इन मरने वालों में एक ३५ वर्ष का जवान लड़का था। उसी का यह सारा परिवार था। अब इस परिवार में केवल ७ वर्ष की कन्या रह गई है और उसके पालने वाला कोई नहीं है। मेरी यह पोती है, परन्तु मैं इसके पालने के लिये असमर्थ हूं।

निशान अंगूठा प्रानजीरी तीया

(१७)

नाम—श्रीमती आटूवली, पुत्री पीरी अम्मां, जाति तीया, वेलीलुक ऐमशम (इलाका अरनाड)

[मैं मिस्टर शंकर नायर अधिकारी महाशय शर्म्मा के साथ इस स्त्री के घर पहुंचा। इस बेचारी के पांव कटे हुए हैं। यह मोपला भेष में थी। इसने अपना निम्न लिखित बयान लिखवाया। बयान लिखने से पहिले इसने अपने मोपला वस्त्र उतार कर फैंक दिए और इसे हिन्दू वस्त्र पहना कर शुद्ध किया गया। खुशहालचन्द खुरसन्द]

चार मास हुए कि मेरे घर में बहुत से मोपला आए। उस समय घर में मैं, मेरी माता, और मेरा भाई था। तीनों को जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया। फिर जब यहां फौज आई तो मेरी माता तिरुरङ्गाड़ी चली गई और वहां जाकर हिन्दू बन गई परन्तु मैं चलने के लिये असमर्थ थी इसलिये जा न सकी, और अब तक लाचारी से मोपला भेष में रहती थी। अब मैं आज से फिर हिन्दू बन गई हूं क्योंकि मैं हिन्दू ही रहना चाहती हूं। निशान अंगूठा आटूवली।

(१८) नाम:—श्रीमती नारायणी अम्मां पुत्री श्रीमती लक्ष्मी अम्मां, नायर गांव त्रूकल्लम ऐमशम (ता० अरनाड)

"२० अगस्त सन् २१ को इस इलाके में मोपलों ने सरकारी इमारतों को जलाना आरम्भ किया। फिर हिन्दुओं के घरों में आने लगे, और खुराक व रुपया माँगने लगे। हिन्दुओंने लाचार होकर जो कुछ था दे दिया, और साथ ही अपने घर छोड़ने आरम्भ कर दिये। मेरे घर में मोपले २० सितम्बर के लगभग आये परन्तु इस घर में सिवाय एक बूढ़े मनुष्य और उसकी स्त्री के और कोई न था। सब लोग पालघाट चले

गये थे । आदमी का नाम कृष्णनायर था, उसकी आयु ७३ वर्ष की थी, स्त्री का नाम कंजू अम्मां था, इन दोनों को मोपलों ने क़तल करके कुए में फेंक दिया और घर का सब असबाब लूटकर ले गए जो एक हज़ार रुपये से अधिक का था ।"

हस्ताक्षर लक्ष्मी अम्मां ।

(१९) नाम:—श्रीमती नूली पुत्री जोई कुटी जाति तीया, गांव पतूरऐमशम (ताल्लुका कालीकट)

"कुन्नी महीने में मोपले मेरे घर आए, मैं उस समय घर में नहीं थी । मेरा लड़का वहां था, मोपले घर में से कुल्हाड़ा आदि ले गए । फिर मेरे पुत्र को कहा कि तुम भी लूट में हमारे साथ मिल जाओ, उसने इन्कार किया तब मोपलों ने उसे धमकाया । लड़का भाग निकला, मोपलों ने उसका पीछा किया और उसे क़तल कर दिया । फिर घर पर आकर सब कुछ लूट लिया । मेरा पति मर चुका है, और मेरा व मेरी बहू का पालने वाला वही पुत्र था । निशान अंगूठा चोई कुटी ।

(२०) नाम:—तेई अम्मां, पुत्री पाव अम्मां, आयु ३० वर्ष जाति नायर ग्राम पोलाकोड ऐमशम (ता० कालीकट)

मेरा नाम तेई अम्मां है । जिस घर में रहती थी उसमें १० पुरुष स्त्री और बच्चे थे । ४ मास हुए कि हम मोपलों के भय से अपने घर से भाग रहे थे । हम सब ४० स्त्री पुरुष और बच्चे थे । हमारे पड़ौसी भी साथ थे, जब हम भागते हुए मलिया अमाकड़क पहाड़ पर पहुंचे तो ५० से ऊपर मोपलों का जत्था हम को मिला । उनको देखते ही हम सब वापिस लौटे, परन्तु उन्होंने हमको पकड़ २ कर क़तल करना आरम्भ कर दिया । जो लोग क़तल किए गए उनमें से स्त्रियां अधिक थीं क्योंकि वे तेज़ी से भाग नहीं सकती थीं । मैं ४ और स्त्रियों और बच्चों के

साथ एक झाड़ी की आड़ में छिप गई और फिर रात को अवसर पाकर भाग आई। सब स्त्री पुरुष और बच्चे जो मारे गए उनकी संख्या ३५ थी। केवल हम पांच बचकर निकल आईं।

निशान अंगूठा तेई अम्मां।

(२१) नामः—पैंतरायल कन्नानायर मुले अमां ऐमशम
(ता० कालीकट)

"आठ जुलाई को मोपला लोग मेरे घर आए, जिन की संख्या ५० थी। वे कहने लगे जो हथियार तुम्हारे पास हैं उन्हें दे दो; और फिर तुरन्त ही बिना विलम्ब घर में घुस गये और हथियार ले गए। तब मैंने अपने परिवार को घर से निकाल कर कालीकट भेज दिया। उसके पीछे दोपहर को फिर मोपले आए और घर में घुसकर लूट आरम्भ कर दी। नक़द रुपया, गहने जो पांच हज़ार रुपये के थे लूट कर ले गए। फिर मेरे घर के आस पास जो १५ और घर थे उनको उन्होंने जला दिया। मेरे घर के ७ मनुष्य समीपवर्ती बन में छिपे हुए थे, मोपलों ने उनका पीछा किया और उनको पकड़ लिया, परन्तु उनमें से दो किसी प्रकार से भाग गए, एक को उसी जगह क़तल कर दिया और ४ को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया।

इसके १० दिन पीछे ज़बरदस्ती मुसलमान किये ४ मनुष्यों में से ३ ने कहा कि वह मुसलमान रहना नहीं चाहते। इस पर उन्हें क़तल कर दिया गया, चौथा मनुष्य चोरी से भाग आया और अब मेरे पास रहता है। मेरी सब ५० हज़ार रुपये की जायदाद है। मैं अब तक रिलीफ़ कमेटी और कांग्रेस कैम्प से सहायता लेता रहा हूं। अब १ मार्च सन् १९२२ से यह कैम्प बन्द हो गए हैं, इतने दिन मैं इधर उधर से ऋण लेकर गुजारा करता रहा; परन्तु अब कोई मुझे ऋण नहीं देता, और नाहीं अभी घर जा

सकता हूं, क्योंकि अभी वहां डर है। मेरे घर में स्त्रियां बच्चे और मर्द सब मिलाकर ३६ हैं।

(हस्ताक्षर) पैन्तरायल नायर

(२२) नामः—सय्यद अब्दुल्लाह कोय थंगल कोटाकट (कडावंडी) कन्नामांशप ऐमशम देशम (अरनाड ताल्लुका)

[यह वह मनुष्य है जो मोपला या खिलाफत हकूमत के दिनों में दूसरे थंगलों के साथ कन्नामंगलम में जज्ज वत् हकूमत करता रहा है। खुशहालचन्द।] "यहां विद्रोह कन्नीमास की २२ तारीख को आरम्भ हुआ। तूई नायर के घर पर ही सब से पहिले धावा किया गया। विद्रोह आरम्भ होने के १५ दिन पीछे मैं यहां पहुंचा, तब तक पर्पनगाड़ी में जीनदीन कुट्टी नाहा के घर में खाता रहा, और वहां की मसजिद में रहता था। मेरे २ भाई इस ऐमशम में आये, एक यूकोयथंगल और दूसरा मत्तूगोयथंगल। खिलाफत हकूमत करने के लिए विद्रोह आरम्भ हुआ है, ऐसा सुनने में आया था। मैंने २० हिन्दुओं को मुसलमान बनाया था। हिन्दू और मोपलों को प्रेम से रहना चाहिये। मेरी यही इच्छा है। खिलाफत सल्तनत पर हकूमत करने वाले अबदुला कटी, कुंज-अली बी० और कूदल अबूबकर थे।

हस्ताक्षर अरबी अक्षरों में सय्यद अबदुल्लाह कोय थंगल।

(२३) नीलेशोरम एमशम (कालीकट तालुका)

"फरवरी १९२२ के अन्तिम दिनों में पतूर ऐमशम के श्रीकृष्ण नायर और नीलेशोरम ऐमशम के पुलवियोड़ी' अपू ५० चमारों को साथ लेकर खेत से धान काटने के लिये गये। जब वह लौटे और उनाद् कादू के समीप पहुंचे जो कूड़ा ऐती ऐमशम से ३ मील के फासले पर है, तो अचानक ३०—४० हथियार बन्द मोपलों ने उन पर धावा किया। डर के मारे चमार इधर उधर

भागने लगे । मोपलों ने सब का पीछा किया और कृष्ण आयर और अप्पू नायर को ४ चमारों समेत पकड़ लिया, और सब को मार डाला ।

कृष्णनायर को बड़ी निर्दयता से मारा गया, कारण यह है कि उसने सरकार को सहायता दी थी । पहिले उसका चमड़ा उतारा गया । फिर उसकी दोनों टांगे काट कर उसे कुछ देर तड़फने के लिये छोड़ दिया गया । फिर उसका शिर काटा गया । यह मोपले अबूबकर थंगल के जत्थे के थे ।

(वैस्ट कोस्ट स्पैक्टेटर ४ मार्च १९२२)

(२४) ऐमशम में विद्रोह का आरम्भ तोलम (एक महीने का नाम है) में हुआ । विद्रोही स्थानिक मोपले थे । कुछ अरनाड से भी आये थे और इन के जत्थे के सरदार सब के सब स्थानिक मोपले थे, खिलाफत के कुछ लेक्चरार २—३ मौकों पर ऐमशम में आये और उन्होंने २—३ जल्से यहां किये । उन से मोपलों का जोश भड़क उठा । इसके पीछे मोपलों ने गली कूचों में चक्कर लगाया, और हिन्दुओं के घरों से हथियार मांग कर ले गये । फिर उन्होंने सब हिन्दू घरों को लूटना आरम्भ कर दिया । इस लूट के बीच में कुछ घर जला कर खाकस्याह कर दिये । इर्द गिर्द लगभग १ दर्जन मन्दिर भी थे उन सब को भी नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया । मूर्तियां तोड़-फोड़ डालीं । मैंने अपने घर की स्त्रियों और बच्चों को विद्रोह आरम्भ होने से पहिले ही बाहर भेज दिया था । मैं आप भी चला आया था; परन्तु मेरे दो चचेरे भाई एक और नातेदार और ३—४ नौकर चमार मोपलों के हाथ आ गये । मोपलों ने इन सब को मार दिया । मेरी सब जायदाद और पशु आदिकों को मोपलों ने लूट लिया । मेरे लिये यह कहना कठिन है कि

मेरे गांव में सब कितने आदमी मारे गये। तथापि मेरा अनुमान है कि मारे हुओं की संख्या ३०० से कम किसी प्रकार न होगी, क्योंकि दो कूप लाशों से मुख तक भरे हुये थे, और तीसरा आधा भरा था। मैं यह भी ठीक २ नहीं कह सकता कि जिन हिन्दुओं को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया गया उन की संख्या कितनी होगी; परन्तु एक सौ से अधिक ऐसे मनुष्यों को तो मैं अच्छी तरह जानता हूं जो भाग गये और इस समय मक्कूतम में छिपे हुये हैं। तीया जाति की बहुत सी स्त्रियों का सतीत्व नष्ट किया गया। एक स्त्री और उसके पति को पकड़ा गया। पति का शिर काट दिया गया फिर स्त्री के साथ व्यभिचार किया गया। उसके तीसरे दिन पीछे उसे छोड़ दिया गया। अब अदालत में मुक़दमा चल रहा है। मैं ३ रुपये मामला देता हूं। मेरे तीन चार किसान मोपले हैं, मैंने उन को या किसी और मोपले को कभी हानि नहीं पहुंचाई। मेरे विचार में यह विचार सर्वथा मिथ्या है कि इस विद्रोह का कारण किसानों पर अत्याचार है।

(हस्ताक्षर पद्मनाभम साकिन पुत्तूरा ऐमशाम इलाका कालीकट)

(२५)—मेरी आयु ७३ वर्ष है। मैं इस समय बीमार हूं। चंगल मास के आरम्भ में मोपले हमारे मकान में घुस आये। मेरे अड़ोस पड़ोस के आदमी भाग कर बनों में जा छिपे, परन्तु मैं भागने के लिए असमर्थ होने के कारण घर में ही रहा। मोपले लगभग ३० थे, उन्होंने मेरा माल असबाव लूट लिया, और मुझे जमीन पर लेट जाने का हुक्म दिया। फिर मुझे तलवारों से घायल करने लगे परन्तु पता नहीं किसी ने उन्हें रोक दिया। फिर वे मुझे एक पहाड़ी के पास ले गये। यहां मुझे मार डालने की इच्छा की। यह ईश्वर की इच्छा थी कि मैं बच रहा। इसलिये वह मुझे जल्दी धूप में छोड़ कर भाग गये। मैं घावों से बे सुध

हो रहा था। बड़ी कठिनता से छाया में गया, और कई दिन भूखे रह कर कालीकट पहुंचा।

(हस्ताक्षर अरकोड कोवनी नायर साकिन पलियाकोड)

(२६)-मोपलों ने मेरे घर पर धावा किया और मुझ से ८००) रु० धमका कर लिये। उन्होंने यह भी चेष्टा की कि मुझे मुसलमान बनालें, परन्तु मैं मुसलमान न बना। परन्तु उन्होंने मेरे भानजे को मुसलमान बना लिया। मेरे बाकी नातेदार इसके पहिले भाग चुके थे।

(हस्ताक्षर टीकानदिल नायर सानि आलावत्तूर अरनाड)

(२७) मत्थु वलूर एमशम इलाका अरनाड में मोपलों ने एक ६० वर्ष की बुढ़ी को जिसका नाम कबांगत पाद अम्मां था, तलवार से इतना घायल किया कि बेचारी को २२ दिन तक अस्पताल में रहना पड़ा। उसके शिर और बाजुओं पर घाव लगे। उसका घर लूट लिया गया। नुकसान का अनुमान लगभग ३३०) रुपया है, अम्बलपुर चरकटी साकिन कावबेलमके घर के लगभग १४ मनुष्यों को जिसमें स्त्रियां भी सम्मिलित थीं, ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया गया। ३ मन्दिरों को नष्ट कर दिया। हिन्दुओं के सब घर लूटे गये।

(मत्थु वलूर अधिकारी साकिन अरनाड)

(२८)—पतीन वतील कल्यानी अम्मां साकिन वन्दौर एमशम के घर को रात्रि के समय लूटा गया, और उसके भाई को कतल किया गया उसके पीछे उनके घर के बाकी लोग कालीकट भाग गये।

(२९) यूतीन सोरी लक्ष्मी अम्मां साकिन तेनजी पलम के घर ३ स्त्रियां थीं जिनकी उम्र १८ वर्ष से लेकर ६० वर्ष तक थी, और ६ मर्द जिनकी आयु १२ वर्ष से लेकर ७० वर्ष तक थी।

तूलम की २५ तारीख़ को कई मोपलों ने इस घर पर धावा किया। सब मर्द भाग गये, परन्तु कुछ स्त्रियां मर्दों और बच्चों को मोपलों ने देख दिया, और उन्हें पकड़ कर घर पर ले गये। वहां घर के आगे उन सबको क़तल कर दिया।

(३०) पन्तापुल कुल चरवना अमाल साकिन अरनाड के घर में लड़कियों समेत ५ स्त्रियां हैं। शाम के चार बजे घर की स्वामिनी के भाई को मोपले जंगल में ले गये और वहां उसे मार डाला।

(३१) हमारे घर के सब १४ मनुष्य हैं। मोपलों ने हम पर धावा किया, और हमें मुसलमान हो जाने के लिये कहा। हमने कहा "इस के लिये हम को मुहलत दरकार है" मोपलों के चले जाने पर हम भाग निकले, हमको मोपलों ने इस प्रकार धमकाया था कि यदि तुम मुसलमान न बनोगे तो तुम्हें जानसे मार डाला जायगा। इस लिये हम रात ही में अपने बच्चों को लेकर भाग निकले, क्योंकि इसके सिवाय हमारे पास और कोई चारा न था।

(हस्ताक्षर पोंमरी कंजू कृष्णन नायर साकिन तेन्जी पलम इलाका अरनाड)

(३२) हम अपने घर में केवल २ मनुष्य बचे हैं। शेष सबके सब मार दिये हैं। हम ८००) माल गुजारी देते हैं। मोपला-विद्रोह के कारण हम १४ कन्नी को घर से भागे परन्तु कुछ दूर जाकर मेरा मामू करुणा कारन जिसकी आयु ५९ वर्ष की थी फिर वापिस लौटा क्योंकि कुछ बहुत आवश्यक कागज़ात और बहुमूल्य भूषण वहीं रह गये थे। उसका विचार था कि वह यह चीजें लेकर शीघ्र लौट आवेगा, परन्तु उसे वहां पहुँचते २ देर होगई और रात का समय था। कुछ मोपले

चौकीदारों ने उसे सम्मति दी कि अब न जाओ प्रातः सवेरे चला जाना। उसने यह सलाह मानली, और रात वहीं रह गया। लेकिन ८ बजे के लग भग ३०० मोपले जबरदस्ती घर के भीतर घुस आए, और मेरा मामू तलवार लेकर बाहर निकला; और उसने १६ मोपलों को जान से मार दिया। फिर वह भाग कर दरवाजे में चला गया, वहां एक मोपले ने अपनी ढाल उसके सिर में मारी जो उसकी छाती में उतर गई। वह वहीं गिर कर मर गया, उसके पीछे मोपलोंने सब धन दौलत लूट ली। मेरा एक दूसरा मामू कंजूनी नायर कोटाहाल से अरनग्लोर ऐमशम गया जो वहां से ४ मील के फासले पर था। वह आज तक वापिस नहीं लौटा है, मुझे पता मिला है कि उसे भी मोपलों ने मार दिया है। मेरे ३ घरों को मोपलों ने लूटा और एक को जला कर राख कर दिया। पितूर ऐमशम में लगभग ५० हिन्दू घर हैं। वहां १२ घर तो सर्वथा जला दिये गए हैं, और २० आदमी जबरदस्ती मुसलमान किए गए। इस कसबे में केवल एक मन्दिर था, एक मन्दिर हमारा अपना भी था, उसे मोपलों ने गिरा दिया वेंगरा ऐमशम के ३० हिन्दू क़तल कर दिये गए और २० को मुसलमान बनाया गया। यहां ३ मन्दिर थे। तीनों को गिरा कर उनकी मूर्तियां तोड़ फोड़ दी गई, और गाएं बध की गई और गायों की अन्तड़ियां टूटी हुई मूर्तियों पर डालदीं। यह बातें मैंने खुद मोपलों के मुख से सुनी हैं जो वह बड़ी शेखी से बयान करते थे।

[हस्ताक्षर गोपालन नायर पितूर ऐमकम इलाका अरनाड]।

(३३) मैं कुडवायूर ऐमशम का अधिकारी हूं। २४ अगस्त को मोपले पहिली बार नेचीकार मोसाध के घर आए और धान व रुपया लेकर चले गये। फिर धान सब घरों से लिया

और किसी को मार पीट न की। फिर २२ सितम्बर से खूब लूट मार आरम्भ की, मेरे घर में घुस कर मेरा सब माल लूट लिया, हर हिन्दू घर पर डाका डाला। इस क़सबे में ५० हिन्दू घर हैं। इन में से एक को जला दिया गया, और बाकी गिरा दिये गए। ७ आदमी कतल और ५० ज़बरदस्ती मुसलमान बनाए गए। इस ऐमशम में सब ५ मन्दिर थे। मोपलों ने सबको नष्ट कर दिया। मुझे पता है कि मोपलों ने ५ युवा कन्याओं का सतीत्व नष्ट किया।

हस्ताक्षर [के० कंजूनी नायर साकिन कुडवायूर ऐमशम इलाका अरनाड]।

(३४) मेरे ऐमशम में विद्रोह का आरम्भ ७ चंघम को हुआ। मेरे ३ घर थे, जिन में से २ सर्वथा लूट लिये गए। मैं खेती करता हूं, और एक जेन्मी का रैयत हूँ। मेरी आयु ७६ वर्ष है। जहां मैं रहता था वहां कोई वस्तु लूटने के योग्य न थी, इसलिये कुछ लूटा नहीं गया। परंतु उसी तारीख को हथियार बन्द मोपलों का जत्था मेरे घर के बाहर आया। मेरे सब भानजे उस समय भाग चुकेथे। केवल मैं ही घर में बाकी रह गया था, क्योंकि मैं बीमार था, मेरे पास एक बूढ़ी हिन्दू स्त्री थी जिसका घर लूट कर मोपलों ने कंगाल कर दिया है। मोपलों ने मुझे धमकी दी कि यदि तुम मुसलमान न बने तो गोली से मार दिये जाओगे। मैंने उनका कहना न माना, और कहा बेशक गोली से मार दो; परंतु उन्होंने मुझे गोली न मारी। एक तलवार ले आए और कहा कि हम तुम्हारे शरीर के टुकड़े २ करेंगे। मैंने उन की खुशामद की और कहा देखो मैं ७६ वर्ष का बूढ़ा हूं। थोड़े दिनों का महिमान हूं मेरे मुसलमान होने से तुमको कुछ लाभ नहीं हो सकता।

मुझे छोड़ दो और अपने ही धर्म में मरने दो, परंतु उन्होंने न माना और मुझे कतल करने पर तैयार हुए। तब मैंने लाचारी से कहा "अच्छा मैं तैयार हूँ मेरा शिर मूंड़ लो।" फिर उन्होंने मेरे भाई और उस अबला स्त्री को बलात् मुसलमान बनाया, और मेरा उस के साथ निकाह कर दिया फिर मुझे साफ शब्दों में कहा कि यदि तुम फिर हिन्दू बने तो याद रक्खो जान से मार डाले जाओगे, मैं ५ फरवरी को वहां से काली कट भाग आया हूं।

मानीनियल पालुली कृष्ण नायर तिरपाशी एमशम अरनाड

(३५)—२३ अगस्त को मोपले बहुत से हिन्दुओं से धान और रुपये लेने को गए। उस समय वे शान्त रूप थे, इसलिये किसी ने इन्कार न किया। इसके दो दिन पीछे २५ अगस्त को कई मोपले तलवारें और बन्दूकें लेकर प्रतिष्ठित हिन्दुओं के घरों में गए और उन्हें मारने पीटने लगे। हमारे गांव में लगभग २०० हिन्दुओं के घर हैं। उन सब को लूट लिया गया, और लगभग ५० हिन्दुओं को जबरदस्ती से मुसलमान बनाया गया। १८ हिन्दुओं को मार डाला गया; और फसल काट ली गई। अब हिन्दू तब तक फसल बोने को तैयार न होंगे जब तक उन की रक्षा के लिये पूरा प्रबन्ध न होगा। उस क़सबे में ४ मन्दिर थे। सब को गिरा दिया गया है जो जायदाद मोपलों के हाथ लगी सब उठा ले गए।

हस्ताक्षर के० एल० कुटी कृष्णन नायर चौधरी साकिन पीर वाल्वर।

(३६) मैं वलीकुन्ना ऐमशम अरनाड ताल्लुके का चौधरी हूं। मेरे गांव में एक सौ के लगभग घरों को लूटा गया और ६० घर जला दिए गए यहां पर मेरे दो मन्दिर थे वह गिरा दिये

मगर उसके पीछे मेरे एक मन्दिर को आग लगा दी गई और कई मर्दों, स्त्रियों और बच्चों को कतल कर दिया। एक हिन्दू स्त्री को जिसकी आयु ७२ वर्ष की थी मोपलों ने उसके घर में घुस कर २० हज़ार नारियल जो वहां पड़े थे, उनको आग लगा दी। घर का माल असबाब लूट लिया और उस बुढ़िया को जीवित जला दिया। जब मोपले इस प्रकार के जुल्म वहां कर रहे थे तो लोग नदी से तैर कर पार जाने का यत्न कर रहे थे। जिन स्त्रियों के पास बच्चे थे वह उन्हें झाड़ियों में छिपाती फिरती थीं।

मैं अपने घर में दूसरा मनुष्य हूं। हम १२००) रुपया मामला देते हैं। विद्रोह का कारण किसानों का दुःख या पुलिस का जुल्म नहीं है, वरन् मोपलों की ईर्षा, द्वेष और खिलाफत का प्रचार है। मेरा मकान जिसकी लागत १५०००) रुपया था मोपलों ने लूट कर जला दिया है। आज उसकी दीवारें भी दिखाई नहीं देतीं, मैंने एक स्कूल स्थापित किया था मोपलों ने उसे भी नष्ट कर दिया। मेरी ३ दुकानें थीं वह भी जला दी गईं। मेरे सब नुकसान का जोड़ तीस हज़ार रुपये के लगभग है। आजकल मैं मनोर मन्दिर में ठहरा हुआ हूं।

हस्ताक्षर— [टी० ऐन० नारायणन मूसला अधिकारी]

(३७) तूलम की १२ वीं को बागी मेरे घर पर आए। मेरे सिवाय बाकी सब आदमी भाग गए। मोपलों ने आते ही मेरे हाथ पांव बांध दिए मेरे पड़ौसी गोपालन के साथ भी यही बर्ताव किया गया। दूसरे दिन गोपालन ने बड़ी खुशामद से कहा कि खुदा के वास्ते मुझे मेरी मां से मिल लेने दो। मोपले उसे एक कुए पर ले गए और वहां टुकड़े २ कर दिया। यह काम मैंने अपनी आंखों से देखा।

मैंने मुसलमान बनना मान लिया तब उन्होंने मुझ से कुरान की कुछ आयतें कहलवाईं, और मुझे खाने को कुछ दिया। दूसरे दिन मैंने उन से बाहर जाने की आज्ञा मांगी। अबूबकर नामी मोपले ने मुझे एक पास दिया उसकी सहायता से मैं अपने घर पहुंचा, जिस दिन मैं मुसलमान बना उसी दिन ६ और हिन्दू भी मुसलमान किए गये। मैंने देखा कि नीलेश्वरम् के दो नायरों को और कटूवल्ली के ४ तीयों को मोपले उस कूप पर ले आये और वहां उनको मार कर कुए में गिरा दिया। मोपलों की संख्या उस समय १५० के लगभग थी।

पत्नूकोट चिवनी नायर साकिन पुत्तर कालीकट ताल्लुका।

३८—मैं अपने घर में सब से बड़ा आदमी हूं और १५००) रुपया मालगुजारी देता हूं। चंग्रम की ८ तारीख को मोपले मेरे घर में आये वे ७० के लगभग थे। उस समय दिन के १२ बजे थे। उन्हें देखते ही मेरे घर के सब आदमी भाग गये, और झाड़ियों में जा छिपे। मैं अकेला रह गया, उन्होंने मुझे ज़मीन पर लिटा दिया, और मेरे शरीर पर कई स्थानों पर तलवारें मार कर क़तल करने की धमकी दी। मैंने चिल्ला कर मनपर्थ थंगल को कई बार पुकारा। तब एक बूढ़े मोपले ने मुझे अकेले छोड़ देने की सलाह दी। उसके पीछे मेरा माल असबाब लूट लिया और मुझे मेरी बहिन के घर छोड़ दिया। वहां भी मोपलों ने लूटमार की, मेरे नुक़सान का अनुमान ११०००) रुपया है। मेरा एक मन्दिर भी था, उसे भी गिरा दिया गया। मेरे गांव में ५ मन्दिर और थे उनका भी वही हाल हुआ। ४० हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया। मोपलों ने १२ मर्दों और ३ स्त्रियों को जान से मार डाला।

नोट:—यह बयान थेलपुर्थरामकोरूप का है जिस ने बयान देने के पीछे ग़रीबी के कारण आत्म-घात कर लिया।

३९—ऊपर लिखित दोनों कसबों में विद्रोह का आरम्भ अक्तूबर सन् २२ में हुआ, लोगों ने उसी दिन वहां से भागना आरम्भ किया, इन दोनों कसबों में लगभग ३०० हिन्दुओं के घर हैं, चमारों की झोंपड़ियां इनके अतिरिक्त हैं। इन सब घरों को मोपलों ने लूट लिया, ४० घरों को आग लगा दी, यहां पर २५ मन्दिर थे, उन में से कुछ जला दिये और बाकी उन्होंने गिरा दिये यहां तक घृणास्पद कार्य किये गये हैं कि मंदिरों के भीतर गायों को मारा गया है। नवम्बर के अन्त में केवल एक दिन मे ही मोपलों ने २२ हिन्दुओं को बध किया, इन में से ७ जवान स्त्रियां, और १३ बालक, ३ स्त्रियों और बच्चों ने यह सुनकर कि उनके छुड़ाने के लिये सेना आ रही है, भागने की चेष्टा की, परन्तु मोपलों ने उनका पीछा किया और मार डाला। ९ मनुष्यों को जबरदस्ती मुसलमान बनाया। इस जुल्म के दिनों में मेरा लगभग ५ हज़ार रुपये का नुकसान हो गया,इस लूटमार के काम में हमारे गांव के १०० मोपलों ने भाग लिया। उन में से अब तक केवल ३-४ पकड़े गए हैं जब तक सब मोपलों को क़ैद न किया जाय हिन्दुओं के लिए वापिस जाना दुष्कर और हानिप्रद है। मेरे विचार में इस विद्रोह का कारण खिलाफत का प्रचार है। किसानों के कष्ट के साथ इसका कोई सम्बन्ध नहीं।

हस्ताक्षर—के० गोविन्दन नायर अधिकारी तज़कोद और मन्नासीरी (ताल्लुका कालीकट)

४०—मैं कपानाथ ऐडीथल का मैनेजर हूं, जो ४ हज़ार रुपया मालियाना दिया करते हैं। मेरे घर के कुछ आदमी कुडवायूर में रहते हैं और कुछ कन्नामंगलम् में। कुडवायूर ऐमशम में चंद्यम की ४ तारीख को विद्रोह का आरम्भ हुआ। मैं ३ तारीख को एक काम से कालीकट आया था। मेरे घर के कुछ मनुष्य वहीं

थे, विद्रोह की खबर सुनते ही मैं उन सब को कालीकट ले आया, और वहां नौकरों को छोड़ आया। मोपलों ने हिन्दुओं के सब घर लूट लिये और फिर कन्नामंगलम् की ओर बढ़े, मेरा घराना बहुत प्रतिष्ठित था इसलिये मोपलों ने उस के मेम्बरों को मुसलमान बनाने की चेष्टा की। वह नाई और जाकटें साथ लेकर उन को मुसलमान बनाने के लिए तैयार होकर आये थे, मेरे घरवालों को एक नायर नौकर ने समय पर खबर कर दी इस से मोपलों ने झुंझला कर मेरे घर को गिरा दिया। मेरे जिस सच्चे नौकर ने खबर दी थी उसे जीवित अग्नि देवता के समर्पित कर दिया। मेरा सब माल व असबाब लूट लिया, पशु मार डाले, मेरा बड़ा मन्दिर कुछ जला दिया, और कुछ गिरा दिया, मूर्तियों को टुकड़े २ कर दिया। इसके अतिरिक्त ऐमशम के दूसरे मन्दिरों को भी गिरा दिया। कुडवायूर का सब से बड़ा मन्दिर सर्वथा नष्ट कर दिया, कुछ मन्दिरों के मलवे से मसजिदें बनाई गईं। मेरे घर के आदमियों ने यह फैसला कर लिया है कि हम किसी मोपले को भविष्य में धान न देंगे, इन दो क़सबों में लगभग १५० मनुष्यों को मुसलमान बनाया गया और जहां तक मुझे पता है ६ मनुष्यों को क़तल किया गया है।

हस्ताक्षर—सनकोनी नायर साकिन कुडवायूर
(अरनाड ताल्लुका)

४१—मैं अपने घर में दूसरा मनुष्य हूं। हम २३०) मालगुजारी देते हैं। मोपले हमारे घर में १७ अक्तूबर को घुसे उस समय हमारे घर में ३५ आदमी थे और मोपले १०० थे, उन के आने की खबर सुनकर हम ने अपने बच्चों और स्त्रियों को बाहर भेज दिया और आप भी घर छोड़कर निकल भागे। मोपले घर में घुस गए, मेरा चचा करुणावन वहां रह गया था क्योंकि वह

भाग नहीं सकता था, मोपलों ने उनको पकड़ कर हमारे घर को लूट लिया। फिर मेरे चचा को क़तल कर दिया और घर को जो १५ हज़ार रुपये का था आग लगा दी और मेरी सम्पत्ति जो १६ हज़ार रुपये की थी सब लूटकर ले गये, इस ऐमशम के सब हिन्दू घर लूटे गए, मोपलों ने ३ मनुष्य जबरदस्ती मुसलमान बनाए और एक को मार डाला। मोपले अभी तक निरुत्साही नहीं हुए यदि आवश्यकता हो तो मैं उन सब के नाम बताने को तैयार

हस्ताक्षर—चन्नू नायर औलावत्तूर ऐमशम (अरनाड इलाका)

४२—मोपले मेरे गांव में ६ छुंगम को आए, दूसरे दिन उन्होंने मेरे घर पर धावा किया, उन्होंने कंगाल से कंगाल हिन्दू घर को भी लूट लिया, वे हिन्दू भाइयों से बड़ी निर्भीकता से कहते थे कि तुम अपना सब माल असबाब निकाल कर हमारे हवाले करदो और स्वयं मुसलमान बन जाओ। ७ तारीख को सब हिन्दू जङ्गलों को भाग गये। मैं बीमार था इसलिये एक मोपले के घर में छिपा रहा, उसने कहा "कल तुम्हें मुसलमान बनना पड़ेगा"। दूसरे दिन भागे हुये हिन्दुओं में से कुछ लौट आये और एक मन्दिर के पास बैठ कर रोटी खाने लगे, मोपले तलवारें लेकर आ पहुंचे, और हिन्दुओं को कहा "या तो अभी मुसलमान बनो या अपने प्राण दो।" मुझे भी उन्होंने धमकाया। हिन्दू स्त्रियों के गले से पवित्र ताली तक उतार ली गई। उस के पीछे २५० के लगभग हिन्दू अपना धर्म बचाने के लिये घरों से भागे। मुझे ३०० मोपलों ने घेर लिया परन्तु एक मोपले ने मेरी सहायता की, और मुझे बचा लिया। एक दूसरे मोपले ने मुझे ट्रावनकोर पहुंचा दिया। अब तक कई मोपलों ने यहां पर ऊधम मचा रक्खा है। सुना है कि उन्होंने कुछ घरों को जलाया है और मूर्त्तियों को तोड़ दिया है। हस्ताक्षर—करुणावन साकिन पलाखल इल्लम।

४३—माऊर ऐमशम् ।

कनाम बलाकीन उनोचार अम्मां ४१ वर्ष की है। जब वह और उसके घर के लोग सोये पड़े थे, मोपले दरवाज़ा तोड़ कर घर में घुस गये। वहां उन्होंने ४ मनुष्यों को बांध कर मुसलमान बनाया, बाकी लोग कालीकट भाग गये।

४४-अलमपला मेरी आपू नायर का बयान ।

मेरे घर के लोग तूलम की ७ तारीख को कालीकट चले गये, मैं उसके दूसरे दिन चला। मोपलों ने मुझे राह में घेर लिया और कुनारा थंगल के पास ले गये। वहां एक मकान में कैद कर दिया, और ३ दिन तक वहीं कैद रक्खा। मुझे केवल एक वार खाने को देते थे। चौथे दिन मुझे मसजिद में ले जाकर धमकाया कि मुसलमान वन जाओ नहीं तो मारे जाओगे मैंने उनका कहना मान लिया, फिर मुझे कुनारा थंगल और मुहम्मद कोय थंगल के पास ले गए। वहां नाई से मेरा शिर मुंड़वाया, और मुझसे नमाज़ पढ़ाई। फिर ८ दिन तक मुझे कैद रक्खा। मुझे वहां चार वार नमाज पढ़नी पड़ती थी। फिर मुझे दूसरे मोपलों के सुपुर्द किया गया। मेरी मुक्ति तब हुई जब फौज वहां पहुँच गई।

४५—मोलाथीन पायल केलू नायर का बयान ।

मोपलों के डर से मेरे घर के लोग पहिले ही भाग गये थे मैं उस समय भागा जब कि विद्रोह बहुत बढ़ गया था। राह में मोपलों ने मुझे पकड़ लिया और मेरी मुश्कें बांधदीं। जब रात हुई तो मसजिद में पहुँचा दिया। ११ तारीख को मुझे कुनारा थंगल के पास लेगये। वहां मेरा सिर मूंड़ कर मुझे धर्म से पतित किया फिर मुझे घुटने टेकने को कहा। १७ तारीख तूलम तक मुझे

वहीं कैद रक्खा। उसके पीछे मुझे कई स्थानों में ले जाते रहे। २९ तूलम को जब सेना पहुँची तो मेरी रिहाई हुई।

४६— सी गोविन्दनन नायर और उसके लोग सोये हुये थे। मोपले भीतर घुस आये। उन्होंने चार मनुष्यों को पकड़ लिया, और बाकी भाग गये।

४७—रामुनी नायर अधिकारी मौज़ा अलकारा इलाका अरनाड का बयान।

मेरा कुटुम्ब २५०० रुपया लगान देता है। २५ अगस्त को मेरे गांव में विद्रोह आरम्भ हुआ। मोपले हरएक हिन्दू के घर गए और हथियार छीनने लगे। मेरे पास कोई तलवार न थी इसलिये मुझे न सताया, जो मोपले हथियार छीनने आए वे उस गांव के रहने वाले नहीं थे, स्थानीय मोपलों ने उन की सहायता की। १२ अक्तूबर को मेरे गांव में उन्होंने बहुत ऊधम मचाया। हरएक हिन्दू घरको लूटा और सब माल असबाब लूट कर लेगये बहुत से घरों को उन्होंने जला दिया और कइयों को गिरा दिया। मेरे गांव का चौकीदार मैथू नायर वहां ही रहा, उसका सिर काट दिया। लगभग ६ आदमियों को क़तल किया, और ३० हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया। दो तीन अभी तक मुसलमान ही हैं। बाकी कालीकट भाग गये अभी तक कई विद्रोही मोपले खुले घूमते हैं। मोपलों ने न केवल हमारी फ़सलों को नष्ट कर दिया है, वरन् उन्होंने नारियल के बागों को बड़ा नुकसान पहुँचाया है। सब पशु क़तल कर दिये हैं। मेरी ३० गौएं मार दी हैं।

हस्ताक्षर—रामुनी नायर अधिकारी।

४८--मौजा पुखल्लूर ताल्लुका अरनाड नारीगली मंगल चेरी विष्णु नम्बूद्री का बयान।

मैं चार हज़ार रुपया लगान का सरकार को देता हूं। मेरा घर वलदार कोजएडी के पास है। परन्तु मेरी भूमि अरनाड में है। मैं विद्रोह के प्रारम्भ से पहिले मौजा तरवल्लूर में गया था परन्तु विद्रोह आरम्भ होने से एक दिन पहिले नौकरों को अपने मकान की रक्षा के लिये छोड़ गया। लगभग १ हज़ार मोपले मेरे घर आए और उसे लूट लिया, वह लगभग १ हज़ार मन चावल, सब बरतन और नारियल आदि उठाकर ले गये। मेरे ४ मन्दिर हैं—

१—करवाल्लूर भावति मन्दिर।
२—करीमकाली काऊ मन्दिर।
३—एटावारम्बल विष्णु क्षेत्र।
४—आयापन काऊ।

इन मन्दिरों को कुछ २ गिरा दिया है। मेरे नौकरों में से ५ स्त्रियों और २ मर्दों को क़तल कर दिया गया। ५ मनुष्यों को जिन में से २ नायर और ३ तीया हैं, ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया गया जो अब फिर हिन्दू बन गए हैं। मेरा एक घर और जायदाद मौजा तमाराचेरी में भी है; उसे भी मोपलों ने लूट लिया। मेरा लगभग ३० हज़ार रुपये का नुकसान हुआ है।

हस्ताक्षर एन० बी० विष्णु नम्बोद्री।

४९—मौजा बारापूर देशम ताल्लुका अरनाड ताला थोड़ी केशव नम्बूद्री का बयान।

मेरे घर में १३ मनुष्य हैं। मैं सब का मुखिया हूं। मैं ७००) लगान देता हूं। मेरे लगभग १५० आसामी हैं जिनमें १०० से

अधिक मोपले हैं। मैं कभी आसामियों की बदली नहीं करता। मैं २२ अगस्त को १० बजे प्रातः क्या देखता हूं कि मोपले मेरे घर के हाते में घुस आए हैं। इस पर मैं और मेरा परिवार दूसरे द्वार से घर छोड़ कर भाग गया। १४ सितम्बर के लगभग मैं अपने घर वापिस आया। मेरा लगभग १४ हजार का सामान मोपले लूट ले गये। उसके पीछे मोपले मेरे मन्दिर में घुस आये और वहां की मूर्ति को तोड़ दिया, लगभग १००) के आभूषण उठा कर ले गये।

हस्ताक्षर—तालातोडी केशव नम्बूदरी।

मौजा विलायल ताल्लुका अरनाड विलायल चिन्तामारा शरोदी अधिकारी का बयान।

मेरे मौजे में २२ अगस्त को मोपलों ने बलवा किया। उन्होंने मेरे गांव के सब हिन्दू घरों को लूट लिया, और ६ आदमियों को ज़बरदस्ती मुसलमान बना लिया। इस गांव में नम्बोदरी ब्राह्मणों के भी घर हैं, वहां केवल नम्बोदरी स्त्रियां ही मौजूद थीं। मोपले भीतर घुस आए और जबरदस्ती स्त्रियों के भूषण उतार लिये फिर नायरों के घरों में गये। उनकी स्त्रियों के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया। स्त्रियां इस दुःख से तंग आकर बनों में भाग गईं। मोपलों ने वहां भी पीछा किया, परन्तु सौभाग्य से वह छिप कर बच गईं। तीसरे दिन मौजा चरवायूर के अधिकारी के मनुष्य आए, उन्हों ने स्त्रियों को बचाया। हमारे गांव में ६ मन्दिर हैं। मोपलों ने उन सबको गिरा दिया, यहां पर उन्होंने गौएं भी मारीं और मूर्तियों पर उनकी अंतड़ियां डालीं और उनकी खोपड़ियों को इधर उधर फेंक दिया। यहां उन्होंने ६ हिन्दू क़तल किये और १५ घर जला दिये। यहां के हिन्दुओं के पास आने वाली विजाई के लिये धान का नाम नहीं रहा। मैं ४००) मालगुजारी देता हूं।

बी० चिन्तामाराय शरोदी।

५१-चिरुर ताल्लुका अरनाड, गोपालन उपनाम पाराकाट मोपल नायर का बयान।

अपने घर में सबसे बड़ा मनुष्य मैं हूं, १५००) लगान सरकार को देता हूं। हमारा घर मौजा पूनाकारा में है। मैं और मेरा भाई मौजा चरुर में रहते हैं। जब विद्रोह आरम्भ हुआ, तो मैं तुरन्त अपना गांव न छोड़ सका क्योंकि मेरे घर में कई महमान आये हुए थे। कई दिनों तक मैं ३०० मनुष्यों को भोजन देता रहा मैं ठीक २ नहीं कह सकता कि चाहे इन आदमियों के भय से या किसी और कारण से देशी मास की २० तारीख तक कोई मोपला हमारे घर न आया। मोपलों से डर कर मेरे घर के सब आदमी भाग गए। २० तारीख को मैं भी घर से भागा। दूसरे दिन मोपले घर आए और सब सामान लूट कर ले गए। फिर मेरे पास वाले मन्दिर में घुसे। मन्दिर के पुजारी को मुसलमान बनाया, यहां की ३ स्त्रियों और ५ मर्दों को मार डाला। मेरे पास ४० गाय और ३० बछड़े थे। मोपलों ने इनमें से बहुतों को मार दिया और बाक़ियों को लूट ले गए। इस मोपला बग़ावत से मेरा १२ हज़ार का नुकसान हुआ। फिर मोपले मेरी सब दस्तावेजें और मुहर उठा ले गए। यहां के सब हिन्दू घरों को लूट लिया, स्त्रियां डर के मारे रातों रात भाग गईं और जंगलों में जा छिपीं। मोपले उनका धर्म नष्ट करने पर तुले हुए थे, लगभग ४० हिन्दू जबरन मुसलमान बनाए गए, मेरे गांव में ५ मन्दिर हैं मोपलों ने सब को ढहा दिया, इस गांव में न तो अन्न रहा है, न पशु और न रुपया इसलिए अगर लोगों को पूरा हरजाना न दिया गया तो इस इलाके में सब भूखे प्यासे और कंगाल रहेंगे।

हस्ताक्षर—गोपालन उपनाम पाराकाट मोपल नायर।

५२—मौजा नीला ईश्वरम् ताल्लुका कालीकट के गोविन्दन नायर अधिकारी का बयान।

मेरे गांव में ३० अक्तूबर को विद्रोह आरम्भ हुआ। प्रारम्भ में मांजेराकोट नम्बोदरी का घर लूटा गया, इस जगह १५० हिन्दू घर थे, सब के सब लूट लिये गये। यहां ८ मन्दिर हैं मोपलोंने सब को ढहा दिया। मेरे विचार में १६ मनुष्यों को क़तल किया गया, मोपलों ने ४ मर्दों, २ औरतों और ४ बच्चों को मुसलमान बनाया। इस बगावत में यहां के ५० मोपले भी सरगने बने हुये थे। गवर्नमण्ट ने उनको अब तक भी गिरफ़्तार नहीं किया, आवश्यकता हुई तो मैं उनके नाम बता दूंगा। मोपलों ने मेरा एक घर जला दिया, दो मन्दिर ढहा दिये, मेरा सात हज़ार रुपये का नुकसान हुआ है, मेरे विचार में इस बग़ावत का कारण यह था कि मोपलों ने यह समझ रक्खा था कि वह अंग्रेजी गवर्नमेंट को हरा देंगे, मोपलों ने इस गांव के सब रिकार्ड को नष्ट कर दिया है।

हस्ताक्षर—गोविन्दन नायर अधिकारी।

५३—मौजा मेनन, (पन्नकोड) के राममली आहनीमैनन का बयान।

मेरे गांव में २३ अक्तूबर को मोपलों ने विद्रोह आरम्भ किया और सब हिन्दुओं को लूटा। सब से बड़े नम्बूदरी का वध कर दिया। जब मोपले गांव में आए थे तो घोस जाति की सब स्त्रियां और मर्द बन में जा छिपे। २४ तारीख को हिन्दुओं के सब घरों को मोपलों ने लूट लिया। १२ घर फूँक दिये, दो आदमी क़तल किये। ११, १२ आदमियों को बलात् मुसलमान बनाया। एक बड़ा मन्दिर जिस की आमदनी ५००) मासिक थी, फूंक दिया और वहां गायों को बध दिया गांव के सब रिकार्ड को जला दिया।

५४—ग्राम वेलीमुक औरदेशम इलाका अरनाड मटियार कुल कमारनका बयान ।

मैं सुनार हूं २० अक्तूबर को १०० मोपले तलवारें लिये हुये ४ बजे दिन को मेरे घर में जबरन घुस गए, उस समय मैं और मेरी दो कन्याएं जिन की आयु ९ और १४ वर्ष है घर में मौजूद थीं, मेरे दोनों पुत्र जिनकी आयु २१ और २३ वर्ष है मौज़ा मनूर में जो हमारे गांव से १ मील के फासले पर है गये हुए थे, मेरी स्त्री और बारह वर्ष का पुत्र मेरी बड़ी लड़की को देखने मौजा मनूर में गए थे, मोपलों ने आते ही मुझे क़तल की धमकी दी, मैंने कहा भाइयो मैं ६० वर्ष का बूढ़ा हूं मुझे मार कर क्या लोगे मुझे न मारो मेरे घर का सब सामान ले जाओ, वह मेरे दो बैल और सब सामान ले गये, इस अर्से मे मैं अपनी दोनों लड़कियो को लेकर भाग निकला और मौजा मनूर में जा पहुँचा, मैं अपने दोनों बेटों को देख कर और कन्याओं को वहां छोड़ कर फिर अपने घर पर आया तो देखा कि मोपलों ने मेरे दोनों बेटों को मार दिया है और पास के कुए में फेंक दिया है, यह देख कर मैं मूर्छित हो गया, मुझे पता नहीं कि मुझे कौन आदमी मनूर वापिस लाया, जब मैं मनूर पहुँचा तो मोपले वहां भी आ गये, मैं अपने बाकी परिवार को लेकर कालीकट पहुँच गया और मुरयाट के रिलीफ कैम्प में दाखिल हो गया ।

हस्ताक्षर—कुमारन कालीकट २३ फरवरी १९२२

५५—गांव पथोरा कुठथाईथरनाकाट नम्बीयर नायर अधिकारी गांव पथोर का बयान ।

देशी मास की ९ तारीख को मोपलों ने यहां विद्रोह कर दिया मैं ८ तारीख को घर से बाहर चला गया था, मेरे भतीजे और

चौकीदार घर में रहे, मोपलों ने मेरे भतीजे उनावन नायर के हाथ बांध दिये, और लगभग ३ हज़ार का सामान लूट लिया, फिर हिन्दू घरों को लूटना आरम्भ किया, देशी मास की १५ तारीख़ के पीछे वह हिन्दुओं को क़तल करने लगे। ५० हिन्दू क़तल किये गए। मेरे घरमें आग लगादी,साथही १२ और घरोंको भी जला दिया यहां १० मन्दिर थे, मोपलोंने उन्हें ढहा दिया, ७५ हिन्दुओं को मुसलमान किया, अभी तक पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार नहीं किया। अभी तक उस गांव में जाना और बसना असम्भव है, विद्रोह का कारण खिलाफत का प्रचार है। यहां अधिकतर भूमियों के किसान मोपले हैं।

हस्ताक्षर—थरनाकाट नम्बीयर नायर।

५६—गांव तनासीरी इलाका कन्दूनी गोविन्दन अधिकारी का बयान।

मैं १८ अक्तूबर को अपना गांव छोड़ कर चला गया, उसी दिन यहां विद्रोह आरम्भ हुआ, मोपलों ने सब हिन्दू घर लूट लिये, मन्दिरों को ढहा दिया, इस गांव में नम्बोदरियों का एक ही घर था, मोपलों ने मेरा सब सामान लूट लिया, मेरा नुक़सान लगभग ५ हज़ार रुपये का हुआ है।

५७-गांव नीलेश्वरम् ताल्लुका कालीकट नारायण नम्बूदरी का बयान।

मैं अपने घर में तीसरा मर्द हूं; मैं ४००) मालियाना अदा करता हूं, इसके सिवाय एक मंदिर के लिए ३००) देता हूं। देशी मास की ९ तारीख को मोपले मेरे घर पर आये, स्त्रियों को हमने पहिले ही भेज दिया था, हम भाग कर जंगल में चले गए। हमारे

दो नौकरों में से एक भाग गया एक को मोपलों ने खम्भे से बांध कर बहुत मारा। हमारा ८ हज़ार का नुकसान हुआ, मोपलों ने हमारे पास के मन्दिर को जला दिया। इस गांव में जिसका मैं ट्रस्टी हूं एक और बड़ा मन्दिर था उसे भी नष्ट कर दिया, और वहां गायों को बध किया। मेरे २०० पशु थे उन सब को पकड़ ले गए, मेरे घर के पूर्वी द्वार के पास दो चमार रहते थे वह भी क़तल किये गये, इस गांव के ५० हिन्दुओं को जबरन मुसलमान बनाया और २५ को क़तल किया। हस्ताक्षर—नारायण नम्बोदरी।

५८-परन बैठकावर कालीकट थायल कैलपन का बयान

मैं गांव पुत्तूर ताल्लुका कालीकट का तीया जमींदार हूँ, देशी मास की १५ तारीख को थोड़ा नमक लेने के लिए अपने घर के पास की दूकान पर गया, वहां बहुत से मोपले खड़े थे उन्होंने मुझे घेर लिया और पद्मोमन गांव के उत्तर और गांव कालीकट में ले गए, इसी प्रकार उनकी दूसरी पार्टियां हिन्दुओं को पकड़ २ कर ले आईं यहां लगभग ५०० मोपले थे, उनके पास तलवारें, चाकू और बन्दूकें थीं, उन्होंने मुझे कहा कि अपने परिवार समेत मुसलमान बनो नहीं तो जान से मार देंगे, मैंने इन्कार कर दिया इसके पीछे वह ५ हिन्दुओं को एक टूटे हुए कूए पर ले गये दोपहर के समय मुझे भी ले गए, जब वहां पहुँचा तो मोपलों ने कैदियों को काट २ कर कुए में गिराना आरम्भ किया, मेरी गर्दन पर ३ तलवारें मारी मैं बेहोश होकर जमीन पर गिरपड़ा, थोड़ी देर में जब चेत आया तो मैंने देखा कि कुआ तीन चौथाई लाशों से भर गया है, लाशों से दुर्गन्ध आरही थी, कुए की मणि पर कुछ बूटे उगे हुए थे उन्हें पकड़ कर मैं बाहर निकल आया, जब मैं ऊपर चढ़ने का यत्न कर रहा था तो कुछ अधमरे मनुष्य मेरे पांव को पकड़ रहे थे, मैं कुए से थोड़ी दूर तक चल सका फिर बेहोश हो

गया उसी समय रात को खूब वर्षा हुई, जब वर्षा का पानी मेरे शरीर पर पड़ा तो मुझे होश आया और मैं कन्ना मंगलन की ओर चल हड़ा, सड़कों पर मोपले पहरा दे रहे थे, वर्षा के कारण वह दुकानों पर बैठे हुए थे, मैं उन से बचने के लिये झाड़ियों की ओट में चलता था राह में कई जगह बेहोश हुआ, सुबह को ९ बजे मैं कन्ना मंगलम में पहुँचा जो ९ मील के फासले पर है, फिर मजिस्ट्रेट की अदालत में गया, वहां सिपाहियों ने मेरी मरहम पट्टी की और मुझे कालीकट भेज दिया।

हस्ताक्षर—केलपन

५९—गांव पुत्तूर ताल्लुका कालीकट पत्थूकोट्ट छटोनी नायर का बयान।

देशी मास की १० तारीख को मोपले मेरे घर पर आए मेरे सिवाय घर के बाकी लोग भाग गए थे मोपलों ने आते ही मेरी मुश्कें बांध दीं, मेरे पड़ोसी थीरटोटीयाट गोपालन के साथ भी ऐसा ही किया। फिर मोपले हमें मौजा लंगाली कावेरसभी में मौजा मोथमाना के पश्चिम ओर एक कुए पर ले गए। गोपालन को तलवार से क़तल कर दिया मैंने ये दृश्य अपनी आंखों से देखा, मैं डरकर मुसलमान हो गया, मोपलों ने मुझे कुरान की आयतें पढ़ाई और कुछ खाने को दिया, अगले दिन मैंने फिरने की आज्ञा मांगी अबूबकर थंगल ने मुझे परवाना राहदारी दे दिया उसे लेकर मैं अपने घर पर आया, जिस दिन मुझे मुसलमान किया गया था उसी दिन परादयाल और छटामंगलम के ६ आदमियों को जबरन मुसलमान बनाया गया, मैंने गांव नीलेश्वरम के दो नायरों और कोटोवली के ४ साथियों को कैद होते देखा जिन्हें फिर कुए के पास लाकर तलवार से क़तल किया गया, १५० मोपले वहां मौजूद थे।

हस्ताक्षर पथूकोट छुटीनी नायर।

६०–गांव नीलेश्वरम इलाका तनूबलदेश हुलियारा मेठ शंकरन नायर का बयान।

मैं अपने घर में सब से बड़ा हूं, मोपले मेरे घर में घुस आए और सब सामान लूट लिया, लगभग ५००) का मेरा नुकसान हुआ, मेरे घर के और लोग भाग गए थे, मोपलोंने मुझे बलात्कार मुसलमान किया एक दो मास पीछे मैं उनकी कैद से किसी प्रकार भाग आया, मैंने मौज़ा पत्तूर के मदूआना इल्मम का वह कुआ देखा जहां सैकड़ों लाशें पड़ी हुई हैं, मोपले अनेक गांवों से हिन्दुओं को लाते थे और इस कुए पर उनका शिर काट देते थे। मैं आज कल ताल्लुका कालीकट में मिस्टर हनचेरी के घर पर रहता हुं। हस्ताक्षर शंकरन नायर।

६१-गांव कूदपथारै तल्लुका कालीकट चिरांथूडील केशवन नायर का बयान।

४—मैं गांव कूदपथोर ताल्लुका कलीकट का मुनीम हूं, इस गांव का अधिकारी अरीपत्थू नायल वलियाकुटी आसन है यहां नायरों का कोई घर नहीं, यहां पर ३० तीया और थोड़े चमार रहते हैं, १८ अक्तूबर को मोपलों ने यहां विद्रोह आरम्भ किया, मैं २५ तारीख को भाग कर बन में छिपा रहा सब हिन्दू घर लुट गए और लगभग सबही जबरन् मुसलमान बनाए गए, १५० हिन्दू क़तल किये गए। तीयों के घरों में आज कल मोपले रहते हैं। हिन्दुओं के खेतों को मोपलों ने काट लिया। मौजा कूडथ्यूर के मोपलों में से केवल २ मोपले पकड़े गए बाकी सब आज कल खुले घूमते हैं और उस गांव के सारे मोपले लूट मार में शामिल थे। हस्ताक्षर केशवन नायर।

६२-गांव अरेकूद कोशा कटारेदेश इलाका अरनाड अठूपर्थ वासू देवन नम्बोदरी का बयान ।

मेरे गांव में मेरे चचा और उनके नौकरों के अलावा मोपलों ने चार नायरों को क़तल कर दिया, ३०० हिन्दू जबरन मुसलमान किये, लगभग ५० हिन्दू घर जलाये गये, दोषी मोपले अभी तक पकड़े नहीं गये, यहां के चार मन्दिरों को भी जला कर राख कर दिया इन में से एक मन्दिर मेरा था, इन मन्दिरों में गायों को बध किया गया, मेरे आसामी लगभग ३०० थे। मोपलों का विद्रोह मेरा पक्का विश्वास है कि ख़िलाफ़त के कारण था।

हस्ताक्षर-अठूपर्थ वासूदेवन नम्बोदरी ।

६३--गांव पख्लूर इलाका अरनाड चम्बार्जी कुटीरामन नायर का बयान ।

२३ अगस्त को मेरे घर दो हथियार बन्द मोपले जबरन् घुस आये और अपनी सेना के लिये धान मांगने लगे, मैंने धान दे दिया फिर २५ तारीख़ को ३०० हथियारबन्द मोपले मेरे घर में आये और धमका कर कहने लगे कि हथियार सब देदो नहीं तो मारे जाओगे। वह एक बन्दूक़ और ३० तलवारें मेरे घर से ले गये मैंने लगभग ५० आदमियों को अपने घर की रक्षा के लिये नियत किया, यह बग़ावत १७ अक्टूबर तक लगातार जारी रही. मैंने अपने घर की स्त्रियों और बच्चों को माही ऊटायालम पालघाट और ट्रीचूर आदि स्थानों में भेज दिया, कुछ दिनों पीछे मैं भी घर से निकल भागा, १७ तारीख़ को ३ बजे के लगभग १०० मोपलों ने मेरे घर को लूट लिया, मेरे घर को आग लगा दी। लगभग हज़ार रुपये का नुक़सान हुआ है। मोपलों ने मेरे घर का सब रिकार्ड नष्ट कर दिया।

हस्ताक्षर-के० सी० कुटी रामन नायर।

६४—गांव अलायाम हालमीथा मंगलम इलाका कालीकट पिन्नथहरायल कन्नन नायर का बयान।

देशी मास की ९ तारीख को मोपले मेरे घर में घुस आए और हथियार मांगने लगे, मैंने कहा मेरे हथियार मेरे भतीजे के पास हैं। वह मेरे घर से चले गए, उनके जाने के पीछे हम अपने घर से भाग गए, मेरे दो पुत्र, दो भतीजे और मेरी भतीजियों के दो पति पीछे रहे, यहां कोई मोपला पकड़ा नहीं गया। मोपलों ने मेरे एक पुत्र, एक भतीजे और भतीजियों के दोनों पतियों को बड़ी निर्दयता से मार डाला, और मेरा ५ हज़ार रुपये का नुक-सान हुआ और सब पशु मोपले लूट ले गए और मंदिर को तोड़ फोड़ गए। यहां लगभग १५ मंदिर हैं, सब के सब विनष्ट कर दिए गए, उनमें गाएं मारी गईं, परसों २ फरवरी को उन्होंने मेरे घर के समीप एक मंदिर में ४ गाएं बध कीं। लगभग १०० हिन्दू कतल किए गए, २५ हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया। वास्तव में अबूबकर मूसलयार आजकल यहां का बादशाह बना हुआ है।

हस्ताक्षर कन्नन नायर।

६५-गांव बरमबाथ काओ, इलाका तरूहूथ ताल्लुका कालीकट, पीअच्छूथन नायर का बयान।

मैं इस गांव का मुनीम हूं, कनाराथंगल ने स्थानिक मोपलों को पत्र लिखे थे कि सरकार ने मुझे पकड़ने के लिए ३५० सिपाही भेजे थे, परन्तु वह मैंने सब के सब कतल कर दिए हैं। अब सरकार के पास कोई सिपाही नहीं रहा। इस कारण से मेरे गांव में विद्रोह मच गया। २४ अक्टूबर को विद्रोह आरम्भ

हुआ, सब से पहिले यहां के रिकार्ड को नष्ट भ्रष्ट किया गया। कोकिल कर्ण जिससे दस्तावेजें छीन ली गई थीं २५ अक्टूबर को मेरे पास आया, मोपलों ने पहिले एक तीया का घर लूटा। २६ अक्टूबर को मोपलों ने एक धनाढ्य नम्बोदरी का घर लूटा परन्तु वह परिवार सहित घर से पहिले ही निकल गया था। मोपले मेरे पड़ौसी लुहार रामाकरुपणउनेरी को तलवारें वनाने के लिए पकड़ कर ले गए। परन्तु आजतक उसका कोई पता नहीं मिला, कुछ मोपले मेरे मकान पर आकर कहने लगे देखो ! हम तुम्हें मार देंगे क्योंकि तुम सरकारी अफ़सर हो, मैं २६ तारीख को निकल भागा। मेरे पीछे सब हिन्दू घर लुट गए, २० हिन्दू कतल किए गए। १६० हिन्दू जबरन् मुसलमान बनाए गए। बहुत सी स्त्रियों का धर्म नष्ट किया गया। यहां के बहुत से लोग कालीकट और कन्नामंगलम में भाग गए हैं।

हस्ताक्षर पी अच्छूतन नायर।

६६-पलदा कनरूपरम्बा, मातम पटमानी का बयान

मेरी आयु २४ वर्ष की है। देशी मास की २९ तारीख को मैं अपने घर से विदा हो गई, कारण यह था कि मैंने आसपास के घरों के लूटे जाने का हाल सुना। मेरा पति बाहर था. मेरे पास उस समय दो बच्चे थे, मेरे घर से निकलते समय ८ महीने का गर्भ था, मुरियाट कैम्प में पहुंचने पर मेरे पुत्र उत्पन्न हुआ, मैंने परायत चत्थो आयपन और दूसरे लोगों से सुना कि मोपलों ने मेरे पति को कतल कर दिया है। मेरा १५००) रुपये का नुक़-सान हुआ।

६७—मजा एकूथनारायण नायर का बयान।

मैं, मेरा भाई कृष्ण नायर और मेरी स्त्री पठालथ नारायणी रमा ही घर में रहते थे, देशी मास के प्रारम्भ में मोपले मेरे घर आए, मैं और मेरी पत्नी तो घर से निकल भागे, मेरा भाई न भाग सका, उसे जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया।

६८—गांव वलायल ताल्लुका अरनाड आर केशवन नम्बोदरी का बयान।

मेरा घर वलायल ताल्लुका अरनाड में है, मेरा नाम चीरिया केशवन नम्बोदरी है। मैं लगभग १०००) रुपये मालियाना देता हूं। नायर और तीया जाति से भिन्न २ और जातियां मेरे ग्राम में बसती हैं। मोपलों ने २३ अगस्त को सब हिन्दू घर लूट लिये। १६ जन कतल कर दिये, १६० हिन्दू अपने धर्म से पतित किये गये, मोपले कहते थे कि सारी जायदाद खिलाफत पर निछा-वर कर देनी चाहिये। केवल एक ही सार्वभौमिक मोपला धर्म्म होना चाहिये। हमारे चन्द नम्बोदरियों और नायरों पर एक मोपला पहरेदार बैठाया गया मोपले कहते थे कि खाना खाने के बाद तुमको मुसलमान बनाने के लिये मन्दिर में ले चलेंगे और मोपले पहरेदार ने हमको खाना खाने की आज्ञा दी और कहा कि जब तक मैं लौट कर न आऊं तुम यहीं ठहरना, उस के जाने के वाद हम भाग निकले। मोपलों ने मन्दिर की मूर्ति तोड़ डाली, और सब सामान लूट ले गये, मेरा असबाब भी उठा ले गए, वह कहते थे—काफिरो! अङ्गरेजी राज चला गया। यदि तुम सब मुसलमान बन जाओ तो बहुत सुखी

रहोगे मेरा चाचा भी कैद किया गया, लेकिन आखिरकार बड़ी कठिनता से छूट आया, हमें खाना खाने के लिये १० मील के फासले पर परदम्बारा में जाना पड़ा, मोपलों ने शाम के चार बजे कुछ हिन्दुओं के घर लूट लिये, जिस दिन हम भागे थे उसी दिन प्रातःकाल को मोपले मेरे घर में घुस आये, यहां मोपलों ने खूब मार पीट की।

हस्ताक्षर आर. केशवन नम्बोदरी।

६९-तूवन्दन नायर, गांव कुंज कलङ्गा हाल कराम-परम्बा का बयान।

१५ अक्टूबर सन २१ को बहुत से हथियारबन्द मोपले मेरा घर लूटने के लिये आए उन्होंने मेरे घर का सब असबाब लूट लिया, मैंने अपने परिवार सहित भागने का यत्न किया, हम अभी तक अपने घर से २ फरलांग ही गये होंगे कि मोपलों ने हमें पकड़ लिया, वह मेरी माता और बहिन को बलात्कार पकड़ कर ले गये। उन्होंने मेरी बहिन को तो जानसे मार डाला, परन्तु मेरी माता कुछ दिन में किसी प्रकार भागकर चली आई, मोपलों ने १५ घर जला दिये, ४ जन कतल कर दिये, यहां १०० हिन्दू मुसलमान बनाये गये, यहां आठ मन्दिर हैं, एक मन्दिर को आग लगाकर खाकस्याह कर दिया, दूसरे मन्दिरों की मूर्तियां तोड़ फोड़ डालीं। मैं सब दोषी मोपलों को पहिचानता हूं। इन मोपलों को अभी तक सज़ा नहीं दी गई। हस्ताक्षर तूवन्दन नायर।

७०-ताल्लुका अरनाड, गांव नना मोटा ओरद नेशम कोरू पली गोपालन नायर और पलीकुल नारायण नायर के बयानात।

१४ नवम्बर सन् २१ को शाम के समय लगभग ३०० शस्त्रधारी मोपले गोपालन नायर के घर में घुसे, वह उस समय अपने घर में सोया हुआ था, उसके पास ही ३, ४ नौकर और उसके भाई भी सोये हुये थे. जब बाहर शोर सुनाई दिया. तो उसने पूर्व वाली खिड़की से देखा कि ३ आदमियों के हाथ पीठ की ओर बांधे जा रहे हैं, फिर उसने मकान के उस हिस्से को देखा जहां उस का भाई सीखारन नायर सोया हुआ था, वहां मोपले बड़े ज़ोर से कह रहे थे इसे पकड़ लो, इसे बांध दो, फिर कुछ देर पीछे उसने क्या देखा कि मोपले उसके भाई और एक नौकर को पकड़ कर ले गए, उसके बाद वह कई बाड़ों से भागकर पलीकुल नारायण के घर जा पहुंचा कि जहां उसकी पत्नी रहती थी, वहां उसने मोपलों का शोर सुना तब वह फिर बन की ओर भागा और उसने नारायण नायर और गोपालन नायर को भी भागते हुए देखा। १५ की शाम को एक तीया के मकान में छिप रहे, इसी दिन हमने मोपलों को आठ हिन्दू घरों के दरवाजे तोड़ते और लूटमार करते देखा, जिन मोपलों के नाम हमें मालूम थे उनकी रिपोर्ट हमने सरकार को दे दी। शाम के ६ बजे हम मोपला भेष में चले, सुपारियां और पुराने कपड़े लेकर भाग निकले और कुशलता से तनूर रेलवे स्टेशन पर पहुंच गए। नारायण नायर के घर से उसके भतीजे बलायीधन नायर सानी, नारायण नायर अपुनी अतरी कोईगोपाल कृष्ण और एक तरखान को मोपले

पकड़ कर एक पहाड़ी पर ले गए और वहां उन्हें जख्मी कर दिया, अपुनी और अतरी कुटी तो भाग निकले, परन्तु पलीकुल की पाकशाला के पास ही एक कूप है मोपलों ने उसमें नारायण नायर के बेटे मादून नायर की लाश को फैंक दिया तरखान को तलवार से मारकर पश्चिमी अहाते में फैंक दिया, फिर मोपले नारायण नायर की पुत्री को जबरदस्ती पकड कर ले गए, और उसका धर्म्म नष्ट कर दिया, जब फ़ौज आई तब इस कन्या की रक्षा हुई। नानम्बरा और कोरन्जी ग्राम में १००० हिन्दू रहते हैं, मोपलों ने उनका असबाब लूट लिया, खेतियों को बरबाद कर दिया, सर्कार से इस अत्याचार के रोकने के लिए बहुत प्रार्थना की गई, परन्तु सब व्यर्थ हुई, इस घटना के १५ दिन बाद तक सर्कार ने कोई रोक थाम न की। हम न तो लाशों को देख सके न उन्हें श्मशान भूमि में पहुंचा सके, यहां के सारे हिन्दू अपने मन्द भागों पर रोते हैं। हस्ताक्षर (के० गोपालन नायर)

१५ जनवरी सन् २१

७१-गांव पथूर, कल्लू बटल चत्थू नायरका बयान

मैं लगभग ४००) रु० मालियाना अदा करता हूं, मेरे ३०० से अधिक मोपले आसामी हैं, ज्योंही आस पास मोपले हिन्दुओं को कतल करने लगे, मैं अपना घर छोड़ कर भाग आया मेरा सब अनाज और ४०००) रु० का सामान लूट कर चलते बने, मोपलों ने मेरे साले को पकड़ कर उल्टे जखमी कर दिया, परंतु उसकी जान बच गई। मेरा क़रीब ५०००) रु० मोपला आसामियों की ओर शेष निकलता है, मोपलों का एक लीडर सोजी हाजी मेरा मुलाजिम था, मैंने उसकी सहायता नाना प्रकार से की थी, इस विद्रोह का कारण यह था कि अबूबकर मूसलयार

और दूसरे मोपले बहुधा ऐसे तक़रीरें किया करते थे कि अब हिन्दू मुसलिम एकता का समय आगया । एकता का अभिप्राय उनके निकट हिन्दुओं का मुसलमान हो जाना था, मोपले खुले शब्दों में कहते थे, कि सरकार अंग्रेजी के पास अब केवल ४० सिपाही रह गए हैं. कि जो कालीकट के सरकारी मकानात की रक्षा में लगे हुए हैं ।

हस्ताक्षर—चत्थू नायर ।

७२-ग्राम वेलाजम ताल्लुका अरनाड कोलानकार अडमूटी कन्जूनीकरूप का बयान ।

मैं यहां का चौधरी हूं, यहां अगस्त को विद्रोह आरम्भ हुआ, पूरे ३ दिन तक मोपले बड़ी निर्भीकता से लूट मार करते रहे, सब स्त्रियां पुरुष और बच्चे मारे भय के पास के बनों में भाग गए । मोपलों ने बहुत से हिन्दुओं को बड़ी निर्दयता से मारा पीटा, कई हिन्दू स्त्रियों के धर्म्म को नष्ट किया, इस ग्राम के सब आदमी करेकूड में भाग गए, क्योंकि वहां अभी तक लूट मार शुरू नहीं हुई थी, मोपलों ने कई मन्दिरों को अपवित्र किया, वहां की मूर्तियां तोड़दीं, वस्त्र और आभूषण लूट लिए, कई गाएं वध की गईं, नम्बोदरी यहां से भागे, हिन्दू कतल किए गए, १०० जबरदस्ती मुसलमान बनाए गए १०० मकानात जलाए गए, कई हिन्दू स्त्रियों का धर्म जबरन नष्ट किया गया, कई गर्भवती स्त्रियों को बनों में भाग कर जाना पड़ा, एक स्त्री के भागते हुए बच्चा उत्पन्न हो गया ।

७३—ग्राम गरुपुर ताल्लुका अरनाड आजाकाट चेतू नायर अधिकारी का बयान।

मेरा गांव एक दिहाती स्थान है, ताल्लुका अरनाड के पूर्व पश्चिमी कौने में मौजूद है, ताल्लुका कालीकट उसके साथ लगता है, यह गांव कंडूकी से ८ मील के अन्तर पर और अरिकाड से ६ मील पश्चिम की ओर है, जिस समय ताल्लुका अरिनाड में मोपला विद्रोह आरम्भ हुआ, उस समय चरुपुर और चेकू में कोई भय की बात न थीं, मैं उस वक्त ग्राम वेलायल के मीरापुर देश में रहता था, मैंने सुना है २४ अगस्त को मोपले इकट्ठे हुए, और उन्होंने नम्बोदरियों और दूसरे हिन्दुओं के मकानात लूट लिए। कुछ हिन्दू घर और मन्दिर ढहा दिए। कई स्त्रियों को पकड़ कर उनके वस्त्र और भूषण उतार लिए, फिर उनका धर्म्म नष्ट किया, यहां के सब हिन्दू भयभीत होकर बनों में भाग गए, कई लोगों ने मेरे पास आकर इस अत्याचार का जिकर किया, कई स्त्रियों के पास कोई कपड़ा बाकी न रहा था, उन्हें कपड़े दिए गए, और दो दिन उनके खाने का प्रबन्ध किया, फिर उन्हें वालिकर में महाराजा जमूरन के महल में भेज दिया।

७४—मिस्टर ई० रामन मेनन बी. ए. का बयान।

१० मार्च को मैंने प्रबन्धक कमेटी के अन्य कर्म्मचारियों के साथ गांव तुबूर को देखा, हमारी कमेटी पीड़ित लोगों की वर्तमान अवस्था को देखने के लिए स्थापित हुई थी, जब हम इस गांव के विद्रोह का हाल मालूम कर चुके तो हमें चन्द मित्र उस कूप पर ले गये जिसमें चामर शेट्टी थंगल से कतल किये गये हिन्दुओं की लाशें फेंकी थीं। यह कूप एक पहाड़ी की ढलवान

पर तुवूर और करूदराकण्डू के मध्य में है—यहां कहीं २ झाड़ियां मौजूद हैं। यह वह स्थान है जहां कि, चामर शेरी थंगल के चार हज़ार मोपलों ने एकत्र होकर अपना जलसा किया था। थंगल एक छोटे पेड़ के नीचे बैठा था। यह पेड़ अभी तक वर्तमान है। मोपले ४० से अधिक हिन्दुओं को क़ैद करके थंगल के पास लाए, उन पर दोष यह लगाया गया कि उन्होंने मोपलों के विरुद्ध सरकार की सहायता की है, इनमें से ३८ हिन्दुओं को कतल किया गया, तीन गोली से मारे गये और बाकियों को उसी भयंकर कूप के पास ले जाया गया जहां थंगल एक पत्थर पर बैठा हुआ था. जल्लाद यहां खड़ा हो गया और हिन्दुओं को तलवार से जखमी करके कूए में फेंकने लगा बहुत से ऐसे हिन्दुओं को भी कुए में फेंका गया जो अभी जिन्दा थे, कोई हिन्दू यहां से भाग नहीं सकता था, जब यह कतल आरम्भ हुआ था, तब बरसात का मौसम था कुए में कुछ पानी भी था, अब वह सूख गया है, पण्डित ऋषिराम जी मेरे पास खड़े थे, उन्होंने ३० खोपड़ियां दिखाई एक खोपडी साफ़ तौर से नजर आती थी कि उसके दो पूरे टुकड़े किये गये है, यह एक वृद्ध हिन्दू की खोपड़ी है, जिसका नाम कुमार पनीगर है, इसको आरे से चीर कर दो टुकड़े कर दिये गये थे।

हस्ताक्षर। ई० एमन-मेनन।

गत बुधबार को पिण्डी खंड के पूर्व की ओर कोरामेरी ग्राम में दो हिन्दू घरों में मोपले गये और वहां आग लगा दी, मैलातूर की हालत बहुत खराब है, यहां पर मोपले हिन्दुओं को बहुत तंग करते हैं उन्हें धमकाते हैं कि, मुसलमान हो जाओ नहीं तो मारे जाओगे, जो हिन्दू मुसलमान होने से इन्कार करते हैं उन्हें कहा जाता है कि, अपनी कबर खोद लो और उसके पास खड़े हो जाओ फिर उन्हें कतल कर देते हैं।

२६ सितम्बर सन् २१ को कुछ तीहा लोग परन्तालमिना गांव की तरफ भागे जा रहे थे, रास्ते में ४० मोपले मिल गये, उन्होंने तीया स्त्रियों के धर्म्म को नष्ट करना आरम्भ किया एक भाई अपनी बहिन के साथ इस अत्याचार को न देख सका अस्तु, वह एक मोपले से भिड़ गया, परन्तु दूसरे मोपले ने उसे कतल कर दिया, मोपले इन लाशों को एक गढ़े में डाल कर मैलातून ग्राम में चले गये

७५-मिस्टर देवधर की एक रिपोर्ट का संक्षिप्त सार

गत सप्ताह में बेशुमार हिन्दुओं के कतल होने और उन्हें ज़बरदस्ती मुसलमान बनाये जाने की खबरें प्राप्त हुई हैं, ताल्लुका अरनाड में अरीवल वर और रेलवे स्टेशन कडालगडी के पास एक स्थान मनावर है, इसका फासला कालीकट से १४ मील का है, पिछले सप्ताह में जितनी गाड़ियां कालीकट में पहुंची उन में प्रति दिन सैकड़ों ही पीड़ित हिन्दू आते रहे, अगर पिछले हफ्ते सहायक कमेटी दस हज़ार पीड़ित जनों को अन्न से सहायता कर रही थी तो इस हफ्ते उसे कम से कम पन्द्रह हज़ार का प्रबन्ध करना पड़ेगा। पीड़ित जनों के बयानात से पता लगता है कि, मोपलों ने ५० हिन्दू कतल कर दिये हैं, और बहुत से ज़बरदस्ती मुसलमान बनाये गये हैं, कसरत से घर जलाकर खाक स्याह कर दिये हैं-दुष्ट मोपलों ने नन्हे २ बच्चों और गर्भवती स्त्रियां तक को भी कतल करने से नहीं छोड़ा। दो दिन गुजरे कि कालीकट में एक पीड़ित हिन्दू ने मुझ से बयान किया, कि एक स्त्री को सात मास का गर्भ था, एक मोपले ने आकर उसके पेट में तलवार

झोंक दी अब उसकी लाश रास्ते में पड़ी हुई है और बच्चा उसके पेट से बाहर निकला हुआ है बहुत शर्मनाक!

एक और घटना का हाल सुनिये एक मोपले ने एक हिन्दू स्त्री से छः मास का दूध पीता बच्चा छीन लिया और अपनी तलवार से उसके दो टुकड़े कर दिये, कितनी शोक प्रद अवस्था!

पाठकगण! हम समझ नहीं सकते कि इन दुष्टों को इंसान कहें या हैवान, एक हिन्दू कहता है कि उसने अपनी आंखों से एक मोपले को एक दर्जन हिंदू लोगों के सिर मूंड़ते देखा है, मैं हैरान होता हूं, कि वह लोग जो उपरोक्त सच्ची घटनाओं से इन्कार करते हैं, अपने पास क्या सबूत रखते हैं, मैं ऐसे जनों को जोर से कहता हूँ, कि वह यहां तशरीफ लाएं, और सब प्रकार से अपनी तसल्ली करें।

कल कोटाकाल ग्राम के पास से कतल की खबरें मिली हैं। दो सप्ताह हुए कि, मैलातूर और पीरतलहमिना के बीच वाली सड़क पर एक पुल के नीचे १५ कतल किये गये हिन्दुओं की लाशें मिलीं, यह सब घटनाएं सच्ची हैं शोक है, मेरे पास शब्द नहीं हैं, जिनमे मैं अपने सच्चे दुःख और पवित्र कोप का प्रकाश कर सकूं, मुझे कहा गया है, कि चेमरशेरी थङ्गल के हुक्म से मोपलों ने एक अबला नारी के धर्म्म को नष्ट किया मैलातूर के एक प्रतिष्ठित घर की स्त्री को उसके पति और भाइयों की वर्तमानता में नग्न कर दिया, दुष्टों ने उसकी मुश्कें कसदीं और

सामने खड़ा कर लिया जब उन्होंने यह नज़ारा देखने की ताव न लाकर अपनी आंखें बन्द करलीं तो उन्हें धमकाया गया कि, अपनी आंखें खुली रक्खो और यह तमाशा देखो—मैं परमात्मा का धन्यवाद करता हूं कि मेरा परिवार और अन्य सम्बन्धी कुशल पूर्वक कालीकट आगये हैं। यद्यपि यह सच है कि, हमारा सारा असबाब लुट गया है और मेरे दो नौकरों और नातेदारों का कतल किया गया है। शेष समाचार फिर सुनाऊंगा, स्त्रियों का धर्म्म नाश करने की ऐसी २ शर्मनाक घटनाएं हैं जिन्हें लोग बयान तक नहीं कर सकते।

यह बयानात उनमें से लिये गये हैं, जो श्रीमान् लाला खुशहालचन्दजी खुरसन्द ने स्वयं इकट्ठे किये अथवा मालाबारी कंसट्रकशन कमेटी कालीकट ने लिखे हैं।

मन्त्री।

❋ पढ़ने योग्य शिक्षाप्रद उत्तम पुस्तकें ❋

महाराष्ट्र केसरी शिवाजी

(यवन साम्राज्य विध्वंसकारी शिवाजी महाराज का वृहज्जीवनचरित्र ।)

अत्याचारी यवन शासन काल में जब कि हिन्दुओं का भाग्य सूर्य्य अस्ताचल की ओर जा रहा था, वैदिक (हिन्दू) धर्म का हर प्रकार से ह्रास होरहा था, धर्म स्थान ध्वंस किये जा रहे थे, ऐसे भयंकर समय में शिवाजी महाराज ने अनेक विपत्ति झेल कर और अपने जीवन को हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये संकट में डाल कर हिंदू जाति में वीरता का शंखनाद किया और औरंजेब जैसे अत्याचारी शासक के दांत खट्टे करके हिंदू साम्राज्य स्थापित किया और लोप होते हुए हिन्दू धर्म की रक्षा की। इस जीवन चरित्र में उन्हीं शिवाजी महाराज की आश्चर्य्यजनक अपूर्व वीरता का विस्तार पूर्वक वर्णन है। यदि आप हिन्दू जाति को पुनर्जीवित करना चाहते हैं तो इस जीवन चरित्र को स्वयं पढ़िये और अपने मित्रों को पढ़ाइये और अपने बालकों को पढ़ाइये। मूल्य १।)

राजर्षि भीष्म

(स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक लिखित)

यदि आप प्राचीन आर्य्य वीरों के जीवन-चरित्र पढ़ कर वीर बनना चाहते हैं और अपनी सन्तान को वीर बनाना चाहते हैं तो इस जीवन चरित्र को अवश्य पढ़िये। इस जीवन चरित्र के पढ़ने से ज्ञात होगा कि ब्रह्मचर्य्य से कैसे २ अपूर्व चमत्कारिक कार्य्य किये जा सकते हैं। मूल्य ।)

वेन चरित्र अथवा राज्य परिवर्त्तन नाटक

इसमें अत्याचारी राजा वेन और उसके खुशामदी मन्त्री की करतूतें, प्रजा का हाहाकार और अन्त में अत्याचार का परिणाम बड़े अच्छे ढंग से दिखलाया गया है। स्वार्थत्यागी देशभक्तों की कठिनाइयां और उनकी विजय देख कर हृदय दुगना हो जाता है। स्त्रियों और बालकों का आत्मत्याग देख कर हृदय में आशा का संचार हो जाता है। मूल्य १।)

महात्मा गांधी का मनोमन्दिर

(महात्मा जी का संक्षिप्त जीवन चरित्र तथा
उनके धार्मिक, राजनैतिक विचार।)

यह पुस्तक प्रत्येक भारतीय के पढ़ने और मनन करने योग्य है। मूल्य ॥)

प्राच्य और पाश्चात्य

(स्वामी विवेकानन्द लिखित।)

पूर्वीय और पश्चिमी सभ्यता की तुलनात्मक आलोचना— इस पुस्तक के पढ़ने से आसुरी पश्चिमी सभ्यता की बनावटी तड़क भड़क की निस्सारता प्रकट होकर दैवी पूर्वीय सभ्यता का महत्व प्रदर्शित होता है। मूल्य ।≡)

स्वाथ्य और बल

(गुरुकुलीय भीम प्रोफेसर रमेशचन्द्र जी डी० ए० वी०
कालेज कानपुर लिखित)

स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी अत्युत्तम सचित्र पुस्तक है। मूल्य १)

संस्कार चन्द्रिका

(श्री० पं० भीमसेन जी शर्म्मा व मास्टर आत्मारामजी लिखित)

महर्षि दयानंद कृत संस्कार विधि की विस्तृत व्याख्या। संस्कृत का अर्थ व्याख्या तथा आधुनिक यूरोपीय एवं शास्त्रोय प्रमाणों द्वारा वैदिक संस्कारों की फिलासोफ़ी का अपूर्व दिग्दर्शन मूल्य ३)

मेरी जर्मन यात्रा

(सुप्रसिद्ध स्वामी सत्यदेवजी परिव्राजक लिखित)

यह पुस्तक बर्लिन-प्रवासी देश-भक्त भारतियों की रोचक कथा सुनाती है; जर्मनी के क्रान्तिकारी सिक्के, 'मार्क' की मनोरञ्जक बातें बताती है, मनमोहक रङ्गीले पेरिस के नज़ारे दिखाती है; जगद्विख्यात रोम नगर की सैर कराती है; लाला हरदयालजी के हृदयोद्गार सुनाती है; बर्लिन के सुन्दर भव्य दृश्य, जर्मनों की परम प्यारी राहिन नदी की नैसर्गिक छटा, स्टाकहोलम (स्वीडन) और वीएना (आस्ट्रिया) के प्राकृतिक सौन्दर्य्य का जीवित चित्र यदि देखना हो तो, एक रुपया ख़र्च कर हजारों रुपयों का आनन्द लाभ लीजिये।

भारत में रेलपथ

(ले०—श्री० रामनिवास जी पोद्दार)

यह पुस्तक हिन्दी साहित्य में एकदम अनूठी है। हिंदी तो क्या किसी भी देशी भाषा में रेलों के सम्बन्ध में ऐसी अच्छी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई। इस पुस्तक में रेलों के विषय में जानने योग्य सभी बातों का विस्तार पूर्वक वर्णन है। ४२८ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥)

इंग्लिश टीचर

अगर आप अंग्रेज़ी भाषा जल्दी और घर बैठे सीखना चाहते हैं तो टण्डनसाहब का इंग्लिश टीचर पढ़िये। इस पुस्तक की प्रशंसा शिक्षा विभाग के बड़े २ अफ़सरों ने की है। पृष्ठ संख्या २५६ मूल्य १)

विचित्र जीवन

मुहम्मदसाहब का जीवन-चरित्र—मूल्य १)

हिन्दी कुरान

प्रथम खंड—मूल्य ॥)   द्वितीय खंड—मूल्य ॥=)